₹ 25

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

# क्रान्ति

जून 2019



- समस्याओं का हल नबी (स॰) की शिक्षाओं में
  –सैयद असअद गीलानी
- राष्ट्रवाद बनाम विश्वबंधुत्व
  –मुशर्रफ़ अली
- भाईचारे एवं मानवता का प्रतीक–ईदुल-फ़ित्र
  –प्रवीण कुमार सहगल



"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, सब्र और नमाज़ से मदद लो । अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है ।"

( क़ुरआन, 2:153 )

# AL-HAMBRA DEVELOPERS Pvt. Ltd.

## Anisabad Chowk, PATNA

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

# कान्ति

वर्ष 28 अंक 12 जून 2019

हमने इन्सान को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया, फिर उसे उलटा फेरकर हमने सब नीचों से नीच कर दिया, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे कर्म करते रहे । –क़ुरआन

संपादक

**डॉ० मुहम्मद अहमद**

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

**सहयोग राशि**

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 60/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'कान्ति'** के नाम से बनवाएं

# सकारात्मक सोच

आपने समुद्र तट देखे होंगे
अक्सर तटों पर लोग शाम बिताने जाते हैं ।
अलग-अलग तटों की अलग-अलग विशेषताएं हैं ।
मुंबई के तट का सौंदर्य अलग है और चेन्नई का अलग ।
दुबई का तट अलग है और सिसली का अलग ।
एक तट कैलिफोर्निया का भी है,
जो इन सबसे अलग है ।
वहां पानी के बहाव के साथ लाखों स्टार फिश
तट पर फैली रेत पर आ जाती हैं ।
कुछ देर तड़पती हैं वे गीली रेत पर फिर मर जाती हैं ।
सैर के लिए तट पर आने वाले देखते हैं यह दृश्य
तड़पती मछलियों को देखकर
भावुक भी हो उठते हैं कुछ लोग ।
एक शाम एक दस वर्षीय बच्चा
वहां आया अपनी मां के साथ ।
रेत पर तड़पती स्टार फिश
उससे देखी नहीं गयी ।
अपने नन्हें हाथों से उठा कर
लगा वह उन्हें वापस समुद्र में फेंकने ।
तट पर टहल रहे थे एक रिटायर्ड मेजर भी
सिगार का कश लेते हुए वे बच्चे के पास आए
फिर हवा में धुएं का एक गोला बनाया
और बच्चे से बोले, क्या कर रहे हो बालक ?
यहां तो लाखों स्टार फिश पड़ी हैं
तुमने अगर बचा भी ली दो-चार की जान
तो क्या फ़र्क़ पड़ता है ?
अपने काम में व्यस्त रहते हुए बच्चे ने
मेजर की ओर देखा,
फिर अपने नन्हें हाथ में थामी हुई स्टार फिश
मेजर को दिखाकर समुद्र में उछाल दी, और बोला ।
इस एक को तो फ़र्क़ पड़ता है ना !

.....

भलाई तो भलाई होती है
छोटी या बड़ी नहीं
हर व्यक्ति अपने सामर्थ्य भर प्रयास करे
तो बहुत कुछ बदल सकता है ।

● **मुशर्रफ़ अली**



# कहां क्या है ?


| | | |
|---|---|---|
| सकारात्मक सोच | –मुशर्रफ़ अली | 3 |
| कुरआन ज्योति | | 5 |
| यात्रा में साथी की सहायता (हदीस मंजरी) | | 6 |
| मनुष्य : ईश्वर की सर्वोत्तम सृष्टि (संपादकीय) | | 7 |
| ईश्वर एक मात्र स्रष्टा और पालनहार (आस्था) | –जमालुद्दीन एम॰ ज़ाराबोज़ो | 9 |
| सभी समस्याओं का हल नबी (सल्ल॰) की शिक्षाओं में निहित (जीवन आदर्श) | –सैयद असअद गीलानी | 13 |
| हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि॰ (नेकी के सिपाही) | –अब्दुर्रहमान राफ़त पाशा | 19 |
| राष्ट्रवाद बनाम विश्वबंधुत्व (विशेष आयोजन) | –मुशर्रफ़ अली | 26-27 |
| भारतीय राष्ट्रवाद की अन्तर्निहित विशेषताएं | –शरद सिंगी | 29 |
| वोट देने ज़रूर जइयो | –महेन्द्र अग्रवाल | 30 |
| इस्लाम और विश्व बंधुत्व | –संपादन प्रभाग | 31 |
| भाईचारे एवं मानवता का प्रतीक पर्व–ईदुल-फ़ित्र (सद्भाव) | –प्रवीण कुमार सहगल | 35 |
| अपराधियों की शरण स्थली बने विश्वविद्यालय (सामयिक) | –सुफ़ियान अहमद | 37 |
| दर्द, वेदना (लघुकथाएं) | –डॉ॰ पूरन सिंह | 40 |
| वीटो (कविता) | –ओम प्रकाश बजाज | 40 |
| काग़ज़ का टुकड़ा (कहानी) | –प्रवीण कुमार सहगल | 41 |
| बुज़ुर्गों के प्रति हमारी ज़िम्मेदारियां (घर-परिवार) | –ज़हीर ललितपुरी | 43 |
| मानवाधिकार आयोग क्या है ? (बालवीथी) | | 49 |

# कुरआन ज्योति

**(99) अगर तेरे रब की इच्छा यह होती (कि ज़मीन में सब ईमान वाले और आज्ञाकारी ही हों) तो सारे ज़मीन वाले ईमान ले आये होते।[101] फिर क्या तू लोगों को विवश करेगा कि वे ईमान वाले हो जाएं ?[102] (100) कोई जीव अल्लाह की अनुमति के बिना ईमान नहीं ला सकता।[103] और अल्लाह का तरीक़ा यह है कि जो लोग बुद्धि से काम नहीं लेते वह उन पर गन्दगी डाल देता है।[104] –क़ुरआन, 10:99,100**

101. अर्थात अगर अल्लाह की इच्छा यह होती कि उसकी ज़मीन में इन्कार और अवज्ञा का सिरे से कोई अस्तित्व ही न हो तो उसके लिए प्रकृति-बल से काम लेकर ऐसा कर डालना कुछ कठिन न था, परन्तु इन्सानों के पैदा करने में जो विवेकपूर्ण उद्देश्य उसके सामने है, वह इस प्रकृति-बल के इस्तेमाल से समाप्त हो जाता है। इसलिए अल्लाह स्वयं ही इन्सानों को ईमान लाने या न लाने और आज्ञापालन करने या न करने में आज़ाद रखना चाहता है।

102. इसका अर्थ यह नहीं है कि नबी (सल्ल०) लोगों को ज़बरदस्ती ईमान वाला बनाना चाहते थे और अल्लाह आप (सल्ल०) को ऐसा करने से रोक रहा था। यहां संबोध न प्रत्यक्षत: आप ही से है, लेकिन संबोधन-दिशा वास्तव में 'दावत' के इन्कारियों की ओर है और कहने का अभिप्राय यह है कि लोगो ! युक्ति और तर्क से मार्गदर्शन और पथ-भ्रष्टता का अन्तर खोलकर रख देने और सीधा रास्ता साफ़-साफ़ दिखा देने का जो हक़ था वह तो हमारे नबी ने पूरा-पूरा अदा कर दिया है। अब अगर तुम स्वयं सीधे रास्ते वाला बनना नहीं चाहते और तुम्हारा सीधे रास्ते पर आना केवल इसी पर आश्रित है कि कोई तुम्हें ज़बरदस्ती सीधे रास्ते पर लाए, तो तुम्हें मालूम होना चाहिए कि नबी के सुपुर्द यह काम नहीं किया गया है, न अल्लाह को ऐसा ज़बरदस्ती ईमान अभिप्रेत है।

103. अर्थात दुनिया की तमाम दूसरी नेमतों की तरह ईमान की नेमत का प्राप्त करना भी अल्लाह की अनुमति पर आश्रित है। कोई आदमी न इस नेमत को अल्लाह की अनुमति के बिना स्वयं पा सकता है और न किसी इन्सान के वश में यह है कि जिसको चाहे यह नेमत अता कर दे। अत: नबी अगर सच्चे दिल से यह चाहे भी कि लोगों को ईमान वाला बना दे तो नहीं बना सकता। इसके लिए अल्लाह की अनुमति और उसका सौभाग्य प्रदान करना अपेक्षित है।

104. यहां स्पष्टत: बता दिया गया कि अल्लाह की अनुमति और उसका सौभाग्य कोई अंधी बांट नहीं है कि बिना किसी विवेक और बिना किसी उचित नियम के यूं ही जिसको चाहा ईमान की नेमत पाने का अवसर दिया और जिसे चाहा इस अवसर से वंचित कर दिया। बल्कि इसका एक बड़ा विवेकपूर्ण नियम है, और वह यह है कि जो आदमी वास्तविकता की खोज में बे-लाग तरीक़े से अपनी बुद्धि को ठीक-ठीक इस्तेमाल करता है उसके लिए तो अल्लाह की ओर से वास्तविकता तक पहुंचने के साधन उसकी कोशिश और तलब के अनुपात से जुटा दिये जाते हैं और उसी को सही ज्ञान पाने और ईमान लाने का सौभाग्य प्रदान किया जाता है। रहे वे लोग जो सत्य की तलब ही नहीं रखते और जो अपनी बुद्धि को दुराग्रहों के फंदे से फांसे रखते हैं, या सिरे से सत्य की खोज में उसका उपयोग ही नहीं करते, तो उनके लिए अल्लाह के भाग्य-कोष में अज्ञानता और पथभ्रष्टता और ग़लत देखने और ग़लत करने की गन्दगियों के सिवा और कुछ नहीं है। वे अपने आपको उन्हीं गन्दगियों का पात्र बनाते हैं और यही उनके भाग्य में लिखा जाता है।

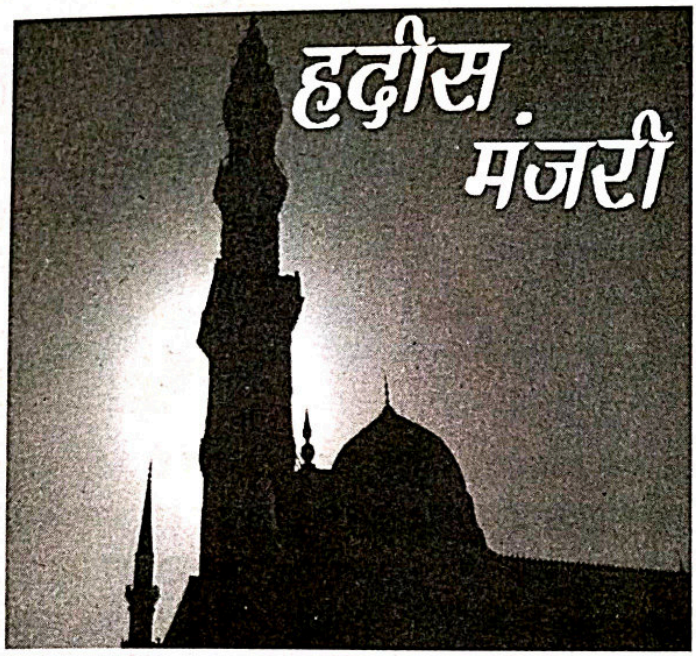


# यात्रा में साथी की सहायता

● हज़रत अबू सईद अल-खुदरी (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि हम यात्रा पर थे कि एक व्यक्ति अपनी सवारी पर आया और दायें-बायें निगाह दौड़ानी शुरू कर दी । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जिसके पास फ़ालतू सवारी हो वह उसे उसको दे दे जिसके पास सवारी न हो, और जिस किसी के पास फालतू पाथेय हो उसे चाहिए कि उसको दे दे जिसके पास पाथेय न हो ।" और आपने विभिन्न प्रकार की चीज़ों का नाम लिया यहां तक कि हमने समझ लिया कि हममें से किसी को फ़ालतू माल रखने का हक़ नहीं है । –मुस्लिम

● हज़रत जाबिर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) जब किसी युद्ध के लिए जाने का इरादा करते, तो कहते : "ऐ 'मुहाजिर' और 'अंसार' (अल्लाह के लिए घर-बार छोड़ने वालो और उनकी मदद करने वालो) के एकत्र लोगो, तुम्हारे भाइयों में कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनके पास न तो माल है और न उनका कोई क़बीला है । तो तुममें से हर व्यक्ति को चाहिए कि वह दो-दो या तीन-तीन को अपने साथ मिला ले और हममें से हर एक व्यक्ति बस बारी-बारी सवार हो अर्थात उनमें से हर एक ।" रावी कहते हैं : मैंने अपने साथ दो या तीन व्यक्तियों को शामिल कर लिया । और मेरे ऊंट पर मेरी बारी भी बस उतनी होती थी जितनी उनकी बारी होती । –अबू दाऊद

यात्रा में ऊंचाई पर चढ़ते हुए 'अल्लाहु अकबर' और ऊंचाई से उतरते हुए 'सुब्हानल्लाह' कहना चाहिए और बहुत ऊंची आवाज़ से 'अल्लाहु अकबर' आदि न कहें

● हज़रत जाबिर (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि जब हम ऊंचाई पर चढ़ते, तो 'अल्लाहु अकबर' (अल्लाह सबसे बड़ा है) कहते और जब ऊंचाई से उतरते तो 'सुब्हानल्लाह' (अल्लाह महान है ।) कहते । –बुख़ारी

● हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि नबी (सल्ल॰) और आपकी सेना के लोग जब ऊंचाई पर चढ़ते, तो 'अल्लाहु अकबर' कहते और जब नीचे उतरते तो 'सुब्हानल्लाह' कहते । –अबू दाऊद

● हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) जब हज या उमरह से लौटते, तो जब भी किसी घाटी या ऊंचे स्थान पर चढ़ते, तो तीन बार 'अल्लाहु अकबर' कहते और फिर कहते : अर्थात "अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह एक है उसका कोई साझी नहीं, बादशाही उसी की है और सारी प्रशंसा उसी के लिए है और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है । हम इस हाल में वापस हो रहे हैं कि हम (अल्लाह की ओर) लौटते हैं, तौबा करते हैं, बन्दगी करते हैं, सजदा करते हैं, अपने रब की प्रशंसा करते हैं । अल्लाह ने अपना वादा सच कर दिखाया और उसने अपने बन्दे की मदद की और उसने अकेले ही तमाम गिरोहों को परास्त कर दिया ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

और मुस्लिम की एक रिवायत में है : आप युद्ध या लड़ाई की किसी मुहिम या हज या उमरह से लौटते ।

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मेरा इरादा यात्रा का है । अत: आप मुझे कुछ वसीयत कीजिए । आपने कहा : "ईश-परायणता को अपने लिए अनिवार्य कर लो और इस बात को कि जब भी किसी ऊंचे स्थान पर चढ़ो, तो 'अल्लाहु अकबर' कहो ।" रावी कहते हैं कि जब वह व्यक्ति लौट गया, तो आपने कहा : "ऐ अल्लाह, दूरी को इसके लिए समेट ले और यात्रा इसके लिए सहज कर दे ।"

–तिरमिज़ी

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

**इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें**

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

# मनुष्य : ईश्वर की सर्वोत्तम सृष्टि

सर्वजगत का रचयिता और पालनहार ईश्वर मानवजाति को दिये गये अंतिम मार्गदर्शन ग्रंथ में कहता है– ''हमने आदम की संतान को प्रतिष्ठा दी ।'' दूसरी जगह कहता है, ''हमने मनुष्य को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया ।'' उस ग्रंथ को पढ़ने से यह भी ज्ञात होता है कि यह संसार और यहां की सारी सामग्री और सुख-सुविधाएं मनुष्य के लिए बनायी गयी हैं और उन पर सारे मनुष्यों का बराबर अधिकार है । किसी व्यक्ति विशेष या समुदाय विशेष को यह अधिकार नहीं है कि वह अपनी आवश्यकता से अधिक संसाधनों पर क़ब्ज़ा करके दूसरे लोगों के अधिकारों का हनन करे । दुर्भाग्य से पूरी दुनिया में ईश्वर के बनाए हुए इन नियमों का उल्लंघन हो रहा है । एक छोटा-सा वर्ग ईश्वर प्रदत्त इन संसाधनों पर अनुचित अधिकार जमाए बैठा है और एक बड़ी आबादी को उनके अधिकारों से वंचित करके उनका शोषण कर रहा है । इस अन्याय के फलस्वरूप पूरी दुनिया में मानवता कराह रही है और विभिन्न मानवनिर्मित समस्याओं से त्रस्त है । क़ुरआन में ईश्वर कहता है कि ''निस्संदेह वह फ़िरऔन था, जिसने उद्दंडता का मार्ग अपना लिया था और उसने धरती के निवासियों के समुदाय बना दिये थे और उनमें से एक समुदाय को कमज़ोर कर दिया था ।'' इस तरह कमज़ोर समुदाय पर अत्याचार किया जाता था, उन्हें सारी सुख-सुविधाओं से वंचित रखा जाता था । फ़िरऔन का उदाहरण लोगों को सचेत करने के लिए दिया गया है ।

आज भी पूरी दुनिया में न्यूनाधिक यही स्थिति है । मानव प्रतिष्ठा की परिकल्पना धूमिल हो चुकी है । राष्ट्रीयता, धर्म, जाति, क्षेत्रीयता, भाषा, लिंग, रंग आदि के आधार पर मानव-मानव के बीच दीवारें खड़ी कर दी गयी हैं । इन आधारों पर मनुष्य मनुष्य का दुश्मन हुआ जा रहा है । यह स्थिति ईश्वरीय आदेशों का उल्लंघन और ईश्वर की परियोजना के विरुद्ध है । ईश्वर ने ''तुमको एक जान से पैदा किया और उसी जान से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से पुरुष और महिलाएं दुनिया में फैला दिये ।'' हममें से हर व्यक्ति जानता है कि हम सब दुनिया वाले एक ही माता-पिता की संतान हैं और इस रिश्ते से आपस में भाई-भाई हैं । सारे मनुष्य समान पैदा किये गये हैं । एक व्यक्ति को प्राकृतिक रूप से वही अधिकार प्राप्त हैं, जो दूसरे को प्राप्त हैं । एक मनुष्य की जो आवश्यकताएं हैं, दूसरे मनुष्य की भी वहीं हैं । शारीरिक बनावट को मानसिक क्षमता में भी सब लगभग समान हैं । क्षेत्र और मौसम की विभिन्नता के कारण रहन-सहन और वेशभूषा का कुछ अन्तर हो सकता है लेकिन उसके आधार पर उसके मौलिक अधिकारों के हनन का कोई औचित्य नहीं बनता है । इसके बावजूद यह अन्तर हर जगह और हर स्तर पर दिखाई देता है ।

इससे भी दुखद यह है कि दुनिया भर में हज़ारों ग़ैर-सरकारी संगठन और संस्थाएं हैं, जो धरती, पेड़, पशु, पक्षी के अधिकारों के लिए चिंता जताते हैं, लेकिन वंचित और पीड़ित इन्सानों की चिंता करने वाला कोई दिखायी नहीं पड़ता । मानवाधिकारों के संरक्षण के नाम पर संगठन तो हर जगह बने हुए हैं, लेकिन वे औपचारिकताएं पूरी करने के सिवा कुछ नहीं करते । आज अनाथ, भूखे, युद्ध-पीड़ित, विस्थापित, महिलाओं, बच्चों और बूढ़ों की एक बड़ी संख्या ऐसी है, जिनके पास, भोजन, वस्त्र आवास में से कुछ भी नहीं है । वे घुट-घुटकर मर रहे हैं । ये सब इसलिए है कि आज हम मनुष्य से बढ़कर महत्व उन चीज़ों को देने लगे हैं, जो मनुष्य के लिए पैदा की गयी हैं । समाज में यह सच्चाई स्थापित करने की ज़रूरत है कि मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम सृष्टि है और इसी के लिए ईश्वर ने यह संसार बनाया है ।

"अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–"यदि कोई व्यक्ति घर से वुज़ू करके नमाज़ पढ़ने की नीयत से मस्जिद की तरफ़ जाता है, तो उसका एक क़दम एक गुनाह को ख़त्म करता है और दूसरा क़दम नेकी बढ़ाता है।"

(मुस्लिम)


*A Well Wisher*

**ARARIA (BIHAR)**

# ईश्वर एकमात्र स्रष्टा और पालनहार

■ जमालुद्दीन एम॰ ज़ाराबोज़ो

जो कोई भी कुरआन का अध्ययन करेगा उस पर एक बात तो पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाएगी कि ईश्वर ने मानव को अपनी और समस्त सृष्टि की रचना पर सोच-विचार का निर्देश दिया है । जो कोई इस प्रक्रिया से गुज़रेगा वह उसकी महानता को माने बिना नहीं रह सकता । अध्ययन के बीच इसको ज़रा भी आभास नहीं होगा कि कुरआन बुद्धि से काम लेने को नापसन्द करता है, इसके विपरीत वह तो बार-बार इसकी ओर बुलाता है कि मानव बुद्धि से काम ले चिंतन मनन करे । वह चिंतन-मनन का निमंत्रण ही इसलिए देता है कि मानव सत्य को पा ले । वह जितना भी चिंतन करेगा इसके सिवा और कुछ नहीं पाएगा कि इस संसार की उत्पत्ति यूं ही बेकार में नहीं हो गयी है, बल्कि इसका एक बनाने वाला है, जिसकी महानता बेमिसाल है जिसकी दया व कृपा असीम है ।

कुरआन में इस हक़ीक़त को अत्यंत प्रभावी और लुभावने अन्दाज़ में कुछ इस तरह बयान किया गया है, और गुज़री हुई कितनी ही सदियां इस पर गवाह हैं–क्या यह किसी स्रष्टा के बिना स्वयं पैदा हो गये ? या यह स्वयं अपने रचयिता हैं ? या धरती और आकाश को इन्होंने पैदा किया है, अस्ल बात यह है कि ये विश्वास नहीं रखते ।

(अत-तूर : 36,37)

इसमें बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि वह यूं ही नहीं पैदा हो गये हैं और न वे स्वयं अपने स्रष्टा हैं । इसका दूसरा मतलब इसके सिवा और क्या है कि इसका बनाने वाला कोई है, कोई स्रष्टा है, वह स्रष्टा वह है जो अहद (अकेला) है, समद (बेनियाज़) है, जो न किसी की संतान है, न जिसकी कोई संतान है । हालांकि यह बहुत स्पष्ट बयान है इसके बावजूद ईश्वर के वजूद के संबंध में शक व संदेह की हालत हर दौर में पायी जाती रही है । यह जान-बूझकर आजकल पैदा की गयी है (अंधकार युग में एक कहावत प्रसिद्ध थी कि ऊंट की लीद इस बात का प्रमाण है कि ऊंट मौजूद है और अगर कहीं उसके पैरों के चिन्ह नज़र आ जाएं तो यही समझा जाएगा कि इधर से वह गुज़रा है ।

एक बार इमाम अबू हनीफ़ा से कुछ लोग मिलने आए उन्होंने अल्लाह के वजूद के संबंध में अपने शक व संदेह को सवाल के रूप में प्रकट किया, इमाम ने कहा कि इस पर बातचीत से पहले मैं एक सवाल पूछना चाहता हूं । उन्होंने कहा कि एक ऐसे जहाज़ की कल्पना करो जो सामान से लदा हुआ हो, मगर उसका कोई चालक न हो, जहाज़ का एक गंतव्य है अर्थात उसे नील नदी पार करके दूसरे किनारे तक पहुंचना है, जहाज़ किसी कप्तान के बिना चल पड़ता है और अपने गंतव्य स्थान तक पहुंच जाता है । उस पर से सामान भी अपने आप ही उतर जाता है और उसके बाद जहाज़ जहां से चला था सकुशल वहां वापस पहुंच जाता है । यह सुनते ही दल की ओर से आवाज़ आती है कि यह कैसे हो सकता है, यह असंभव है । इस पर इमाम ने कहा कि जब उस साधारण-सी जहाज़ के विषय में यह कल्पना नहीं किया जा सकती तो इतने बड़े और विस्तृत ब्रह्मांड के बारे में भला यह कैसे सोचा जा सकता है कि यह किसी बनाने वाले के बिना ही वजूद में आ गया । इमाम अबू हनीफ़ा के अलावा भी कई लोगों से यह घटना जुड़ी हुई है ।

अल-अक़ीदतुत्तहाविया में इसकी चर्चा मिलती है । उमर अल-अशक़र ने एक दूसरा उदाहरण दिया है, उन्होंने बयान किया है कि रबा अल-ख़ाली में कुछ वर्ष पहले एक भयंकर तूफ़ान आया जिसके फलस्वरूप एक नगर अवशेष प्रकट हो गया जो वर्षों पहले दफ़न हो चुका था, जब इसकी जानकारी वैज्ञानिकों को हुई तो उन्होंने इसकी छानबीन शुरू की यह नगर कब यहां आबाद था इसका समय क्या था, पुरातत्व के विशेषज्ञ और दूसरे लोग यह बताने में असमर्थ रहे कि मानवीय प्रयासों से इसको तलाश किया जा सकता था या नहीं ।

अलग-अलग दौर में ईश्वर के अस्तित्व के संबंध में

तरह-तरह के प्रश्न और आशंकाएं पैदा की जाती रही हैं । आज भी वह किसी न किसी रूप में मौजूद है आज का सवाल भी यही है कि क्या इस संसार की रचना किसी ने की है या यह स्वयं धीरे-धीरे अस्तित्व में आ गया है । कई लोगों का ख़याल है कि रचयिता के द्वारा इसकी रचना की अवधारणा वैज्ञानिक सिद्धांत नहीं कहा जा सकता, जबकि धीरे-धीरे इसकी उत्पत्ति एक वैज्ञानिक सिद्धांत है ।

सृष्टि के विषय में भी अर्थात इसके वजूद के विषय में एक प्रसिद्ध विचार वह है जिसको बिग बैंग का सिद्धांत कहते हैं । माइक्रोसॉफ़्ट इंकार्टा के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में जो बातें कही जाती हैं उनमें यह बात अर्थात बिग बैंग का सिद्धांत एक हक़ीक़त है लेकिन यहां रोचक तथ्य यह कि इस दावे को वैज्ञानिक कहना और एक हक़ीक़त का नाम देना एक हास्यास्पद बात है इसलिए कि वैज्ञानिक तथ्यों की हक़ीक़त यह है कि इनमें बराबर बदलाव होता रहता है । आज जिसको एक वैज्ञानिक सत्य कहा जा रहा है कल वह एक भ्रम बन जाता है । वही लोग एक समय बीत जाने के बाद 'वैज्ञानिक प्रमाण' को भ्रम कहने लगते हैं जिन्होंने किसी ज़माने में एक बात को 'वैज्ञानिक प्रमाण' कहा था ।

क़ुरआन इसी संदर्भ में यह कह रहा है–अस्ल बात यह है कि ये अल्लाह पर विश्वास नहीं रखते । (अत-तूर : 36) यह अस्ल में उनका हाल है जो अल्लाह पर विश्वास नहीं रखते वे स्वयं अपनी ज़बान से यह बात कह रहे हैं कि आज वे जिस पर विश्वास प्रकट कर रहे हैं इसकी हक़ीक़त नहीं जानते । इसका मुंह बोलता सबूत यह है कि आज जिस चीज़ को उन्होंने वैज्ञानिक सत्य का नाम दिया है कल वे इसको भ्रम क़रार दे देते हैं ।

इससे यह मालूम हुआ कि बिग बैंग सिद्धांत और रचना के संबंध में जो भिन्नता पायी जाती है इसकी कोई हक़ीक़त नहीं है वह भी अस्ल में एक भ्रम ही है । माइक्रोसॉफ़्ट इंकार्टा के अनुसार बिग बैंग का सिद्धांत यह बताता है कि यह सृष्टि कभी ठोस, अत्यधिक धुंधली, अत्यधिक गर्म गोला थी ।

अरबों वर्ष पहले इसमें एक ज़बरदस्त धमाका हुआ जिसके परिणामस्वरूप टूट-फूट और फैलाव की क्रिया प्रारंभ हुई फिर वह गोला ठंडा हुआ । यहां यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से पैदा होता है कि वह धमाका हुआ कैसे ? और उस पदार्थ की रचना किसने की और कैसे की जो बिग बैंग में था, अगर व पदार्थ किसी रचयिता का उस समय भी मुहताज था तो क्या वही रचयिता बाद में भी दूसरे जीव पैदा करने पर समर्थ नहीं रहा । बिग बैंग के सिद्धांत के विषय में इससे भी ज़्यादा बड़े सवालात हैं ।

एक सवाल यह है कि आख़िर धमाका इस सृष्टि को सुन्दर व आकर्षक बनाने के लिए क्यों हुआ ? इसमें इस स्तर की व्यवस्था और क्रम किस प्रकार आ गयी ? नागासाकी और हिरोशिमा पर जो बम बरसाए गये उसका भी परिणाम यही होना चाहिए था अगर यह मान लिया जाए कि धमाकों का तार्किक परिणाम व्यवस्था व क्रम ही होता है । मगर आश्चर्य है कि ईश्वर के इन्कारी और भौतिकतावादी का हाल यह है कि वे नंगी आंखों से सच्चाई का अवलोकन करने के बावजूद इसका इन्कार कर रहे हैं और अत्यंत हास्यास्पद बातें बना रहे हैं ।

उदाहरणस्वरूप एक प्रसिद्ध नास्तिक हक्सले (Huxley) स्वयं यह कहता है कि अगर छह बन्दर किसी टाइप राइटर पर अरबों खरबों वर्ष उछल कूद करते रहें और उसका बटन उनकी उछल कूद के कारण लगातार दबता रहे तो संभव है कि उनकी इस उछल कूद की वजह से शेक्सपीअर की कोई कविता बन जाए, ठीक ऐसा ही इस सृष्टि के साथ भी हुआ है जिसमें हम जी रहे हैं । अरबों ख़रबों वर्ष पहले अणुओं के आपस में टकराते रहने की वजह से यह सृष्टि वजूद में आयी है । वहीदुद्दीन ख़ान इसी भौतिकतावादी तर्कों को उन्हीं पर आज़माते हुए दो टूक जवाब देते हैं । वे कहते हैं कि गणित का ज्ञान जिसने हमें संभावनाओं (Probability) की परिकल्पना दी है यह कहता है कि गणित के किसी भी सिद्धांत व नियम से इसकी संभावना क़तई नहीं है कि यह सृष्टि किसी दुर्घटना का परिणाम है ।

बुद्धि विवेक का यह तक़ाज़ा है कि इस सृष्टि का एक रचयिता हो जिस तरह किसी आविष्कार के लिए किसी आविष्कारक का होना अनिवार्य है । इसके साथ ही इस सृष्टि में जिस उच्च श्रेणी की जो व्यवस्था और संतुलन पाया जाता है वह भी इस बात की गवाही दे रहा है कि इसके पीछे एक शक्ति का होना अनिवार्य है, यह व्यवस्था इस स्तर की पूर्ण और बेलाग व्यवस्था है कि इसको 'प्रकृति का कोमल समर्पित संतुलन' (the dedicate balance of nature) कहा जाता है, और वाक़ई यह आश्चर्यजनक है कि हर चीज़

एक व्यवस्थित व नियमित काम कर रही है । मानव स्वयं अपने शरीर पर ग़ौर कर ले तो उसको इसका अंदाज़ा हो जाएगा कि इसमें जो व्यवस्था और परस्पर सहयोग पाया जाता है वह भी आश्चर्यजनक है, शरीर के अंगों का जो परस्पर संबंध है उसके बिना तो जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती । इस एक चीज़ का अवलोकन हमें बहुत कुछ बता देता है ।

ज़रा सृष्टि पर ग़ौर करें वहां उच्च श्रेणी की व्यवस्था, एकरूपता, जोड़ नज़र आता है विभिन्न तत्व एक दूसरे से जुड़े नज़र आते हैं, और कहीं कोई अभ्यास और प्रशिक्षण भी नज़र नहीं आता यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि कोई हस्ती उसको कंट्रोल कर रही है जिसने इन सबको एक व्यवस्था और नियम में बांध रखा है । यह हस्ती कोई और नहीं बल्कि इसका रचयिता है, इनमें से किसी भी तत्व का न अपना कोई लक्ष्य है न इनमें कोई अपनी शक्ति और सामर्थ्य है, न ही कोई योग्यता कि वे इस बंधे हुए नियम और व्यवस्था के विरुद्ध काम कर सकें । वह वही कर रहे हैं जिसका उनके रचयिता और स्रष्टा ने आदेश दे रखा है । वे इससे बाल बराबर भी हट नहीं सकते, न इनमें ऐसा करने की हिम्मत है इसमें क्षण भर के लिए भी कोई अंतर नहीं आता, इसकी वजह यह है कि इन सबका स्रष्टा और मालिक एक ही है । इन सभी तत्व का इस एक-दूसरे से जुड़कर संपूर्ण एकरूपता के साथ पूर्ण समानता के साथ अपना ख़ास काम अंजाम देना इस बात का स्पष्ट संकेत देता है कि इनकी कमान किसी और हस्ती के हाथ में है । वह हस्ती ऐसी है जो इनको हर समय थामे हुए है, उसकी इन पर हर समय नज़र रहती है अर्थात वह महान भी है और सर्वशक्तिमान और सर्वसामर्थ्यवान और सर्वज्ञ भी । अगर ऐसा न होता तो हर तरफ़ वही बिगाड़ होता इसलिए कि यह सृष्टि अनगिनत तत्वों का मिश्रण है । इस सोच-विचार से यह परिणाम निकलता है कि वह हस्ती एक है ।

ईसाइयों के यहां God the father और God the son में एक अंतर रखा जाता है । साधारणतया God the father को ही स्रष्टा माना जाता है, शायद ही कभी इसका उदाहरण मिलेगा कि God the son को स्रष्टा कहा गया हो, मेरे बहुत से हिन्दू दोस्तों का जो अब मुसलमान हो चुके हैं कहना है कि उनके यहां भी एक ही स्रष्टा की कल्पना पायी जाती हैं । (उसूलुल-ईमान)

इस सृष्टि का संगठित, व्यवस्थित और संतुलित होना इस बात पर दलील देता है कि स्रष्टा व मालिक को एक ही होना चाहिए । जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है कि अगर इस सृष्टि के दो रचयिता होते तो सृष्टि में फ़ित्ना व फ़साद होता । इसलिए कि हर ख़ुदा अपना हुक्म चलाता और उन दोनों में वरीयता के लिए जंग पूरी सृष्टि को विनष्ट करके रख देती । इसको [(the argumnet of exclusion) कहा जाता है । ग्रंथों में इस पर विस्तार से चर्चा की गयी है । प्राचीन काल के लेखकों के यहां भी इस पर विस्तृत चर्चा पायी जाती है । उदाहरण के लिए अल-अक़ीदतुत्तहाविया में इससे बहस करते हुए एक स्थान पर कहा गया है–

इसकी व्याख्या इस प्रकार है कि अगर यह मान लिया जाए कि इस सृष्टि के दो ख़ुदा हैं तो किसी समस्या पर उन दोनों के बीच विरोध पैदा हो जाए तो क्या होगा उदाहरणार्थ एक ख़ुदा किसी चीज़ के विषय में यह चाहता हो कि उसको इस जगह से हटाकर दूसरे स्थान पर रख दिया जाए मगर दूसरा इसके विपरीत सोचता है, या एक ख़ुदा किसी को जीवन देना चाहता है मगर दूसरे की नज़र में ऐसा करना ठीक नहीं है तो ऐसी सूरत में तीन बातें हो सकती हैं पहली यह कि दोनों का आदेश पूरा हो जाए, दूसरी यह कि किसी एक के आदेश का पालन हो जाए और तीसरी यह कि उसके आदेश का पालन न हो सके ।


25 yrs. Service (Regd.)

**AL KAUSAR HOLY HERBAL**

HOSPITAL & RESERCH CENTRE

(A minority Unit of Islamic Medicine Under Art.30 (1) Const. of India)

Founder: **Al-Hajj Dr. ABDUR RASHEED**

*Ph.D. (HOLISTIC HERBAL)*

*Medicine of Hazrat Mohammad (S.A.W)*
*By faith of ALLAH*
*Shyamganj Road, B.Deoghar - 814112*
*(Jharkhand) India*

Kidney, Heart, Liver, Pancreas, Uterus, disorders, Pain Control, Asthama, Child Birth (Cardio, Uro, Nephro, Neuro, Gastroe, Gynae, Hemato, Diabeto Intercentral cardio, Bronco etc.)

Recharge your body, mind, psyco, soul, desire heart way of "Islamic medicine". Further treatment require or not feels within 7 to 19 days

(Rooms available)

Enquiry: 9955725769, E-mail: alkausarreached@gmail.com
Bank of India, Deoghar Branch A/c-446110100000871
IFS Code No. BKID 0004461

पहली इसलिए संभव नहीं है कि एक साथ दो प्रकार के काम पूरे नहीं हो सकते, तीसरी भी संभावना से परे है इसलिए कि ऐसी स्थिति में अधर में लटक जाने की स्थिति पैदा हो जाती है अर्थात यह है कि कोई हरकत ही नहीं पायी जाती और ऐसा होना संभव नहीं है, ऐसी सूरत में यह भी ज़ाहिर हो जाता है कि दोनों खुदाओं में अपनी इच्छा-पूर्ति की शक्ति व क्षमता नहीं है और ऐसी किसी हस्ती को खुदा कैसे कहा जा सकता है ।

अब रही दूसरी सूरत तो इससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि आदेश जिसका चलेगा बात जिसकी मानी जाएगी वही सर्वशक्तिमान माना जाएगा और ज़ाहिर है कि एक की बात चलती हो तो वहीं सबसे बड़ा हाकिम और अस्ली ठहरेगा खुदा कहलाने का अधिकारी होगा । जिसकी बात न मानी जाए और जिसका आदेश न चले उसको भला खुदा कौन कह सकता है ।

इससे यह बात ज़ाहिर होती है कि इस सृष्टि का रचयिता, मालिक, पालनहार, हाकिम, सर्वशक्तिमान एक ही हस्ती है और उसी को मानव स्वभाव मान्यता प्रदान करती है और यह पूरी तरह तार्किक क्रिया है । यह इतनी स्पष्ट, बौद्धिक और सीधी व सच्ची बात है कि इससे इन्कार संभव ही नहीं है ।

हमारे विद्वानों का इस पर इस सीमा तक पूर्ण विश्वास है कि वे यह कहते हैं कि एक सीधा-सादा इन्सान एकेश्वरवाद को नकारे यह नहीं हो सकता, एक बुद्धिहीन और उद्दंड व्यक्ति ही ऐसी बात कहेगा, जैसा कि मुहम्मद बिन उसेमीन ने अपनी एक किताब में ईमान के नियम क़ी व्याख्या में प्रकाश डाला है–यह इन्सानी प्रकृति की पुकार है कि इस सृष्टि का एक स्रष्टा, मालिक और रब होना चाहिए इसके बिना इसकी कल्पना ही नहीं की जा सकती । यह तो मानो ईश्वर पर ईमान का स्पष्ट प्रमाण है क़ुरआन में जगह-जगह इसकी गवाही दी गयी है ।

कुछ उदारहण निम्न हैं–अवश्य ही अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है । (अल-बक़रा : 20), और वह हर ज़रूरत को पूरा करने वाला है, निगाहें उसको नहीं पा सकतीं और वह निगाहों को पा लेता है वह अत्यंत सुक्षमदर्शी और बाख़बर है । (अल-अनआम : 101-103), वह तो अल्लाह ही है जिसको धरती और आकाश की हर चीज़ स्वेच्छा के साथ और विश्वासपूर्वक सजदा कर रही हैं और सब चीज़ों की परछाइयां भी प्रातःकाल और संध्या समय उसके आगे झुकती हैं । (अर-रअद : 15)

यह तय हो जाने के बाद कि इस सृष्टि का स्रष्टा, मालिक और पालनहार एक अल्लाह है इसकी मांग भी सामने आ जाती हैं । सबसे पहली मांग यह है कि इसके साथ इन्सान का रिश्ता क्या होना चाहिए ज़ाहिर है कि बन्दे और खुदा का ही हो सकता है इसके अलावा और कुछ नहीं हो सकता कि उसी की हस्ती अकेली इबादत और इबादत के लायक़ है ।

# भलाई का बदला

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि एक आदमी था जिसने कभी कोई भलाई नहीं की थी । (लेकिन) जब वह लोगों से लेन-देन करता तो अपने एजेंट से कह देता कि देखो, जो आसानी से मिल जाए वह ले लेना और जिस माल के लेने में परेशानी व तंगी हो उसे रहने देना और माफ़ कर देना । हो सकता है कि अल्लाह तआला हमारी बुराइयों को माफ़ कर दे । जब वह मर गया तो अल्लाह तआला ने उससे पूछा, क्या तुमने कभी कोई भलाई की थी ? उसने जवाब दिया, नहीं, अलबत्ता मैं लोगों से लेन-देन किया करता था और जब वुसूली का समय आता तो मैं अपने नौकर को भेजता और उससे कहता कि जो कुछ आसानी से मिल जाए, उसे ले लेना और जिसके पास तंगी और परेशानी हो और वह अदा न कर सकता हो तो उसको छोड़ देना और माफ़ कर देना । हो सकता है कि अल्लाह (इस बहाने) हमारी बुराइयों को माफ़ कर दे । अल्लाह ने फ़रमाया कि मैंने तुझे तेरी बुराइयों से पाक किया और तुझे माफ़ कर दिया ।

(बुख़ारी : 3451, मुस्लिम : 1560)

इससे यह मालूम होता है कि इन्सान एक-दूसरे के साथ जैसा बर्ताव करता है, अल्लाह तआला भी उसके साथ वैसा ही बर्ताव रखता है । इसलिए जो आदमी तंगदिल हो और उसका रवैया सख़्त हो तो अल्लाह तआला भी उसके साथ सख़्ती करेगा और जो आदमी दूसरों के साथ नर्मी करता हो, अल्लाह तआला भी उसके साथ नर्मी करेगा ।

# सभी समस्याओं का हल नबी (सल्ल०) की शिक्षाओं में निहित

■ सैयद असअद गीलानी

वर्तमान समय की सभी समस्याओं का समाधान अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की शिक्षाओं और अल्लाह के रसूल के बताए हुए तरीक़े के पालन में है । यह सच्चाई है कि नबी (सल्ल०) दुनिया में अल्लाह के अंतिम पैग़म्बर हैं और इस का तर्क यह है कि ख़ुद अल्लाह ने आपको अपना अंतिम पैग़म्बर क़रार दिया है । अल्लाह ने दुनिया वालों के मार्गदर्शन के लिए बस्ती-बस्ती अपने रसूल भेजे और रसूलों का एक लम्बा सिलसिला जारी किया और मुहम्मद (सल्ल०) पर इस सिलसिले के पूरे होने की घोषणा कर दी । मार्गदर्शन के इस सिलसिले के पूरे होने की घोषणा से स्पष्ट है कि क़ियामत तक पैदा होने वाले मनुष्यों की आधुनिक से आधुनिक समस्याओं का समाधान भी उस अंतिम नबी (सल्ल०) की शिक्षाओं में होना अनिवार्य है । अगर अंतिम नबी की शिक्षाएं मानवजाति की क़ियामत तक मार्गदर्शन नहीं कर सकती तो निश्चित रूप से नुबूवत का अर्थ बदल जाता है । नुबूवत और रिसालत का सिलसिला तो है ही मनुष्य के मार्गदर्शन के लिए और अगर यह सिलसिला कहीं समाप्त होता है तो इसका यह अर्थ हुआ कि मार्गदर्शन पूरा हो चुका है और अब मानवजाति को और मार्गदर्शन के लिए किसी दूसरे स्रोत की आवश्यकता नहीं है ।

वर्तमान युग के मनुष्य की समस्याएं उन विचारधाराओं के कारण हैं जिनकी लपेट में आज हर समाज, हर देश और हर राष्ट्र उलझे हुए हैं । वे विचारधाराएं ही वास्तव में इन्सानों की वास्तविक समस्याएं हैं ।

उनकी बहुत बड़ी मुसीबत नास्तिकता है, जिसने उन्हें मन के संतोष से वंचित कर दिया है और स्वार्थ के भयानक चक्कर में फंसा दिया है । उनकी एक और मुसीबत इन्सानों का इन्सानों पर शासन है जो अत्यधिक स्वार्थपूर्ण और अन्यायपूर्ण है । उनकी मुसीबत निरंकुश संप्रभुता है जो उन्हें पारस्परिक टकराव पर उभारती रहती है । उनकी एक समस्या धन का भंडारण है, जिसके कारण वर्ग विभाजन होता है और उनके बीच दुश्मनी और संघर्ष को बढ़ावा मिलता है । उनकी एक समस्या शराब है जो उन्हें बदमस्त रखती है । उनकी एक समस्या उनका जीवन लक्ष्य से अपरिचित होना है । उनकी मुसीबत नैतिक मूल्यों और मानव मूल्यों से अपरिचित होना है ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मानवजाति को वह स्थायी वैचारिक नैतिकता दी है, जिसकी मदद से मनुष्य अपनी समस्याओं से छुटकारा पा सकता है । वे सारी नैतिकताएं कुरआन और सुन्नत की शिक्षाओं पर आधारित हैं और उन्हीं के पालन में मानवता की समस्याओं का समाधान छुपा है । हम उन्हीं नैतिक मूल्यों को रसूले अकरम (सल्ल०) की शिक्षाओं का निचोड़ और मानवता की समस्याओं का समाधान समझते हैं ।

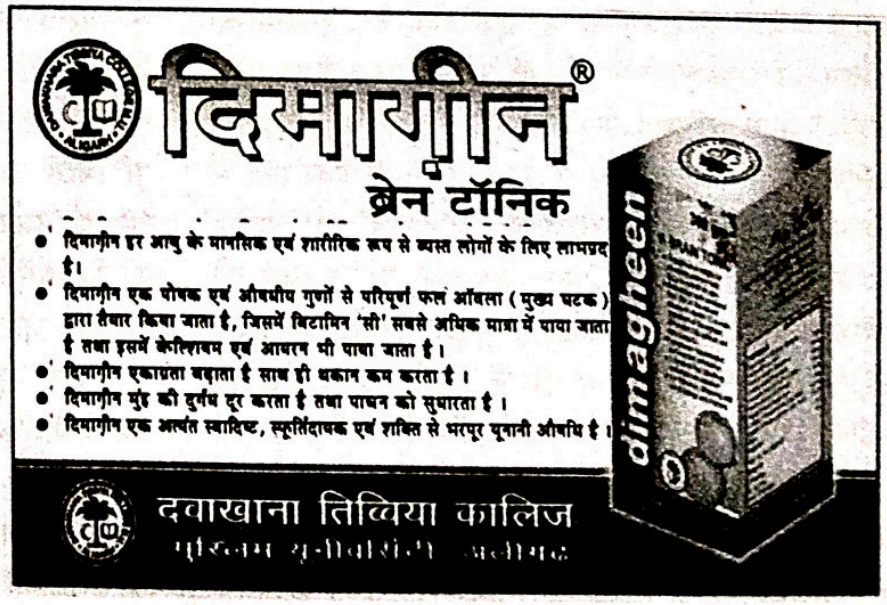

इन नैतिक मूल्यों में सबसे पहला मूल्य संसार की एकता का है, जो क़ुरआन, सुन्नत और ब्रह्मांड के अध्ययन से हमारे सामने उभर कर आता है । यह सब कुछ जो हमारे चारों ओर फैला हुआ, छाया हुआ और बिखरा हुआ है । इन सबके अन्दर संसार रचना की एकता है । इनमें एक चिंतन है, एक उद्देश्य है, एक योजना है, समन्वय और पारस्परिक सहयोग है । एक क्रम है इसमें कोई भी बिखराव नहीं है । इसमें एक से अधिक काम करने वाला मस्तिष्क मौजूद नहीं है । इस सारे संसार की एक दिशा है, एक नियम है, एक प्रभाव है । यह किसी बड़े महान योजना बनाने वाले रचयिता की बनाई हुई एक मशीन की तरह है इसका जोड़-जोड़ आपस में एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है । संसार की यही एकरूपता और उसके अवयवों का पारस्परिक समन्वय इसका सबूत है कि यह बहुत से रचयिताओं की रचना नहीं है, बल्कि एक ही रचयिता है जिसने पहाड़ से कंकर तक, मरुभूमि से कण तक, समुद्र से बूंद तक और एक तुच्छ कोशिका से विशालकाय जानवरों तक की रचना की है और एक तरह की मशीनरी को विभिन्न रंग-रूप देकर अपनी रचना कला की एकरूपता में विभिन्न रचनाओं का दर्शन कराया है । क़ुरआन और सुन्नत की शिक्षाएं इस परिकल्पना की गवाह है और यह सच्चाई एक स्थाई मूल्य का रूप रखती है जो क़ियामत तक के लिए एक रचयिता के पक्ष में गवाही देती है । इसी सच्चाई को समझ लेने से मानवजाति के चिंतन की गुत्थी सुलझ जाती है ।

### उपास्य की एकता

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) द्वारा बताया गया दूसरा स्थाई नैकित मूल्य उपास्य का एक होना है । इस्लाम की जीवन की परिकल्पना में अल्लाह के एकत्व पर ईमान सबसे बड़ी मज़बूत बुनियाद की हैसियत रखता है । जिन अन्य इस्लामी मान्यताएं और मूल्य हैं वे सब उसी एक स्रोत से अपना अस्तित्व जोड़ के रखती हैं । इस्लाम के सारे आदेश, इसकी मान्यताएं, इसके नियम, सब इसी एक सच्चाई की विभिन्न शाखाएं हैं । अल्लाह के रसूलों पर इसलिए ईमान है कि वे अल्लाह के भेजे हुए हैं । फ़रिश्तों पर इसलिए ईमान है कि वे अल्लाह के फ़रिश्ते हैं । किताबों पर ईमान कि वे अल्लाह की भेजी हुई मार्गदर्शन हैं । स्वर्ग और नरक पर इसलिए ईमान कि वे अल्लाह की मर्ज़ी और अल्लाह के प्रकोप का प्रदर्शन हैं । परलोक पर इसलिए ईमान है कि वे अल्लाह के अंतिम न्याय का दिन है । दायित्व इसलिए दायित्व बन गए हैं कि उनको अल्लाह ने दायित्व ठहरा दिया है । अधिकार इसलिए अधिकार कहलाते हैं कि उनको अल्लाह ने अधिकार के रूप से आदेश दिया है । अर्थात इस्लाम में हर चीज़, हर आस्था, हर कर्म केवल अल्लाह पर ईमान के साथ स्थापित है । अगर अल्लाह पर ईमान न हो तो फिर न स्वर्ग नर्क है, न हिसाब है और न परलोक है, न दायित्व है, न अधिकार । न रिश्तों का लिहाज़ है और न नियमों का पालन । इस एक केंद्र के हटते ही इस्लाम की सारी व्यवस्था तितर-बितर हो जाती है, बल्कि इस्लाम के नाम से कोई चीज़ और रसूल की शिक्षाओं के नाम से कोई चीज़ बाक़ी नहीं रहती । अर्थात इस्लाम का सबसे पहला सबक़ यह है कि अल्लाह आदि से है और अंत तक रहेगा । वह सर्वज्ञ और सर्वसामर्थ्य है । वह एक है और उसका कोई साझी नहीं । सभी समस्याओं और मुसीबतों का समाधान उसी के हाथ में है ।

बस अल्लाह के एक होने की आस्था के बनते ही सारी कायनात में अर्थ पैदा हो जाता है । हर नैतिक मूल्य में ऊर्जा आ जाती है । हर दायित्व में ज़िम्मेदारी का एहसास उभर आता है । और हर अधिकार में शक्ति पैदा हो जाती है । फिर यह संसार और उसकी हर चीज़ सार्थक और सुंदर बन जाती है और मनुष्य का मस्तिष्क एक दिशा अपना लेता है ।

### मानव एकता

वैचारिक सच्चाई का तीसरा महान मूल्य हमें क़ुरआन और सुन्नत से मानव एकता में मिलती है । मनुष्य का वर्तमान सांसारिक विभाजन मात्र पहचान के लिए है । क़ौमपरस्ती और मानव मानव का विभाजन व्यर्थ है । वास्तव में मनुष्य एक ही जोड़े की नस्ल से चला है । यह विश्व एक परिवार है जो आदम और हव्वा की संतान से बढ़कर पूरी धरती पर फैल गया है । खुदा ने ज़मीन इन्सान को अस्थाई निवास के लिए उसे दी है । यह उसके पिता आदम की विरासत है । वह पूरी धरती का निवासी है । देशों का विभाजन अस्थाई और प्रशासनिक है । सभी मानव भाई-भाई हैं । शक्ल-सूरत, रंग-रूप भाषा और पहनावे का अंतर, ये सब भौगोलिक और ऐतिहासिक कारण से हैं । इन सब अंतरों के अंदर वही मनुष्य छुपा हुआ है जिसे आदम की संतान के रूप में ज़मीन को बसाने का दायित्व सौंपा गया था । और उसने यह दायित्व पूरा किया है । उसमें वंश, भाषा या क्षेत्र

का अंतर कोई श्रेष्ठता पैदा नहीं करता । श्रेष्ठता का आधार अल्लाह और अल्लाह के रसूल ने कुछ और ही बनाया है।

"तुममें सबसे श्रेष्ठ वास्तव में वही है जो ईश्वर से डरने वाला है ।" (कुरआन)

जिसने अपना जीवन ईश्वर से डरकर गुज़ारा । लेन-देन, मामलात, रहन-सहन, चाल-चलन, राजनीति, अर्थव्यवस्था, सामूहिक नियम और व्यक्तिगत नियम हर पहलू से जिसने ईश्वर के डर को अपना मार्गदर्शक बनाकर जीवन का सफ़र तय किया बस वही श्रेष्ठता के योग्य है । इसके सिवा मनुष्य सब बराबर हैं । मानवाधिकार में समानता, विकास के अवसरों में समानता, रिश्ते और नाते में समानता, सामाजिकता और आर्थिक अधिकारों में समानता, वे सब एक ही परिवार के सदस्य हैं । बस संख्या अधिक होने में उनकी मानव एकता गुम हो गयी है । यही मानव एकता का स्थाई मूल्य है जो कुरआन और सुन्नत ने पेश किया है । इसमें राष्ट्रवाद के नाम पर की जाने वाली दुश्मनी का इलाज है ।

### अल्लाह का प्रतिनिधित्व

कुरआन और सुन्नत का एक मूल्य जो अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के माध्यम से हमें मिला है, यह भी है कि मनुष्य धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि है और अत्यधिक आदरणीय है । वह ज़मीन पर अनगिनत जीवों में मात्र एक ऐसा जीव नहीं है जो किसी भी सेल से विकसित होकर पहले बंदर और फिर दो टांगों पर खड़ा होने वाला जीव बन गया, बल्कि वह श्रेष्ठतम रचना धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि है ।

इस्लाम ने मनुष्य के बारे में यही कल्पना दी है, जो कुरआन में इस तरह बयान हुआ है–

और जब तुम्हारे पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा–मैं ज़मीन में एक ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाने वाला हूं । फ़रिश्तों ने निवेदन किया–क्या ऐसे व्यक्तित्व को ख़लीफ़ा बनाया जा रहा है जो धरती में बुराई फैलाएगा और रक्तपात करेगा ? जबकि हम तेरी प्रशंसा और स्तुति करते हुए तेरी पावनता और पवित्रता की स्वीकारोक्ति करते हैं । (तेरी सत्ता बुराई से मुक्त और तेरा कार्य घाटे से परे है ।) अल्लाह ने कहा–मेरी दृष्टि जिस वास्तविकता पर है, तुम्हें उसकी ख़बर नहीं । (2:30)

यहां कुरआन खुद मनुष्य को प्रतिनिधि क़रार देता है । स्पष्ट है कि प्रतिनिधि स्वयंभू नहीं होता बल्कि वह अपने नियुक्त करने वाले स्वामी के सामने जवाबदेह होता है । उसको पायी-पायी का हिसाब देना होता है और उसका स्वामी उससे हर-हर काम और हर-हर हरकत के बारे में पूछ सकता है और उसकी अमानत, माल, शक्ति हर चीज़ के प्रयोग के बारे में सवाल कर सकता है ।

प्रतिनिधि का पहला दायित्व ही यह होता है कि वह जिसका प्रतिनिधि है, उसकी बादशाही उसकी हुकूमत और उसकी सत्ता को स्वीकार करें और उसी के आदेशों के अंदर रहकर अपने सारे काम और सारे दायित्व पूरे करें । इस तरह मनुष्य अल्लाह की जन्मजात रैयत है । अगर प्रतिनिधि की हैसियत से वह दुनिया की सारी चीज़ों से श्रेष्ठ है, और दुनिया की सारी चीज़ें उसके अधीन है और उसके लिए हैं । संसार का जीवन सामग्रियों से भरा हुआ यह घर इसलिए है कि मनुष्य इन चीज़ों का प्रयोग करें और अपने स्वामी के बताए हुए तरीक़ों के अनुसार उनसे सेवा ले । अपने अधीनस्थों के आगे झुकना उसके लिए अपमान है । अगर वह झुकेगा तो अपने आप पर अत्याचार करेगा ।

अल्लाह का प्रतिनिधित्व होने का एक पहलू यह भी है कि वह सृष्टि के साथ व्यवहार करने में वही रवैया रखेगा जो खुद अल्लाह का रवैया है । जिस तरह परवरदिगार अपनी रचनाओं का पोषण और संरक्षण करता है । मनुष्य भी अपने अधिकार क्षेत्र में उन चीज़ों का संरक्षण और उनका पोषण करेगा जो अल्लाह ने उसके अधिकार में दी है । जिन पर


ANSARI STONE KOTA

*Deals in :*
ALL TYPES OF SAND STONE
(RED, BLUE, BROWN ETC.)

MACHINE CUT & HAND CUT SAND STONE





KOTA STONE

*Address :*
RAM NAGAR NEW STONE MANDI
KOTA RAJASTHAN

Mobile : 9829039190, WhatsApp : 9660853702

अल्लाह ने उसे शासन दिया है प्रतिनिधि होने का यह पहलू भी है अल्लाह की मर्ज़ी और उसकी मंशा के विरुद्ध अपनी और अपने अधीनस्थ सृष्टि का कोई भी कार्रवाई गवारा न करेगा और उसके आदेशों के अधीन बनकर रहेगा । इस ज़िम्मेदारी की पोजिशन को अपनाने से मनुष्य अपनी बहुत-सी ग़ैर-ज़िम्मेदाराना हरकतों से सुरक्षित हो जाता है ।

### ईशदूतत्व की कल्पना

इस्लामी जीवन में एक स्थाई मूल्य रिसालत यानी ईशदूतत्व का है जिसे स्वीकार करके मनुष्य मार्गदर्शन का रास्ता पा लेता है और इधर-उधर भटकने से बच जाता है । क़ुरआन व सुन्नत की शिक्षाओं में अल्लाह पर ईमान के बाद ईशदूतों पर ईमान सबसे ज़्यादा महत्व रखता है । सच्चाई यह है कि रिसालत के बिना दुनिया में मानवजाति कभी अपने गंतव्य से अवगत नहीं हो सकती थी ।

अल्लाह ने दुनिया को बनाने और मनुष्य को उसमें बसाने के बाद अगर उसे यूं ही स्वच्छंद छोड़ दिया होता कि वह अपनी सोच और अपनी समझ से इस सच्चाई को तलाश करे कि इस संसार का एक ही रचयिता है, जो स्वंभु है और जो सर्वज्ञ है और उसकी रचना की हैसियत से मनुष्य को उसके आदेशों का पालन करना है तो मनुष्य के लिए ईश्वर के अस्तित्व का विवेक प्राप्त करने, ईश्वर के आदेशों तक पहुंचने और उसकी मर्ज़ी के अनुसार जीवन बिताने का कोई माध्यम न होता और इन्सान इस भौतिक दुनिया की चकाचौंध में भटकता फिरता और सीधे रास्ते को कभी नहीं पा सकता था । रचना और रचयिता के बीच आदेश पालन का रास्ता दिखाने के लिए अगर कोई न होता तो मनुष्य दुनिया को नरक का नमूना बना देता और फिर परलोक में हिसाब-किताब की जवाबदेही से गुज़रना पड़ता तो यह इसके लिए और भी कठिन हो जाता । सर्वजगत के पालनहार और स्वामी ने अपनी कृपा से मनुष्यों के मार्गदर्शन के लिए ईशदूतत्व का सिलसिला स्थापित किया और रसूलों के माध्यम से अपने बंदों को अपनी मर्ज़ी और अपने आदेश पहुंचाता रहा ।

रसूलों को अल्लाह की ओर से ज्ञान दिया जाता है । वे अनुमान के आधार पर मार्गदर्शन नहीं करते, बल्कि स्पष्ट ज्ञान के आधार पर मार्गदर्शन देते हैं । रसूलों के बारे में क़ुरआन ने यही कहा है–

"उनमें से हरेक को हमने आदेश और ज्ञान दिया ।"

अर्थात जब रसूल अल्लाह की ओर से सत्य ज्ञान लेकर मनुष्य तक पहुंचाने पर नियुक्त किये जाते हैं तो फिर अल्लाह आख़िरत, मौत, हिसाब-किताब और जीवन बिताने का तरीक़ा, इन सबका वास्तविक ज्ञान केवल रसूलों का ही सही हो सकता है । दूसरे लोग जो रसूलों के ज्ञान से हटकर अटकलों के आधार पर तुक्के लगाएंगे तो उनका रास्ता समस्याओं और कठिनाइयों का रास्ता होता है ।

वास्तविक ज्ञान के लिए ईशदूतत्व पर ईमान ही मानव जाति को एक बिंदु पर जमा कर सकता है । रसूल ही मनुष्य को ईश्वर के आदेशों के पालन का सही मार्ग बता सकते हैं । उससे हटकर तो केवल अज्ञानता ही बाक़ी रह जाती है और अज्ञानता की हज़ार शाखाएं हैं । मनुष्य अज्ञानता के एक गढ़े से निकलता है, तो दूसरे में गिर जाता है ।

### जवाबदेही की परिकल्पना

क़ुरआन और सुन्नत की शिक्षाओं में एक स्थाई मूल जिसकी शिक्षा रसूल (सल्ल०) ने दी है आख़िरत की जवाबदेही का मामला है । यानी मनुष्य निरंकुश और स्वच्छंद अपनी इच्छाओं के रुख़ पर उड़ने वाला पक्षी और मुंहज़ोर पशु बनाकर पैदा नहीं किया गया है, बल्कि यह ज़मीन पर ख़ुदा का ख़लीफ़ा है । सारी सृष्टि में सर्वोच्च और श्रेष्ठ है । संसार की सारी शक्तियां और संसार की सारी चीज़ें उसके लिए पैदा की गयी है और यह भलाई और बुराई का ज्ञान लेकर रसूलों की शिक्षाओं से लैस है । इसलिए वह दुनिया में एक ड्यूटी पर भेजा गया है । वह ड्यूटी यह है कि उसे अपना पूरा जीवन अपने पैदा करने वाले के आदेशों के अनुसार गुज़ारना है । दुनिया के पथभ्रष्ट करने वाले प्रदर्शनों में से गुज़रते हुए सीधे रास्ते पर बने रहना है । सुख और आनंद के लुभावने सामानों में अपने ईमान को सुरक्षित रखना है । असत्य पर आधारित व्यवस्था के अन्याय और अत्याचार के अंदर सत्य का दीपक लेकर आगे बढ़ना और उस रास्ते में जो भी कठिनाई आए उसे नबियों के सच्चे अनुयायी की तरह बर्दाश्त करना है । धोखा देने वाले दुनिया के सामान से दामन बचाकर निकल जाना है और उनका सौदा अपने दीन और ईमान के साथ नहीं करना है, इसलिए कि यह सौदा सरासर घाटे का सौदा है ।

वास्तव में दुनिया के सामान का चक्कर ही है जिसमें मनुष्य अपना पूरा जीवन गुज़ार देता है और यह भूला रहता है कि मशीन के लिए तेल उपलब्ध कराना ही मशीन बनाने

का मक़सद नहीं है । तेल का उपलब्ध कराना मशीन को केवल चालू रखने के लिए होता है, ताकि वह अपने बनाने के मक़सद को पूरा कर सके । मनुष्य दुनिया के सामान की सुंदरता में खोकर केवल मशीन को चालू रखने की जुगत में ही सारा जीवन गुज़ार देता है और जब मशीन की कारगुज़ारी का हिसाब देने का समय आता है तो पता चलता है कि जिस काम के लिए मानव मशीन बनाई गयी थी अर्थात पालनहार की बंदगी, वह कारगुज़ारी तो शून्य रही है और सारा समय केवल मशीन को चालू रखने में ही गुज़र गया है ।

क़ुरआन और सुन्नत इन्सान को आख़िरत की बहुमूल्य परिकल्पना देता है और दुनिया के जीवन में आख़िरत की तैयारी के लिए उभारता है । यूं तो मौत भी मनुष्य को बार-बार किसी दूसरी दुनिया के अस्तित्व का पता देती है लेकिन यह स्पष्ट पता नहीं है, जब तक किसी ज्ञान वाले से उस दूसरी दुनिया के हालात सामने न आएं और दूसरी दुनिया के हालात के बारे में एक ज्ञान देने वाला एक मात्र माध्यम अल्लाह का रसूल ही होता है । वही बताता है कि दुनिया में मनुष्य को किस तरह जीवन बिताना है और दुनिया के कर्मों का एक पारलौकिक परिणाम भी सामने आएगा । अच्छे कर्म का अच्छा परिणाम होगा और बुरे कर्मों का परिणाम भी बुरा होगा ।

## परलोक की अवधारणा

यह रसूल ही जानते हैं कि दुनिया के वर्तमान व्यवस्था के बिखर जाने के बाद एक महान अदालत स्थापित होगी जिसमें हर कर्म का हिसाब होगा । मनुष्य एक नये शरीर के साथ जीवित होगा और अपने पैदा करने वाले रचयिता के सामने जिसका वह दुनिया में प्रतिनिधि था हाज़िर होगा । दुनिया में अपने पद और अपने पदेन कर्मों का पूरा-पूरा हिसाब देगा । सारे काम जांचे-परखे और नापे जाएंगे । उनके पीछे मनुष्य की नीयत का पैमाना भी सामने आ जाएगा और सारा हिसाब पूरे न्याय के साथ होगा । यह धारणा क़ुरआन और सुन्नत की शिक्षाओं का मूल्य है और इस पर इस्लामी जीवन की इमारत खड़ी है । इस धारणा से मनुष्य ज़िम्मेदार और ईश-भय रखने वाला बनता है और खुदा की ज़मीन पर खुदा की रहमत की छाया में आ जाता है ।

इन बुनियादी मूल्यों के साथ व्यावहारिक जीवन के अनगिनत सामूहिक, व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और नैतिक मूल्य हैं, जिनको हम मारूफ़ (भलाइयां) कहते हैं, जिनका पालन करना और जिनका आयोजन करना अनिवार्य है । साथ ही अनगिनत नकारात्मक कर्म और अवांछित कर्म है जिनको क़ुरआन और सुन्नत मुनकर (बुराइयां) कहते हैं । अर्थात मारूफ़ सीधे रास्ते पर चलने के लिए सहायक है और मुनकर सीधे रास्ते से हटा कर बर्बादी के गड्ढ़े में गिराने वाले हैं ।

इसी तरह मानव-जीवन के वांछित मूल्यों में से पारस्परिक भाईचारा भी एक स्थाई मूल्य है । पारस्परिक परामर्श से सामूहिक मामले तय करना एक और मूल्य है । मानवता के स्तर पर व्यक्ति की पारस्परिक समानता भी एक मूल्य है । समाज के ग़रीब और वंचित लोगों की व्यक्तिगत और सामूहिक सहायता की प्रभावशाली व्यवस्था भी एक मूल्य है । सामूहिक नैतिकता का आयोजन, सहयोग और सहानुभूति, जनता के सामने जवाबदेही का एहसास, अज्ञानतापूर्ण असहिष्णुता से मुक्त समाज, अल्लाह के उतारे हुए क़ानून का सम्मान, जायज़ और नाजायज़, हलाल और हराम की पाबंदी यह सब रसूल (सल्ल॰) द्वारा निर्धारित स्थाई सामाजिक मूल्य है । इस तरह असत्य के मुक़ाबले सत्य, बुराइयों से रोकना और भलाइयों में आगे बढ़ना, एक-दूसरे का आदर-सम्मान, अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना और ब्याज और कंजूसी से बचना आपसी प्रेम और दया का व्यवहार ये सब ऐसे स्थाई नैतिक मूल्य हैं जिनकी स्थापना करने से मनुष्य की समस्याएं कम होती हैं और जिनका आयोजन करने से मनुष्य ख़ैरे-उम्मत और रहनुमा-ए-मिल्लत बन सकते हैं । आधुनिक समय के मनुष्य की कठिनाइयां इन शिक्षाओं पर अमल करने से ही ख़त्म हो सकती हैं, यह काम मुसलमानों का था कि वे इन नैतिक मूल्यों पर अमल करके दुनिया का मार्गदर्शन करते लेकिन उन्होंने इन शिक्षाओं को त्याग कर दुनिया की नेतृत्व का स्थान खो दिया, और पस्ती और ज़िल्लत में चले गये जो दुनिया के लिए भी दुखद है और खुद मुसलमानों और इस्लाम के लिए भी दुखद । दुनिया की दूसरी क़ौमें तो भौतिक सामग्री के बहुतायत के बल पर विकास कर सकती हैं लेकिन मुसलमान जिन सिद्धांतों के कारण मुसलमान कहलाते हैं जब तक वे उन सिद्धांतों में परिपक्व न हों, उन्हें दुनिया के नेतृत्व का स्थान पर खड़ा करने की दूसरी कोई सूरत नहीं है । उनकी वास्तविक शक्ति इन्हीं मूल्यों की सुरक्षा में निहित है और इन मूल्यों के लागू करने से ही दुनिया की समस्याएं दूर हो सकती हैं और कठिनाइयां समाप्त हो सकती हैं ।

# मेयारी तालीम ही बेहतर मुस्तक़बिल की ज़मानत है

बच्चों की बेहतर तालीम व तरबियत के पेशे-नज़र स्कूलों और मदरसों के लिए

## इस्लामी तर्ज़ पर तैयार निसाबी किताबें

उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी, गणित, सामान्य ज्ञान, कंप्यूटर, इस्लामियात और अन्य विषयों की पाठ्य-पुस्तकें अंग्रेज़ी, उर्दू और हिन्दी तीनों भाषाओं में उम्दा काग़ज़, बेहतरीन प्रकाशन, मतन से हम आहंग दीदाज़ेब तस्वीरों के साथ पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करने वाला

## हिन्दुस्तान भर में मशहूर पहला इशाअती इदारा

भारत सरकार के क़ौमी दर्सियात (C.B.S.E & N.C.E.R.T) के ख़ाके के तहत बच्चों के स्वभाव और दिलचस्पी को ध्यान में रखते हुए मुसलसल जांच (C.C.E) के नये तक़ाज़ों के मुताबिक़ नामवर शिक्षण-संस्थाओं से जुड़े अनुभवी शिक्षकों के द्वारा तैयार की गयी पाठ्य-पुस्तकों के लिए संपर्क करें।

हम सारे तालीमी इदारों से भरपूर तआवुन की अपील करते हैं और अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि हम सबकी इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए। आमीन!

इस्लामी पाठ्य-पुस्तकों का पहला इशाअती इदारा। उर्दू, हिन्दी मीडियम स्कूलों और मदरसों के लिए

**Pioneer in Islamic Oriented Books for Urdu/Hindi Medium Schools & Madarsas**

**AL QALAM**
**Publications Pvt.Ltd.**

Al Qalam

**اَلْقَلَم پبلیکیشنز**
**پرائیویٹ لمیٹیڈ**

Regd. Office : 344, Gali Garhalyya, Bazar Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110 006.
Phone : (Off.) 011-2324 1481, 2326 1481 (Godown) 011- 23631481
website : alqalampublications.com e-mail : alqalambooks@gmail.com




To place orders please e-mail us on : alqalambooks@gmail.com or WhatsApp : 9136393030

# हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि॰)

■ अब्दुर्रहमान राफ़त पाशा

दिल हैरान, क़लम परेशान और सोच-विचार की तरंगें व्यग्रचित हैं। समझ में नहीं आ रहा कि उनके जीवन-वृत्तांत का आरंभ कहां से करूं और कहा पर अंत। उनके न्याय की गाथा सुनाऊं या उनकी अमानतदारी की चर्चा करूं ? धर्म के मामले में उनकी सख़्ती एवं कठोरता की कहानी बयान करूं या 22 लाख 51 हज़ार 30 वर्ग मील धरती पर कंट्रोल रखने के बावजूद उनकी सादा ज़िन्दगी का अहवाल लिखूं ? अपनी प्रजा के सुख-चैन के लिए रात-रात भर घूम-घूमकर उनकी समस्याओं का पता लगाकर उनका समाधान तुरंत करने वाले उस महान इन्सान की दयालुता का क़िस्सा छेड़ू या अल्लाह के डर से हरदम कांपने वाले उस बलवान आदमी की परहेज़गारी की दास्तां बयान करूं? अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से अपनी जान से ज़्यादा प्रेम करने वाले उस धर्म प्रेमी का ज़िक्र करूं या धर्म के मामले में अनकी गहरी दक्षता का बखान ? या उस ख़लीफ़तुर रसूल (आप सल्ल॰ के उत्तराधिकारी) के जीवन की कुछ झलकियां दिखाऊं जिनके कई मश्विरों को साक्षात् रूप देने हेतु आकाश से प्रकाशना (वह्य) अवतरित हुई ? परेशान हूं, ख़त्ताब बिन नुफ़ैल और हंतमा बिन्ते हाशिम के महान सपूत हज़रत अबू हफ़्स उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि॰) की किन-किन गुणवत्ताओं को उल्लेख करूं और किन-किन विशेषताओं को छोड़ दूं कि उनका जीवन-वृत्तांत है ही ऐसा समुद्र जिसका कोई किनारा नहीं, जिसका कोई अंत नहीं।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि॰) जिसे दुनिया 'फ़ारूक़' के उपनाम से भी जानती-पहचानती है, का जन्म 582 ई॰ में मक्का में हुआ। वे आयु में आप (सल्ल॰) से तेरह वर्ष छोटे थे। उनका ताल्लुक़ क़ुरैश वंश के बनू अदी नामक ख़ानदान से था। अपने शिशुकाल ही से वे बड़े चुस्त-दुरुस्त इन्सान थे। मिज़ाज में सख़्ती उन्होंने विरासत में पायी थी। अरब के रिवाज के अनुसार जब वे जवान होने को आए तो अपने पिता के मवेशियों को चराने लगे जिससे उनका शरीर और ज़्यादा मज़बूत हो गया। जवान हुए तो पढ़ने-लिखने में लग गये और शीघ्र ही लिख-पढ़ गये। उस समय केवल 17 या 18 लोग पूरे क़ुरैश वंश में लिखे-पढ़े लोग थे, जिनमें से एक हज़रत उमर (रज़ि॰) भी थे।

मज़बूत क़द-काठी का इन्सान होने के कारण उनके अन्दर घुड़सवारी तथा कुश्तीबाज़ी का बड़ा शौक़ था। मक्का के मशहूर बाज़ार उकाज़, जिसमें हर साल मेला लगता था, उस मेले में घुड़सवारी तथा कुश्तीबाज़ी की प्रतियोगिता का आयोजन भी होता था। वे दोनों प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेते थे तथा पुरष्कार भी जीता करते थे।

एक बार की बात है कि उकाज़ के मेले में एक साल एक बड़ा बलवान पहलवान भी कुश्ती लड़ने आया। उसने तमाम क़ुरैशी पहलवानों को पछाड़ कर क़ुरैश वंश की मिट्टी पलीद कर दी। अब वह जीत की ख़ुशी में चूर दूसरे पहलवानों को पुकार रहा था, लेकिन किसी को जुर्रत नहीं हो पा रही थी कि अखाड़े में जाकर उससे मुक़ाबला करे। इतने में हज़रत उमर (रज़ि॰) अपने संगी-साथियों के साथ अखाड़े के पास पहुंचे। उनके अखाड़े पर पहुंचते ही क़ुरैश के जवान उन्हें उस पहलवान का मुक़ाबला करने पर उभारने लगे। वे चाहते थे कि किसी भी तरह क़ुरैश की लाज रह जाए।

हज़रत उमर (रज़ि॰) को अंततः जोश आ गया और वे अखाड़े में कूद गये। प्रतिद्वंद्वी पहलवान ने हज़रत उमर (रज़ि॰) को बहुत अपमानजनक निगाह से देखा जिससे उनके जोश में और ज़्यादा उबाल आ गया। अब दोनों बहादुरों ने अपना-अपना ज़ोर तथा दांव ख़ूब आज़माया। इधर क़ुरैश के लोग चिल्ला-चिल्लाकर हज़रत उमर (रज़ि॰) का जोश बढ़ा रहे थे। अंततः मैदान उन्हीं के हाथ रहा। उन्होंने उस पहलवान को चित कर दिया और पूरा वातावरण उनकी जय-जयकार से गूंज उठा। क़ुरैश के तमाम लोग ख़ुशी से झूमने लगे क्योंकि ख़त्ताब के बेटे उमर (रज़ि॰) ने उस नाबाद पहलवान को पछाड़ कर सारे मक्कावासियों की लाज बचा ली थी जिसने मक्का के अन्य सभी पहलवानों को धूल चटा दी थी।

उस वक़्त मक्का के अधिकांश लोग तिजारत करते थे, इसलिए हज़रत उमर (रज़ि॰) ने भी अपनी आजीविका प्राप्त

करने हेतु उसी पेशे को इख़्तियार कर लिया । इस सिलसिले में उन्होंने दूरदराज़ के मुल्कों का सफ़र किया । लेकिन, चूंकि उनके मिज़ाज में भी अपने पिता की तरह सख़्ती थी, इसलिए वे इस क्षेत्र में ज़्यादा सफल नहीं हो सके । फिर भी इसका लाभ उन्हें यह हुआ कि उनके अनुभव में वृद्धि तथा उनकी समझ-बूझ में और ज़्यादा प्रगाढ़ता आ गयी जिससे उनको बाद में काफ़ी लाभ पहुंचा ।

जब उनकी आयु लगभग 27 साल की हुई तो अल्लाह तआला ने मक्का के यतीम हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को अपना नबी बनाकर भेज दिया । उन्होंने न केवल अल्लाह की आवाज़ सुनने से इन्कार कर दिया बल्कि उस आवाज़ पर कान धरने तथा अपने पैत्रिक धर्म को छोड़, इस्लाम धर्म क़बूल कर लेने वालों के सबसे भयानक दुश्मनों में से एक हो गये । ग़रीब मुसलमानों को सताना, परेशान करना तथा उनको मारना-पीटना, उनका जैसे सबसे महत्वपूर्ण काम बन गया और फिर एक दिन तो उन्होंने सारी हदें ही तोड़ दीं।

अब तक इस्लामी दावत अपनी आयु के छः साल गुज़ार चुकी थी। क़ुरैश की कटु दुश्मनी के बावजूद अल्लाह का धर्म धीरे-धीरे फैलता जा रहा था । यह देखकर क़ुरैश के दिन का चैन तथा रात की नींद कहीं दूर अंतरिक्ष में खो गयी थी । मक्का के सरदारों की बौखलाहट अपनी चरम सीमा तक पहुंच गयी थी लेकिन उन्हें सूझ नहीं रहा था कि करें तो क्या करें ? अंततः उन्होंने एक भव्य समारोह का आयोजन किया ताकि इस समस्या का कोई समाधान ढूंढ़ा जा सके। सबने बड़ी जोशीली बातें कीं । सबकी तान इसी बात पर टूटी कि मुहम्मद (सल्ल०) को मार डाला जाए, लेकिन जब यह प्रश्न सामने आया कि मुहम्मद (सल्ल०) पर तलवार चलाए कौन ? तो सबको मानो सांप सूंघ गया । ऐसे में हज़रत उमर (रज़ि०) खड़े हुए और कहा : यह सेवा मैं अंजाम दूंगा !!

यह गरज़दार आवाज़ सुनकर सभी चौंक पड़े । अबू जह्ल जो आपका मामू था, खड़ा हो गया और उनकी पीठ थपथपाते हुए कहा : शाबाश, बेटे ! मुझे तुम से यही आशा थी । यदि तुम अपने अभियान में सफल हो गये तो हम तुम्हें सौ ऊंट तथा चालीस हज़ार दिरहम नक़द पुरष्कार देंगे ।

हज़रत उमर (रज़ि०) क्रोध से भरे नंगी तलवार लेकर आप (सल्ल०) के घर की ओर रवाना हो गये । वे अपनी धुन में मस्त चले जा रहे थे कि रास्ते में उनकी मुलाक़ात हज़रत नुऐम बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०) से हो गयी । हज़रत नुऐम (रज़ि०) ने उनसे पूछा : उमर ! इस तरह तलवार सोंते कहां जा रहे हो ?

हज़रत उमर (रज़ि०) ने कहा : उस अधर्मी मुहम्मद (सल्ल०) को क़त्ल करने जा रहा हूं जिसने क़ुरैश को परेशानी में डाल दिया है, जिसने उनकी आस्था को सरेआम चुनौती दी और ललकारा है, जिसने उनके धर्म को बुरा-भला कहा और उनके ईष्ट-पूज्यों को गालियां दी हैं ।

हज़रत नुऐम (रज़ि०) ने कहा : उमर ! तुम्हारा दिमाग़ वाक़ई ख़राब हो गया है । तुम क्या समझते हो, यदि तुमने मुहम्मद (सल्ल०) की हत्या कर डाली तो क्या अब्द मुनाफ़ की संतानें तुम्हें जीता छोड़ देंगी ? मेरी मानो, और मुहम्मद (सल्ल०) से निपटने से पहले अपने घर के लोगों की ख़बर लो और उन्हें सीधा रखने का प्रयास करो ।

हज़रत उमर (रज़ि०) ने कहा : तुम मेरे घर के किन लोगों की बात कर रहे हो ? हज़रत नुऐम (रज़ि०) ने कहा : तुम्हारे बहनोई एवं चचेरे भाई सईद बिन ज़ैद तथा तुम्हारी अपनी बहन फ़ातिमा बिन्ते ख़त्ताब (रज़ि०) की बात कर रहा हूं । सुना है, उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया है और मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह का रसूल मान लिया है ।

प्रकृति के खेल भी कितने निराले होते हैं ? वह जब किसी को अपनी ओर खींचती है तो उसके लिए ऐसा मायाजाल बिछाती है जो नज़र नहीं आता लेकिन शिकार को ऐसा फांस लेता है कि वह लाख प्रयास करे, अपने आपको उससे आज़ाद नहीं करा पाता ।

कुछ ऐसा ही खेल, प्रकृति हज़रत उमर (रज़ि०) के साथ खेल रही थी । जब वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को क़त्ल करने की ठान कर घर से चले थे तो उन्हें मालूम भी नहीं था कि उनकी यह यात्रा ख़ुद उनके ही जीवन की कायापलट कर देगी । वे नहीं जानते थे कि उनकी यह यात्रा ऐसा परिणाम दिखाएगी जिससे दुनिया चकित रह जाएगी । उन्हें मालूम नहीं था कि वे उसी यात्रा की गोद से 'फ़ारूक़ (हक़-नाहक़ को छांट कर अलग कर देने वाले) बनकर निकलेंगे । वे इस बात से भी अज्ञान थे कि मैं जिस यात्रा पर निकला हूं वह मुझे ऐसी दुनिया में पहुंचा देगी जहां मैं दूसरा ख़लीफ़तुर्रसूल बनूंगा, मेरे नाम से ईरान और रोम के बादशाह कांपेंगे, 22 लाख 91 हज़ार 30 वर्ग मील तक की धरती पर मेरा अधिकार होगा और न्याय तथा इन्साफ़ का ऐसा कीर्तिमान स्थापित कर जाऊंगा जिसकी मिसाल रहती दुनिया तक दी जाएगी ।

बहरहाल, हज़रत नुऐम (रज़ि॰) की बातों ने हज़रत उमर (रज़ि॰) के लिए जलती पर तेल का काम किया । उन्होंने अपना रास्ता बदल दिया और सीधे अपने बहन-बहनोई के घर जा पहुंचे, गुस्से से तिलमिलाते हुए । उस समय उनके बहन-बहनोई हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि॰) से पवित्र कुरआन की शिक्षाएं प्राप्त कर रहे थे । हज़रत उमर (रज़ि॰) की घर के दरवाज़े पर दस्तक तथा उनके पुकारने की आवाज़ सुनते ही हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि॰) घर के कोने में दुबक गये तथा हज़रत फ़ातिमा बिन्ते ख़त्ताब (रज़ि॰) ने जल्दी से कुरआन का वह पृष्ठ छिपा दिया जिसकी वे सब तिलावत कर रहे थे ।

हज़रत उमर (रज़ि॰) घर में दाख़िल हुए और बहन-बहनोई से पूछा : अभी तुम लोग क्या पढ़ रहे थे ? दोनों ने उत्तर दिया : कुछ नहीं ।

हज़रत उमर (रज़ि॰) ने कहा : मुझे ख़बर मिली है कि तुम दोनों ने मुहम्मद (सल्ल॰) का धर्म क़बूल कर लिया है ?

इतना कहने के बाद उन्होंने अपने बहनोई को पकड़ कर पीटना शुरू कर दिया । बहन अपने पति को बचाने आयी तो उन्होंने उसके चेहरे पर भी ज़ोरदार थप्पड़ जड़ दिया जिसके कारण उसका चेहरा सूज गया । ऐसे में बहन बोल पड़ी : हां, उमर ! हमने इस्लाम क़बूल कर लिया है, हम अपने सच्चे रब पर ईमान ले आये हैं और मुहम्मद (सल्ल॰) को उसका सच्चा रसूल मान लिया है । अब तुम्हारे मन में जो आये कर लो, हम अपने ईमान से फिरने वाले नहीं ।

बहन की इस ललकार भरी बात ने और उसके चेहरे से रिसते हुए ख़ून ने हज़रत उमर (रज़ि॰) को पिघला-सा दिया । उन्होंने लज्जित स्वर में अपनी बहन से कहा : अभी जो कुछ तुम लोग पढ़ रहे थे, ज़रा मुझे भी दिखाओ ताकि मैं जान सकूं कि मुहम्मद (सल्ल॰) कैसी शिक्षाएं लोगों को दे रहे हैं ?

बहन ने कहा : तुम जब तक स्नान करके पाक नहीं हो जाते तब तक मैं पवित्र ग्रंथ का वह पवित्र पृष्ठ तुम्हारे हाथ में नहीं दे सकती ।

हज़रत उमर (रज़ि॰) ने स्नान किया और कुरआन की उन पवित्र आयतों को पढ़ने लगे :

"ता॰हा॰। हमने तुम पर यह कुरआन इसलिए नहीं उतारा है कि तुम मशक़्क़त में पड़ जाओ । यह तो बस एक अनुस्मृति है, उसके लिए जो डरे, भली-भांति अवतरित हुआ है उस सत्ता की ओर से, जिसने पैदा किया है धरती और उच्च आकाशों को । वह रहमान, जो राजासन पर विराजमान हुआ । उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है और जो कुछ इन दोनों के मध्य है और जो कुछ आर्द्र मिट्टी के नीचे है । तुम चाहे बात पुकार कर कहो (या चुपके से) वह तो छिपी हुई और अत्यंत गुप्त बात को भी जानता है । अल्लाह के सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं । उसके नाम बहुत ही अच्छे हैं ।" (ताहा : 1-8)

हज़रत उमर (रज़ि॰) पढ़ते गये और उनके मन का मैल धुलता गया । अंत में वे बोल पड़े : कितनी सच्ची और कितनी प्यारी बातें हैं यह ?

उनका यह वाक्य सुनते ही हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि॰) घर के कोने से बाहर आये और कहने लगे : उमर ! मुझे लग रहा है कि अल्लाह ने अपने नबी (सल्ल॰) की दुआ तुम्हारे हक़ में क़बूल की है । मैंने आप (सल्ल॰) को कल ही यह दुआ करते सुना था : ऐ अल्लाह ! अबू जह्ल या उमर बिन ख़त्ताब के द्वारा इस्लाम धर्म को शक्ति प्रदान कर !

हज़रत उमर (रज़ि॰) ने कहा : ख़ब्बाब ! मुझे बताओ कि इस समय अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) कहां होंगे ?

हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि॰) ने कहा : इस वक़्त आप (सल्ल॰) अपने सहाबियों के साथ दारे अरक़म में हैं ।

हज़रत उमर (रज़ि॰) सीधा दारे अरक़म गये और आप (सल्ल॰) के सामने "ला-इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" पढ़कर इस्लाम क़बूल कर लिया । इस तरह वह आदमी इस्लाम के विस्तृत प्रांगण में आ गया जो इस्लाम का सबसे बड़ा दुश्मन था और मानव इतिहास का वह पृष्ठ खुल गया जिसके खुलने की अति आवश्यकता थी ।

इस्लाम क़बूल करने के बाद हज़रत उमर (रज़ि॰) मुसलमानों तथा काफ़िरों, दोनों समुदायों के बीच चर्चा का विषय बन गये । उनके इस्लाम लाने से जहां एक ओर काफ़िरों में मातम-सा छा गया, वहीं दूसरी ओर मुसलमानों में प्रसन्नता एवं प्रबलता की लहर दौड़ गयी । इधर स्वयं हज़रत उमर (रज़ि॰) की हालत यह थी कि वे मुश्रिकों (बहुदेववादियों) को दनदनाते तथा मुसलमानों को चोरी-छिपे अल्लाह की इबादत करते देखकर कुढ़ते रहते थे । आख़िर उनसे रहा नहीं गया और नबी (सल्ल॰) की सेवा में उपस्थित होकर कहने लगे : हम चाहे ज़िन्दा रहें या मरें, क्या हम हक़ पर नहीं हैं ?

आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया : क्यों नहीं ? तुम लोग ज़िन्दा हो तो भी हक़ पर हो, और अगर मरोगे तो भी हक़

पर होगे ।

हज़रत उमर (रज़ि॰) ने कहा : फिर यह छुप-छुपकर अल्लाह की इबादत करना और इस्लाम की दावत देना कैसा ? क़सम उस अल्लाह की जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, आप अवश्य निकलेंगे और सबके सामने हक़ की घोषणा करेंगे।

इसके बाद आप (सल्ल॰) मुसलमानों की दो पंक्तियों के बीच में होकर निकले । एक पंक्ति का नेतृत्व हज़रत उमर (रज़ि॰) तथा दूसरी पंक्ति का नेतृत्व हज़रत हमज़ा (रज़ि॰) कर रहे थे । सारे मुसलमान आप (सल्ल॰) को इस तरह अपने सुरक्षाकवच में लिए हुए काबा में दाख़िल हुए कि क़ुरैश के तमाम लोग देख रहे थे लेकिन किसी को कुछ कहने की जुर्रत नहीं हुई । उसी दिन आप (सल्ल॰) ने हज़रत उमर (रज़ि॰) को 'फ़ारूक़' अर्थात सत्य-असत्य को अलग-अलग कर देने वाले की उपाधि दी जो इतिहास में अमर हो गयी ।

इस्लाम धर्म के दामन में आने के बाद 6-7 साल तक हज़रत उमर (रज़ि॰) मक्का ही में रहे तथा काफ़िरों के अत्याचारों को धैर्य के साथ सहते रहे । आख़िर जब अल्लाह तआला ने मुसलमानों को हिजरत करके मदीना चले जाने की अनुमति प्रदान कर दी तो सभी मुसलमान एक-एक, दो-दो करके चुपके-चुपके मदीने में जाकर बस गये । हज़रत उमर (रज़ि॰) ने भी हिजरत करके मदीना चले जाने की ठान ली लेकिन उन्होंने अन्य मुसलमानों की तरह चोरी-छिपे अपना देश त्याग नहीं दिया । उनकी हिजरत की कहानी, आइए हम हज़रत अली (रज़ि॰) की ज़ुबानी सुनते हैं :

हज़रत अली (रज़ि॰) बयान करते हैं कि मुझे किसी ऐसे मुसलमान के बारे में कोई ज्ञान नहीं जिसने हज़रत उमर (रज़ि॰) की तरह घोषणाबद्ध तरीक़े से हिजरत की हो । सारे मुसलमान चुपके-चुपके मक्का से हिजरत करके मदीना गये थे लेकिन जब हज़रत उमर (रज़ि॰) ने हिजरत करने की पूरी तैयारी कर ली तो तलवार लिए काबा के पास आए । काबा की सात बार शांतचित होकर परिक्रमा की, फिर मक़ामे इबराहीम पर आकर दो रकअत नमाज़ आराम से पढ़ने के बाद काबा के प्रांगण में मौजूद क़ुरैश की जमाअत के सामने आए और उनको संबोधित करके कहा : मैं मक्का छोड़कर मदीना जा रहा हूं । अब जो माई का लाल चाहता है कि उसकी मां अपना एक बेटा खो दे या उसकी पत्नी अपने पति से वंचित हो जाए, वह आए और मेरा तथा मेरे सहयात्रियों का रास्ता रोक कर दिखा दे ।

क़ुरैश को यह कड़ी चुनौती देने के बाद वे मक्का से मदीने के लिए प्रस्थान कर गये । किसी की हिम्मत नहीं हुई कि वह उनका रास्ता रोकने आये । परेशानी से भरी यात्रा तय करने के बाद वे मदीना पहुंच गये । वहां उनको इस ग़म के सिवा कोई और ग़म नहीं था कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के दर्शन पाने से वे वंचित हो गये थे । उनका मन हर क्षण इस प्रतीक्षा में लीन रहता था कि आप (सल्ल॰) मदीना कब पहुंचेंगे ?

अंतत: हज़रत उमर (रज़ि॰) की प्रतीक्षा के क्षण समाप्त हुए । वह दिन आ गया जब आप (सल्ल॰) के दर्शन पाकर मदीने की गलियां तथा चौबारे सौ प्राणों के साथ धन्य हो गये । एक बार फिर हज़रत उमर (रज़ि॰) को आप (सल्ल॰) के साथ साये की तरह रहने का शुभ अवसर प्राप्त हो गया । उन्हें फिर कभी आप (सल्ल॰) से विरह का घूंट नहीं पीना पड़ा । फिर दस साल तक वे आप (सल्ल॰) के प्रत्येक इस्लामी कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लेते रहे । इस अवधि में इतिहास ने एक लंबा सफ़र तय कर लिया और इस सफ़र में न जाने कितने पड़ाव आए और कितनी ही क्रांतियां आयीं और इतिहास का हिस्सा बन गयीं । इस पूरे सफ़र में हज़रत उमर (रज़ि॰) का आप (सल्ल॰) से प्रेम दिन-प्रतिदिन प्रगाढ़ होता चला गया । उन्होंने उस सफ़र में अपनी भूमिका निभाई और ख़ूब निभाई । बद्र, उहुद, ख़ंदक़, हुनैन, ख़ैबर आदि हर युद्ध में उन्होंने अपनी वीरता के जौहर दिखाए और साबित कर दिया कि जब किसी को अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल॰) से सच्चा प्रेम हो जाता है तो एक प्राण की कोई क़ीमत नहीं रह जाती, वह जन्नत के बदले ख़रीद ली जाती है ।

इस प्रकार दिन-रात का चक्र चलता रहा यहां तक कि वह दिन भी आ गया जब आप (सल्ल॰) अल्लाह के प्यारे हो गये । ऐसे में पूरा मदीना ग़मों के सैलाब में डूब गया । जो जहां था, वहीं पर आप (सल्ल॰) के देहांत की सूचना पाकर ग़म के मारे सर पकड़ कर बैठ गया । हज़रत उमर (रज़ि॰) का आप (सल्ल॰) से प्रेम उनको इस मोड़ पर ले आया कि उन्होंने इस बात को स्वीकार करने से साफ़ मना कर दिया कि आप (सल्ल॰) का देहांत हो गया है । वे तलवार सोंत कर खड़े हो गये और ऐलान कर दिया कि जो भी कहेगा कि आप (सल्ल॰) का देहांत हो गया है, मैं

उसका सर उड़ा दूंगा ।

आख़िर, हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) ने क़ुरआन की आयतों से साबित किया कि आप (सल्ल॰) का देहांत हो गया है, तो उनकी चेतना जागी और उन्होंने स्वीकारा कि वाक़ई मौत तो सबको आनी है, इससे किसी नबी या रसूल को भी छुटकारा नहीं ।

उसके बाद जब हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) ने आप (सल्ल॰) के उत्तराधिकारी होने का दायित्व अपने सर लिया तो हज़रत उमर (रज़ि॰) उनके परामर्शदायक बने रहे । फिर दो साल तीन महीने दस दिन के बाद जब हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) भी अल्लाह को प्यारे हो गये तो हज़रत उमर (रज़ि॰) को न चाहते हुए भी आप (सल्ल॰) का दूसरा उत्तराधिकारी बनना पड़ा । उन्होंने ऐसी हुकूमत कर दिखायी जैसी न उनसे पहले थी और न उनके बाद वैसी हुकूमत कोई कर पाया । कारण यह था कि उन्होंने अपनी हुकूमत की आधारशीला न्याय एवं इन्साफ़ को बनाया था । आइए ज़रा देर के लिए यहां ठहर कर हम उनके न्याय एवं इन्साफ़ की कुछ मिसालें देख लें :

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) की यह आदत थी कि वे रात भर जागकर रात के अंधेरे में गली-कूचों में घूमा करते थे ताकि अपनी प्रजा के दुख-दर्द का पता लगाकर उसका समाधान करें । ऐसी ही एक रात में जब वे अपनी आदत के अनुसार घूम-घूमकर अपनी प्रजा की पीड़ा मालूम करने का प्रयास कर रहे थे, एक घर से बच्चों के रोने-बिलकने की आवाज़ उनके कानों पर पड़ी । उन्होंने झांक कर देखा तो पाया कि एक औरत चूल्हे पर हांडी रखकर कुछ पका रही है और बच्चे उससे खाना मांग रहे हैं । हज़रत उमर (रज़ि॰) ने उस औरत और बच्चों का हाल-चाल मालूम किया तो औरत ने बताया कि ये बच्चे भूख से बिलक रहे हैं । मैं चूल्हे पर हांडी चढ़ाकर उनको बहला रही हूं ताकि वे सो जाएं । वास्तव में हांडी में पानी के सिवा कुछ नहीं है ।

हज़रत उमर (रज़ि॰) जल्दी से घर आये और एक बोरी आटा लेकर उस औरत के घर आये । रोटी पका कर बच्चों को पेट भर खिलाया-पिलाया और फिर वापस आये ।

दूसरे दिन उस औरत को मालूम हुआ कि वह आदमी जो उसके बच्चों को खिला-पिला गया था, कोई और नहीं, हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) थे ।

एक और रात जब आप (रज़ि॰) मदीने की गलियों में चक्कर लगा रहे थे, एक घर से आवाज़ आयी, एक औरत अपनी बेटी से कह रही थी : बिटिया ! उठ और दूध में पानी मिला दे । हज़रत उमर (रज़ि॰) ने सुना, वह लड़की अपनी मां से कह रही थी : मैं ऐसा कदापि नहीं कर सकती । अम्मी ! क्या आपने सुना नहीं है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर (रज़ि॰) ने दूध में पानी मिलाने से सख़्ती से मना किया है ?

मां ने कहा : अरे बिटिया ! उठ और पानी मिला दे । इस वक़्त अमीरुल मोमिनीन, अपने घर में दुबके होंगे । उन्हें हमारे कर्म का पता थोड़े ही चल पाएगा ?

बेटी ने जवाब दिया : अम्मी ! मुझ से ऐसा नहीं हो सकता कि मैं ज़ाहिर में तो अल्लाह के आदेश का पालन करूं और चुपके से उसकी नाफ़रमानी !

हज़रत उमर (रज़ि॰) उस लड़की के सद्गुण से बहुत प्रभावित हुए । वे उस घर पर चिन्ह लगाकर चले गये और दूसरे दिन अपने बेटे आसिम से उसका विवाह करा दिया । अपने न्याय तथा हक़परस्ती के लिए मशहूर, हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह॰) उसी लड़की की संतति में से थे ।

हज़रत उमर (रज़ि॰) अपनी प्रजा के लिए अत्यंत दयालु तथा कृपालु थे । उन्हें जहां से भी हक़ बात मिलती, उसे लेने में वे ज़रा भी नहीं हिचकते थे, चाहे उस हक़ की ओर इशारा करने वाला कितना ही छोटा आदमी क्यों न हो ।

एक बार जब वे मिम्बर पर ख़ुत्बा देने खड़े हुए और अल्लाह की प्रशंसा करने एवं आप (सल्ल॰) पर दरूद व सलाम भेजने के बाद कहा कि ऐ लोगो ! सुनो और अनुकरण करो ! तो एक आम आदमी ने कहा : ऐ उमर ! जब तक आप यह न बतला दें कि आपके पास दो कपड़े कहां से आ गये, जबकि हममें से प्रत्येक व्यक्ति को ग़नीमत के माल से केवल एक-एक चादर मिली थी, तब तक हम आपकी बात न सुनेंगे और न मानेंगे ।

हज़रत उमर (रज़ि॰) ने स्वयं उत्तर न देकर अपने पुत्र हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) को इसका जवाब देने का आदेश दिया । हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) खड़े हुए और कहा : मैंने अपना हिस्सा पिताजी को उपहारस्वरूप दे दिया था ।

यह सुनकर उस आदमी ने कहा : उमर ! अब कहिए, हम सुनेंगे और अनुकरण भी करेंगे ।

ऐसा आचरण वह शासक पेश नहीं कर सकता जो अपने

आपको सबसे उच्च समझे, अपितु ऐसा सदाचरण वही शासक पेश कर सकता है जिसके दिल में अल्लाह का डर समाया हो और जो अपने आपको सबसे उच्चतम व्यक्ति नहीं बल्कि अपनी प्रजा का सेवक समझे ।

जिस समय मुस्लिम सेना इराक़ में दुश्मनों से जंग कर रही थी उसी, दौरान की घटना है । एक रात इराक़ से मुसलमानों की ख़बर लेकर एक संदशवाहक आया । सबसे पहले वह मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुआ और नमाज़ें पढ़नी शुरू कर दीं । जब वह नमाज़ पढ़ चुका तो हज़रत उमर (रज़ि॰) उसके निकट गये और इराक़ में मुसलमानों की स्थिति के बारे में जानकारी लेने लगे । वह संदेशवाहक आपके सवालों का उत्तर देता रहा । उसे नहीं मालूम था कि मैं जिसके प्रश्नों का उत्तर दे रहा हूं, वही अमीरुल मोमिनीन उमर (रज़ि॰) हैं । जब प्रश्नोत्तर का सिलसिला ख़त्म हुआ तो हज़रत उमर (रज़ि॰) ने उस संदेशवाहक से कहा : तुम–ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन के पास जाकर उन्हें इन बातों की सूचना क्यों नहीं दे देते ?

संदेशवाहक ने कहा : इतनी रात गये मैं उनसे कैसे मिल सकता हूं ?

हज़रत उमर (रज़ि॰) ने कहा : मैं ही तो उमर हूं !

यह सुनकर संदेशवाहक अवाक रह गया कि ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन अभी तक जाग रहे हैं ?

हज़रत उमर (रज़ि॰) ने कहा : यदि मैं रात को सो जाऊं तो ख़ुद बर्बाद हो जाऊंगा और यदि दिन में सो जाऊं तो अपनी उम्मत को बर्बाद कर डालूंगा ।

ऐसे थे हज़रत उमर (रज़ि॰)! क्या मानव इतिहास में गुज़री कोई क़ौम अपना एक भी शासक ऐसा दिखा सकती है ? कदापि नहीं ।

एक दिन मिस्र से एक क़िब्ती आदमी हज़रत उमर (रज़ि॰) के पास मिस्र के गवर्नर हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि॰) की शिकायत लेकर आया । हुआ यह था कि मिस्र में आयोजित एक घुड़दौड़ प्रतियोगिता में उसने हिस्सा लिया था । उस प्रतियोगिता में हज़रत अम्र (रज़ि॰) के लड़के ने भी हिस्सा लिया था । नतीजा उसी क़िब्ती के हक़ में रहा था जिसकी वजह से हज़रत अम्र (रज़ि॰) के बेटे ने उसे यह कहते हुए एक तमाचा जड़ दिया कि तुम मुझसे आगे कैसे बढ़ गये, जबकि मैं इज़्ज़तदारों की संतान हूं । इससे उस क़िब्ती का दिल बहुत दुखा । उसने लोगों के सामने यह बात बयान की तो किसी ने उसे सलाह दी कि तुम मदीना जाकर हज़रत उमर (रज़ि॰) को इस घटना की सूचना दो । वे अवश्य ही तुम्हारे साथ न्याय करेंगे ।

उसने मदीना आकर अपनी विपत्ता हज़रत उमर (रज़ि॰) को सुनायी । हज़रत उमर (रज़ि॰) ने तुरंत हज़रत अम्र (रज़ि॰) को पत्र लिखा कि इस पत्र को पाते ही आप अपने बेटे को साथ लिए मदीना हाज़िर हो जाएं ।

जब वे हज के मौसम में अपने बेटे के साथ मदीना आए तो हज़रत उमर (रज़ि॰) ने उनसे मुलाक़ात की और कहा : अम्र ! आपने जनसाधारण को कैसे ग़ुलाम बना लिया जबकि उन्हें उनकी मांओं ने आज़ाद जना है ?

फिर आपने उस क़िब्ती को अपना दुर्रा देकर कहा : मारो इस इज़्ज़तदार की संतान को ।

जब उसने हज़रत अम्र (रज़ि॰) के बेटे से अपना बदला ले लिया तो आपने हज़रत अम्र (रज़ि॰) को मारने का उसे आदेश दिया लेकिन उसने माफ़ कर दिया ।

वास्तव में, न्याय की ऐसी मिसालों से हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) की जीवनी भरी पड़ी है । हमने यहां पर सिर्फ़ दो-एक मिसालें ही नक़ल करने पर बस किया है । अब सवाल यह पैदा होता है कि हज़रत उमर (रज़ि॰) को इतना महान इन्सान किस चीज़ ने बना दिया था ?

इसका उत्तर यह है कि सिर्फ़ एक चीज़ ने अर्थात अल्लाह के डर और परहेज़गारी ने । एक बार रास्ता चलते आपने एक तिनका उठाया और कहने लगे : ऐ काश ! मैं इस तिनके जैसा होता या मैं पैदा ही न हुआ होता तो अच्छा था । फिर कहने लगे : अगर आकाश से यह आवाज़ आए कि एक आदमी के सिवा दुनिया के सारे लोग स्वर्ग में जाएंगे, तब भी मुझे यही डर लगा रहेगा कि वह अभागा जहन्नमी कहीं मैं ही तो नहीं !!

आख़िर ढेर सारे नेकी तथा सुधार के कार्य करने के बाद हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) को 26 जिलहिज्जा सन 23 हिजरी को फ़ीरोज़ नामी एक पारसी ग़ुलाम ने खंजर मारा, जिससे वे तीन दिनों के बाद 1 मुहर्रम 24 हिजरी (644 ई॰) के दिन शहीद हो गये ।

अल्लाह आपको रसूल (सल्ल॰) की शुभ सूचना के अनुसार स्वर्ग में आला मक़ाम प्रदान करे कि वाक़ई आप एक सच्चे-पक्के मुसलमान होने के साथ-साथ न्यायपसन्द शासक भी थे । आमीन !

# अनाथ लड़कियों की पुकार

# VOICE OF ORPHAN GIRLS

## मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

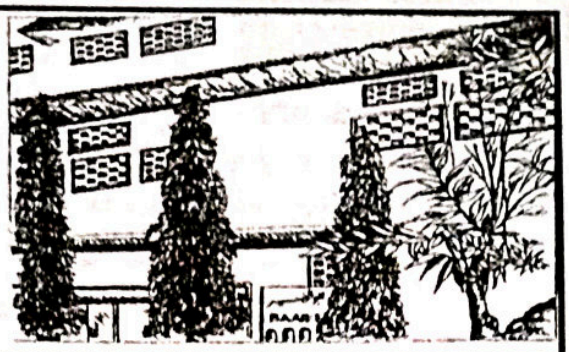

**संक्षिप्त परिचय**

**लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा**

● 32 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I.A., B.A. एवं Library Science ● 9 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई: 11 बैच 103 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 7 बैच 65 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2019 ई॰ तक 97 अनाथ बच्चियों और 66 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 35 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 100 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 18,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,35,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

नोट : इस्लामी माहौल, इस्लामी लिबास और इस्लामी यूनिफार्म के साथ-साथ कम ख़र्च में मेयारी तालीम।

**यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।**

**विदेशी चन्दा देने वाले :** भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

**Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले**

**विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042**

**BANK CODE NO. UBININBBJAM or IFS Code No. UBIN 0530042**

**Union Bank of India (Main Branch, GAYA में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।**

**चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"**

**Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता**

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

**LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले**

CORE BANKING A/c No. : 300402010007752

BANK IFS CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

**Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT** जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

**नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।**

संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां

# राष्ट्रवाद बनाम विश्वबंधुत्व

■ मुशर्रफ़ अली

हमारे देशवासियों के संस्कार में यह शिक्षा बसी है–

अयं निजः परोनेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानान्तु बसुधैव कुटुम्बकम ।।
(मंत्र VI-72, महाउपनिषद/सामवेद)

यह अपना है, यह पराया है, ऐसा मानना संकीर्ण सोच वालों का काम है, उदार हृदय वाले लोग तो पूरी धरती को अपना परिवार और धरती पर बसने वाले सारे मनुष्यों को अपना परिजन मानते हैं ।

धरती ईश्वर का कुनबा है और धरती पर बसने वाला प्रत्येक व्यक्ति उस कुनबे का सदस्य है । ईश्वर ने समस्त मानवजाति को एक ही माता-पिता से पैदा किया है, इसलिए सभी धरतीवासी आपस में भाई-भाई हैं, चाहे वे किसी रंग, वंश, जाति के हों, चाहे वे दुनिया के किसी भाग में रहते हों और चाहे कोई भाषा बोलते हों ।

"लोगो ! अपने पालनहार से डरो, जिसने तुमको एक जान से पैदा किया और उसी जान से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से पुरुष और महिलाएं दुनिया में फैला दिये ।" (कुरआन, 4:1)

रंग, वंश, जातियां और भाषाएं तो ईश्वर ने इसलिए बनायी हैं कि इनके आधार पर एक-दूसरे की पहचान हो सके । ये श्रेष्ठता का आधार तो कदापि नहीं है । ईश्वर की दृष्टि में श्रेष्ठ तो वही है, जो उसका अधिक आज्ञाकारी हो । ईश्वर स्वयं कहता है–

"ऐ लोगो ! निश्चित रूप से हमने तुम सभी को परिवारों और वंशों में पैदा किया ताकि आपस में तुम्हारा परिचय हो, निश्चित रूप से ईश्वर की दृष्टि में तुम लोगों में सबसे श्रेष्ठ केवल वह है जो ईश्वर की आज्ञाओं का अधिक पालन करता है ।" (कुरआन, 49:13)

हमारे देश की परम्परा भी यही रही है–

काले-गोरे का भेद नहीं हर दिल से हमारा नाता है ।
कुछ और न आता हो हमको, हमें प्यार निभाना आता है ।।

यह सही है कि स्वाभाविक रूप से आदमी को अपने जन्म स्थान, अपने गांव, शहर और देश से लगाव होता है । इसी तरह आदमी को वह वंश और जाति प्रिय होती है, जिसमें वह पैदा होता है, वह भाषा उसे प्रिय होती है जिसे वह मां की गोद में सीखता है । ये सारे प्रेम और भावनात्मक संबंध स्वाभाविक हैं, अतः महत्वपूर्ण और मूल्यवान हैं । इसी लगाव के आधार पर आदमी अपने देश की सेवा करता है और बलिदान के लिए तैयार रहता है । यह एक तर्कसंगत और न्यायोचित बात है । इसी भावना को देश प्रेम कहते हैं।

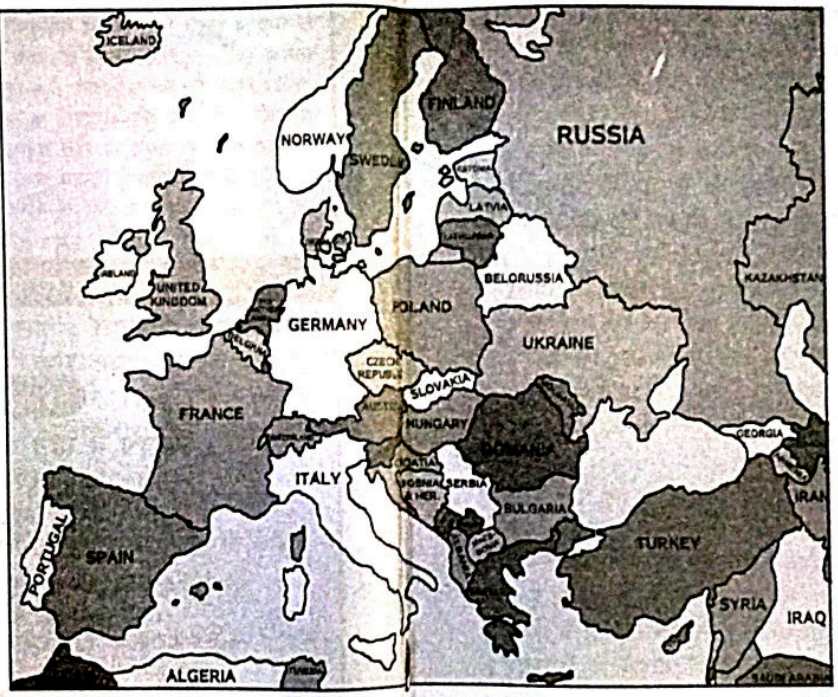


बात तब बिगड़ जाती है जब हम अपने देश से प्रेम के साथ दूसरे देश से दुश्मनी को जोड़ देते हैं, बल्कि दूसरे देश से दुश्मनी के बिना हमारा देश- प्रेम अपूर्ण रहता है । फिर धीरे-धीरे ऐसा होता है कि अपने देश से प्रेम, उसकी सेवा और उसके लिए बलिदान की भावनाएं तो पीछे रह जाती हैं और दूसरे देश से घृणा, दुश्मनी और प्रतिशोध की भावनाएं प्रबल होती चली जाती हैं । ये भावनाएं हर तरह के नैतिक बंधनों से मुक्त, पूर्णतः स्वच्छंद होती हैं और इसे नाम दिया जाता है राष्ट्रवाद (Nationalism) का ।

राष्ट्रवाद (Nationalism) से आशय अपने परिवार, वंश, जाति, समुदाय या देश को सर्वश्रेष्ठ समझना और हर हाल में इनका समर्थन करना और पक्ष लेना है । राष्ट्रवाद के ध्वजावाहकों का सिद्धांत है 'मेरा राष्ट्र ग़लत हो तब भी सही है'। यह सिद्धांत मनुष्य को पूर्वाग्रह और वैमनस्य में इतना आक्रोशित कर देता है कि वह सत्य और असत्य में अन्तर नहीं कर पाता । हालांकि ईश्वर ने मनुष्य को चेतावनी देते हुए कहा है कि–

"किसी समुदाय की दुश्मनी तुम्हें इतना आक्रोशित न कर दे कि तुम इन्साफ़ से फिर जाओ ।" (कुरआन, 5:8)

जब आदमी सच और झूठ में भेद करने में सक्षम नहीं रहता तो वह कुछ भी कर सकता है और अपने किये को उचित ठहरा सकता है । हालांकि किसी भी आधार पर वैमनस्य, पक्षपात और अन्याय को उचित नहीं ठहराया जा सकता । इस भावना के कारण अशांति और हिंसा फैलती है, हत्या होती है और युद्ध होते हैं ।

एक स्थायी सिद्धांत के रूप में राष्ट्रवाद, जिसका प्रचार हाल की सदियों में पश्चिमी दुनिया ने एक विशिष्ट उद्देश्य के तहत व्यवस्थित रूप में किया है, विश्व बंधुत्व के रास्ते की सबसे बड़ी रुकावट है । यह मनुष्य को मनुष्य से नफ़रत करना सिखाता है, आपस में लड़ाता है और मनुष्य और मनुष्य के बीच दीवार खड़ी करता है ।

राष्ट्रवाद पड़ोसी देशों के साथ प्रतिस्पर्धा और संघर्ष से पैदा हुआ है, इसलिए इसमें ये पांच तत्व मुख्य रूप से पाये जाते हैं–

**गौरव :** अपने राष्ट्र पर गर्व की भावना उसकी परंपराओं और विशेषताओं से प्रेम को भक्ति की सीमा तक ले जाती है और वह अपने राष्ट्र की विशेषताओं में अतिशयोक्ति से काम लेने लगता है । यानी अन्य सभी राष्ट्रों की तुलना में मनुष्य अपने राष्ट्र को श्रेष्ठ समझता है और फिर हर तरह के वास्तविक और काल्पनिक गौरव उसके लिए विशिष्ट कर लेता है ।

**पक्षपात :** मनुष्य चाहे सत्य पर हो या असत्य पर मगर राष्ट्रवाद उसे अपने राष्ट्र का पक्ष लेने पर उभारता है । राष्ट्रीय सम्मान की भावना उसे हर हाल में अपनी जाति का समर्थन करने और उसका साथ देने को प्रेरित करती है । राष्ट्रवादी सत्य और न्याय के सवाल को अनदेखा करके केवल अपने राष्ट्र का पक्ष लेता है ।

**राष्ट्रीय सुरक्षा :** राष्ट्रीय सुरक्षा की भावना राष्ट्र के वास्तविक और काल्पनिक हितों की रक्षा के लिए राष्ट्रों को ऐसे उपाय अपनाने को तैयार करती है जो प्रतिरक्षा से शुरू होकर दूसरे देशों पर आक्रमण तक पहुंच जाते हैं ।

**दुश्मन की आवश्यकता :** चूंकि राष्ट्रवाद में अपने राष्ट्र से प्रेम के साथ-साथ दूसरे राष्ट्र से दुश्मनी का भी बड़ा महत्व है । बल्कि राष्ट्रवाद का प्रदर्शन दुश्मन राष्ट्र के अस्तित्व के बिना संभव ही नहीं है । इसलिए राष्ट्रवाद से प्रेरित देश जनता में राष्ट्रवाद की भावना को बनाए रखने और विकसित करने के लिए अनिवार्य रूप से किसी दुश्मन का हौआ खड़ा करते हैं, चाहे वह दुश्मन काल्पनिक ही क्यों न हो ।

**शक्तिशाली बनने का जुनून :** राष्ट्रवाद से प्रेरित साम्राज्यवाद दूसरों के संसाधन और ख़र्च पर अपनी समृद्धि बढ़ाने पर उभारता है । राष्ट्रवादी पिछड़े देशों में अपनी संस्कृति के प्रसार, उन पर हावी होने और उनकी प्राकृतिक संपदा से लाभ उठाने को अपना अधिकार समझते हैं ।

राष्ट्रवाद की उत्पत्ति प्राचीन अंधकार युग में यूनान में हुई । महान दार्शनिक अरस्तु भी इस संकीर्ण विचारधारा का समर्थक था । वह अपनी किताब 'राजनीति' में लिखता है–"प्रकृति ने असभ्य जातियों को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे गुलाम बनकर रहें । असभ्य जातियों के ऐसे

क्षेत्रों को गुलाम बनाने के लिए युद्ध किया जाए ।'' उस समय के यूनान में असभ्य का अर्थ था ''ग़ैर-यूनानी''। यूरोप में ही राष्ट्रवाद का विकास हुआ । हालांकि एक लंबे समय तक ईसाई धर्म की शक्ति ने इसे रोके रखा । एक ईश्वरीय धर्म होने के कारण ईसाइयत अपने बिगाड़ के बावजूद राष्ट्रवाद और नस्लवाद की जगह एक व्यापक मानवीय दृष्टिकोण रखती है ।

लेकिन ईसाइयत के नाम पर किये गये उत्पीड़न और साम्राज्यवादी अत्याचार के विरुद्ध 16वीं सदी में यूरोप में सुधारवादी आंदोलन (प्रोटेस्टेंट) का जन्म हुआ । उस आंदोलन का दुष्प्रभाव यह हुआ कि जो ईसाई समुदाय एक सूत्र में बंधे हुए थे वे बिखर गये और उनके अलग-अलग स्वायत्त राष्ट्रीय राज्य अस्तित्व में आने लगे । हरेक राज्य के हित दूसरे पड़ोसी राज्यों से अलग होते गये ।

इस तरह राष्ट्रीयता की एक नयी अवधारणा का जन्म हुआ जिसने वैमनस्य की प्राचीन अंधकारयुगीन कल्पना की जगह ले ली। फिर विभिन्न समुदायों/जातियों में विवाद, संघर्ष और प्रतिस्पर्धा शुरू हुई । लड़ाइयां हुईं, अधिकारों का हनन हुआ और हिंसा के निकृष्ट प्रदर्शन किये गये । यहां तक कि राष्ट्रीयता की भावना धीरे-धीरे राष्ट्रवाद में तब्दील हो गयी ।

हिटलर ने राष्ट्रवाद की इस भावना को सबसे अधिक बढ़ावा दिया । जर्मनी की सत्ता प्राप्त करने के बाद उसने जर्मन लोगों के मन-मस्तिष्क में यह बात बिठा दी कि दूसरे देशों पर आक्रमण करना जर्मनी का अधिकार है । 1939 ई॰ में हिटलर द्वारा पोलैंड पर हमला ही दूसरे विश्वयुद्ध के आरंभ का कारण बना, जिसकी विभीषिका से हम परिचित हैं ।

हिटलर की आक्रामक नीतियों के कारण उसके कार्यकाल में जर्मन सैनिकों ने एक करोड़ 10 लाख निर्दोष इन्सानों की हत्या की, जिनमें कथित रूप से 60 लाख यहूदी भी शामिल हैं और उन्हीं नीतियों के कारण जर्मनी का विभाजन भी हुआ ।

एकता का आधार मानवता है, सारे मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं । राष्ट्रवाद की वह अवधारणा जिसका आधार रंग, जाति, भाषा या मातृभूमि हो स्वाभाविक नहीं है, क्योंकि ये सीमाएं एक व्यापक मानव समुदाय की स्थापना में बाधा बनती हैं । राष्ट्रवाद, एक राजनीतिक व्यवस्था के रूप में, पूरी तरह अमानवीय मूल्यों पर आधारित है । इसके आधार पर एक मानव समूह दूसरे मानव समूह से कट कर रह जाता है । इससे अकारण विवाद पनपते हैं, जो कई बार क़ीमती मानव जानों की बर्बादी और विनाश का कारण बनते हैं। वांशिक, जातीय, भौगोलिक, भाषाई आदि आधारों पर मानवता का विभाजन ऐसा घातक हथियार है जिसके द्वारा मनुष्य को मनुष्य की गुलामी पर विवश किया जाता है ।

भौगोलिक सीमाओं के आधार पर मानवता का विभाजन करके भी 'लघुचेतसाम्' (संकीर्ण सोच वाले) की तृष्णा की तृप्ति नहीं होती । ऐसे लोग एक राष्ट्र के भीतर भी धर्म, जाति, लिंग, भाषा आदि आधारों पर मानवता को विभाजित करने और आपस में भिड़ाने के कुत्सित प्रयास में जुट जाते हैं । इससे शांति और विकास तो भंग होता ही है, देश में अराजकता और गृह-युद्ध की स्थिति पैदा हो जाती है और देश की अखंडता ख़तरे में पड़ जाती है ।

हमारा देश एक ऐसा देश है, जहां सदियों से विभिन्न समुदायों के लोग मिल-जुलकर रहते आये हैं । लम्बे समय तक यहां छोटे-छोटे आज़ाद राज्य रहे हैं, जिनमें विस्तारवादी प्रवृति के राजा एक दूसरे पर आक्रमण भी करते थे, लेकिन आम जनता के बीच नफ़रत और दुश्मनी को कभी हवा नहीं दी गयी ।

दुर्भाग्य से हमारे देश में भी पिछले कुछ दशकों से राष्ट्रवाद की संकीर्ण सोच को बढ़ावा दिंया जा रहा है । जब से सत्तालोलुप राजनीतिज्ञों ने जनता को बांटने और लड़ाने की नीति अपनायी है, देश का वातावरण विषाक्त हो गया है । कुछ प्रतीकों को देशभक्ति का पर्याय बताकर ऊपर से थोपा जाता है और इसकी आड़ में एक वर्ग को दूसरे के ख़िलाफ़ खड़ा किया जाता है । हमें इन चालों को समझने की ज़रूरत है ।

इतिहास से भी हमें सीख लेनी चाहिए । राष्ट्रवाद की संकीर्ण सोच से निकल कर विश्वबंधुत्व का प्रयास करना ही सच्चा देश-प्रेम है । इस्लाम इसी विश्वबंधुत्व और देश प्रेम की शिक्षा देता है और इसी का ध्वजावाहक है ।

# भारतीय राष्ट्रवाद की अन्तर्निहित विशेषताएं

■ शरद सिंगी

भारत ही नहीं पूरे विश्व में इस समय एक बहस छिड़ी हुई है कि देशभक्ति या राष्ट्रवाद में श्रेष्ठ कौन है ? इनकी तुलना करने से पहले दोनों में भेद भी समझना होगा । क्या ये शब्द एक ही विचार के दो पहलू हैं, दो अर्थ हैं अथवा सर्वथा भिन्न-भिन्न हैं ? इस लेखक के मतानुसार, ये शब्द विपरीत अर्थ वाले तो नहीं हैं किन्तु पर्यायवाची भी नहीं हैं । जहां एक की सीमा समाप्त होती है वहीं से दूसरे की आरंभ होती है । रोचक बात यह है कि जब आप इस मार्ग पर यात्रा कर रहे होते हैं तो रेल यात्रा की तरह आपको पता ही नहीं चलता कि आपने एक प्रदेश की सीमा को कब पार किया और दूसरे प्रदेश में कब प्रवेश कर गये ।

देशभक्ति और राष्ट्रवाद पर चर्चा आरंभ करने से पहले हमें देश और राष्ट्र की धारणा को भी समझना होगा । देश, किसी भूभाग की भौगोलिक और राजनैतिक सीमाओं से परिभाषित होता है जो सम्प्रभू हो भी सकता है नहीं भी । उदाहरण के लिए कभी उत्तर प्रदेश या राजस्थान से आये किसी श्रमिक से आपने सुना होगा कि मैं देश जा रहा हूं अर्थात वह अपने गांव जा रहा है । उसके गांव की सीमाएं भी उसका देश है । किन्तु हम यहां उसी देश की चर्चा करेंगे जो सम्प्रभु है और एक संविधान से बंधा है । देशभक्ति या देश-प्रेम का अर्थ है अपने देश या क्षेत्र की सीमाओं से प्रेम । अब यदि राष्ट्र की बात करें तो राष्ट्र परिभाषित होता है उस क्षेत्र में रहने वाले लोगों से, उसकी सांस्कृतिक विरासत और साझा इतिहास से ।

यदि आप देश की सीमाओं और उसके संविधान से प्रेम करते हैं तो देशभक्त हैं । यदि आप अपनी पहचान, अपनी सांस्कृतिक धरोहर और अपने इतिहास से प्रेम करते हैं तो आप राष्ट्रवादी हैं । अब प्रश्न यह है कि देशभक्ति महान है या राष्ट्रवाद ? देशभक्त और राष्ट्रवादी में श्रेष्ठतर कौन ? देशभक्त सुधारवादी होता है जो अपने देश और उसकी फिलॉसोफी (दर्शन) के साथ तो है ही किन्तु उनमें सुधार के लिए भी तत्पर होता है । विडम्बना यह है कि जब देशभक्ति अंधभक्ति पर पहुंचती है तब राष्ट्रवाद का आरंभ होता है ।

राष्ट्रवादी अपने देश की हर अच्छाई या बुराई के साथ खड़ा होता है । सुधारने या सुधारने की गुंजाइश नहीं होती । तर्क से भावना बड़ी होती है । हम श्रेष्ठ, हमारा समाज सर्वोत्तम और हमारा देश सर्वश्रेष्ठ । उनके अनुसार, अन्य देश और समाज हीन या निचले दर्जे के । जब यही राष्ट्रवाद चरम या अंधराष्ट्रवाद पर पहुंचता है तो फिर राष्ट्र युद्ध के लिए तत्पर हो जाता है । विश्व ऐसे अनेक उदाहरणों से भरा पड़ा है जहां एक देश या समाज ने अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए अन्य जातियों के लोगों को मौत के घाट उतार दिया या अन्य देशों पर आक्रमण कर उनके लोगों को गुलाम बना लिया ।

यह भी कम उल्लेखनीय नहीं है कि राष्ट्रवाद युद्ध और


0291-2658786

HOTEL Crown Plaza

A/C & Non A/C Air Cooled Rooms & Dormitory

Opp. Minerva Centre,
Railway Station Road, Jodhpur-342001 (Raj.)
Cell : 9784856007, 9414110345

½ km from the railway station

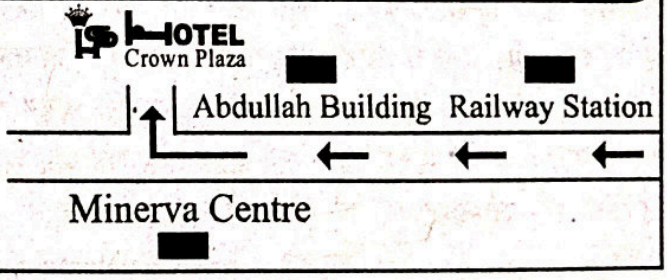

आपदा के समय पूरे उन्माद पर होता है । द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इसका सर्वाधिक विस्तार हुआ था । शांति के समय यह भी शांत रहता है । किन्तु यह भी सच है कि यदि राष्ट्रवाद न हो तो राष्ट्र का अस्तित्व ही बेमानी लगने लगता है । बिना अस्मिता के मात्र सीमा रेखाओं के सहारे देश की पहचान क्या संभव है भला ? राष्ट्रवाद ही अपने देश की आन और बान पर कुरबानी देने का जज्बा पैदा करता है । राष्ट्रवादी अपनी सीमाओं के साथ अपने राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा करता है । देशभक्त मात्र अपनी सीमाओं की । देशभक्त अपने लोगों से प्यार करता है तो राष्ट्रवादी अपने लोगों से प्यार के साथ उन लोगों से नफ़रत भी करता है जो राष्ट्र विरोधी हैं । देशभक्त सामान्य तौर पर प्रतिक्रियावादी नहीं होता किन्तु राष्ट्रवादी उग्र प्रतिक्रिया के लिए तत्पर होता है ।

अब यदि भारत के परिप्रेक्ष्य में बात करें तो परिभाषा के अनुसार, हम देश की श्रेणी में आते हैं, राष्ट्र की श्रेणी में नहीं, क्योंकि हमारे यहां असंख्य बोलियां, जातियां और संस्कृतियां हैं । यदि हम तार्किक दृष्टि से देखें तो भारत के रहने वाले लोग समान संस्कृति से नहीं बंधे हैं किन्तु जहां तक भारतवासियों का प्रश्न है उनके अनुसार, इतनी सारी भाषाएं, जातियां, संस्कृतियां सब मिलकर ही भारतीयता का स्वरूप बनती हैं । अत: हम तो एक पूर्ण राष्ट्र हैं, परिभाषा चाहे कुछ और बोले । ऐसा विचार केवल भारतवासी ही रख सकते हैं, क्योंकि भारतीय संस्कृति अंधवादी अथवा उग्रवादी नहीं है अपितु समावेशी है ।

कुछ नफ़रतपूर्ण विचारधाराएं छूत की बीमारी की तरह भारत के बाहर से आयीं किन्तु भारत की संस्कृति की विशालता उस सागर के समान है जो गन्दी से गन्दी नदी को भी अपने में आत्मसात कर लेता है और अपना चरित्र नहीं खोता । भारतीय संस्कृति की विशालता को चुनौती देना असंभव है । कुछ जलजले आते हैं, चले जाते हैं जिनसे भारतीयता और अधिक निखरकर बाहर आती है । सामान्य तौर पर हमारा चरित्र देशभक्त का है किन्तु ज़रूरत पड़ने पर हम राष्ट्रवादी बनने से भी पीछे नहीं हटते और यह भी ध्यान रहे कि हमें अंधराष्ट्रवाद का मार्ग भी नहीं पकड़ना है ।

साभार : hindi.webdunia.com

# वोट देने ज़रूर जइयो !

बेटा अपनी मैया से बोला–
मां । अबके अपने इलाक़े से खड़े हुए हैं जितने भी उम्मीदवार,
मुझे किसी भी प्रत्याशी पे तनिक भी नहीं एतिबार ।
समझ नहीं आ रहा किसे दूं वोट ?
सबकी नीयत में खोट ही खोट,
जीतने पर अपनी ही तिजोरियों में भरते रहेंगे नोट,
भूले से भी पार नहीं कराएंगे चुनावी वादों की बोट ।
कुर्सी की ख़ातिर झूठी घोषणाओं का जाल बिछाये जा रहे,
भोली-भाली जनता को फंसाने की चाल चले जा रहे ।
मैं उन झांसेबाज़ों के झांसों में नहीं आने वाला,
अबकी बार किसी को भी वोट नहीं देने वाला ।
आख़िर प्रपंचियों के पक्ष में मत का क्यूं करूं प्रयोग ?
देकर वोट, बढ़वाऊं भ्रष्टाचार का रोग ?
जीतने वाले तो करते रहेंगे सत्ता का भोग,
हाथ मलते रह जाएंगे वोट देने वाले लोग ।
इस बीच मैया बोली–
अपने मत का प्रयोग करना हर मतदाता का है अधिकार,
गर सही नहीं लगता हो कोई भी उम्मीदवार,
'नोटा' यानी 'इनमें से कोई नहीं' वाला बटन दबाओ,
ग़लत प्रत्याशियों को इस तरह सबक़ सिखाओ ।
अस्वस्थ होते हुए भी मैं वोट देने जाऊंगी,
अपने मताधिकार का उपयोग करके गर्व महसूस करूंगी ।
वोट न देने में नहीं कोई समझदारी,
यह तो अपने देश से सरासर गद्दारी ।
अत: तू भी वोट देने ज़रूरू जइयो,
फिर चाहे 'नोटा' का ही बटन दबाकर अइयो ।

**महेन्द्र अग्रवाल**
ए०जे०सी० बोस रोड, कोलकाता

# इस्लाम और विश्व बंधुत्व

■ संपादन प्रभाग

बंधुत्व या भाईचारा के अनेक रूप हैं । जैसे परिवार और रिश्ते के आधार पर भाईचारा, क्षेत्र और राष्ट्र के आधार पर भाईचारा, जाति या क़बीले के आधार पर भाईचारा और आस्था के आधार पर भाईचारा । लेकिन भाईचारे के ये सारे रूप सीमित हैं, जबकि इस्लाम एक ऐसे भाईचारे की कल्पना प्रस्तुत करता है, जो किसी सीमा में बंधा न हो, बल्कि असीम हो । इस्लाम में भाईचारे की कल्पना बहुत स्पष्ट है ।

कुरआन में अल्लाह कहता है, "लोगो हमने तुमको एक पुरुष और एक महिला से पैदा किया और फिर तुम्हारी जातियां और बिरादरी बना दी ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो । वास्तव में अल्लाह के निकट तुममें सबसे अधिक श्रेष्ठ वह है जो तुम्हारे बीच सबसे ज़्यादा अल्लाह का डर रखने वाला हो । निश्चित रूप से अल्लाह सब कुछ जानने वाला और सारी सूचना रखने वाला है ।

(कुरआन, 49:13)

पूरी दुनिया में जितने भी मनुष्य सब आदम की संतान हैं और अल्लाह कहता है कि तुमको क़बीलों और बिरादरियों में इसलिए विभाजित किया गया है कि तुम एक-दूसरे को पहचान सको, अर्थात यह विभाजन केवल परिचय के लिए है, इसलिए नहीं है कि इसको आधार बनाकर एक-दूसरे से लड़ाई-झगड़ा शुरू कर दिया जाए ।

कुरआन में आगे कहा गया है–और उसकी निशानियों में से आसमानों और ज़मीनों की रचना है और तुम्हारी भाषाओं और तुम्हारे रंगों का अलग-अलग होना है । निश्चित रूप से इसमें बहुत से संकेत हैं समझदार लोगों के लिए ।

(कुरआन, 30:22)

यहां कुरआन हमें बताता है कि रंग, वंश और भाषाओं का अलग-अलग होना अल्लाह ही की ओर से है । यह काले, गोरे, लाल, पीले लोग सब अल्लाह की निशानियां हैं, अतः इस समय विविधता को आधार बनाकर नफ़रत करने का कोई औचित्य नहीं है । धरती पर बोली जाने वाली हर भाषा सुंदर है । अगर आपने कोई भाषा पहले नहीं सुनी हो या आप यह भाषा नहीं जानते तो संभव है कि आपको वह भाषा हास्यास्पद लगे । लेकिन जो लोग उस भाषा को बोलने वाले हैं उनके लिए शायद वह दुनिया की सबसे प्यारी भाषा हो । इसीलिए अल्लाह कहता है कि भाषा और रंग और नस्ल अलग-अलग होना मात्र परिचय के लिए है ।

इस्लाम में महिला और पुरुष को सम्मिलित रूप से समान दर्जा दिया गया है । लेकिन किसी जगह महिला का दर्जा अधिक है तो कहीं पुरुष का । इस्लाम का भाईचारे से आशय यह नहीं है कि केवल मर्द ही आपस में बराबर हैं । इस भाईचारे में महिलाएं भी शामिल हैं । विश्व बंधुत्व से यही आशय है कि, भाषा, रंग नस्ल और आस्था के अलावा लिंग के आधार पर भी मनुष्य के बीच कोई भेद नहीं रखना चाहिए, सब समान हैं ।

हां महिला और पुरुष में कुछ आंशिक अंतर तो अवश्य मौजूद है । जैसे मान लीजिए कि किसी घर में डाकू घुस आते हैं । तो कभी भी घर का पुरुष अपनी पत्नी, बहन या मां से डाकुओं का मुक़ाबला करने को नहीं कहता है, बल्कि यह काम वह खुद करता है और साथ में महिलाओं की सुरक्षा की भी कोशिश करता है, चाहे वह महिलाओं के अधिकार और महिला स्वतंत्रता कितना बड़ा भी झंडावाहक क्यों न हो और महिलाओं को पुरुष के समान समझता हो । क्योंकि अल्लाह ने महिलाओं को शारीरिक रूप से कमज़ोर बनाया है और पुरुषों को शारीरिक रूप से मज़बूत ।

कुरआन में अल्लाह कहता है, "पुरुष महिलाओं के संरक्षक हैं ।" (4:43) क्योंकि पुरुष को शारीरिक शक्ति अधिक दी गयी है अतः उसे एक दर्जा श्रेष्ठ रखा गया है उसका पदेन दायित्व है कि महिलाओं की सुरक्षा करें ।

इस्लाम में ईश्वर की धारणा भी सार्वभौम है । वहां यह परिकल्पना नहीं है कि अल्लाह किसी विशेष जाति या किसी विशेष क्षेत्र का अल्लाह है । कुरआन की पहली सूरह

में कहा गया है, "प्रशंसा अल्लाह के लिए जो समस्त जगत का पालनहार है ।" (1:1) और इसी तरह कुरआन की आख़िरी सूरह में बताया गया है, "कहो मैं पनाह मांगता हूं सभी मनुष्यों के परवरदिगार की ।" (2:114)

इस्लाम इस दुनिया में वास्तविक विश्वबंधुत्व स्थापित करने के लिए एक पूर्ण व्यवस्था भी देता है । इस्लाम एक ऐसा नैतिक क़ानून देता है जिसकी मदद से पूरी दुनिया में विश्वबंधुत्व पर आधारित समाज की स्थापना संभव हो । कुरआन में आदेश है, "जिस किसी ने, सिवाय इस स्थिति के कि ख़ून का बदला लेना हो या धरती में लूट-मार मचाने वालों को दंड देना हो, किसी व्यक्ति की हत्या कर डाली तो मानो, उसने समस्त मानवजाति की हत्या कर डाली, और जिस किसी ने किसी का जीवन बचा लिया तो मानो कि उसने समस्त मनुष्यों को जीवन प्रदान कर दिया ।"

यहां कुरआन कहता है कि अगर कोई किसी व्यक्ति की हत्या करता है, तो इससे अलग की वह मनुष्य मुसलमान था या ग़ैर-मुस्लिम, तो यह काम ऐसा ही है जैसे उसने पूरे मानव समाज की हत्या कर दी, यहां न केवल धर्म और आस्था को आधार नहीं बनाया गया है, बल्कि रंग, वंश और लिंग के आधार पर भी कोई भेद नहीं किया गया है । दूसरी ओर अगर कोई किसी मनुष्य की जान बचाता है तो यह ऐसा ही है जैसे उसने पूरी मानवजाति की जान बचा ली । यहां भी इसको विशेष नहीं किया गया है कि बचाया जाने वाला मनुष्य किस धर्म या किस आस्था से संबंध रखता है ।

इस्लाम इस उद्देश्य के लिए कई नैतिक क़ानून बनाता है ताकि विश्वबंधुत्व दुनिया के हर हिस्से में जारी हो सके । कुरआन मजीद हर समृद्ध व्यक्ति को ज़कात अदा करने का आदेश देता है । यानी हर वर्ष अपनी बचत का 2.5 प्रतिशत माल अभावग्रस्त लोगों में विभाजित करने का आदेश देता है । आज अगर पूरी दुनिया में हर व्यक्ति ज़कात अदा करना शुरू कर दे तो दुनिया से ग़रीबी का पूरी तरह से सफ़ाया हो सकता है । यहां तक कि दुनिया में कोई व्यक्ति भी भूख से नहीं मरेगा । कुरआन हमें अपने पड़ोसियों के काम आने का भी आदेश देता है ।

"भला क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जो न्याय (पुरस्कार एवं दंड) को झुठलाता है ? वही है जो अनाथ को धक्के देता है और निर्धन को खाना खिलाने पर (लोगों को) नहीं उभारता । अत: विनाश है ऐसे नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ से अनभिज्ञ (अनजान) हैं । जो पाखंड (दिखावा) करते हैं । और मांगने पर साधारण बरतने की चीज़ भी नहीं देते ।"

भला क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जो न्याय (पुरस्कार एवं दंड) को झुठलाता है ?

(1) वही है जो अनाथ को धक्के देता है ।

(2) और निर्धन को खाना खिलाने पर (लोगों को) नहीं उभारता ।

(3) अत: विनाश है ऐसे नमाज़ियों के लिए ।

(4) जो अपनी नमाज़ से अनभिज्ञ (अनजान) हैं ।

(5) जो पाखंड (दिखावा) करते हैं ।

(6) और मांगने पर साधारण बरतने की चीज़ भी नहीं देते ।

इसी तरह एक हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा वह व्यक्ति ईश्वर के प्रति समर्पित नहीं हो सकता जिसका पड़ोसी भूखा हो और वह ख़ुद पेट भर कर सो जाए । ऐसा व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों पर अमल नहीं कर रहा है ।

इसी तरह कुरआन अपव्यय को भी रोकता है । आदेश है कि, रिश्तेदार को उसका अधिकार दो और मिस्कीन और मुसाफ़िर को उसका अधिकार दो, अपव्यय न करो अपव्यय करने वाले शैतान के भाई हैं और शैतान अपने परवरदिगार का नाशुक्रा है । अगर आप अपव्यय का प्रदर्शन करते हैं तो निश्चित रूप से आप भाईचारे के वातावरण को ख़राब करने का कारण बन रहे हैं । क्योंकि इसके परिणामस्वरूप नफ़रत की भावनाओं को बढ़ावा मिलता है और लोग एक-दूसरे से ईर्ष्या करने लगते हैं ।

अत: किसी को भी दूसरे का अधिकार नहीं छीनना चाहिए, बल्कि एक-दूसरे का सहयोग करना चाहिए । अपने पड़ोसियों के काम आना चाहिए यह वे नैतिक सिद्धांत हैं, जिनका उल्लेख कुरआन में मौजूद है ।

इसी तरह कुरआन रिश्वत लेने से भी सख़्ती के साथ मना करता है ।

और (देखो !) ऐसा न करो कि आपस में एक-दूसरे

का धन अनुचित ढंग से खाओ, और न ऐसा करो कि धन-सम्पत्ति को अधिकारियों (अर्थात् शासकों के दिलों) तक पहुंचने का (अर्थात् उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करने का) माध्यम बनाओ, ताकि दूसरों के धन का कोई भाग अन्यायपूर्ण ढंग से प्राप्त कर लो और तुम जानते हो कि वस्तुस्थिति क्या है। (2:188)

अर्थात् इस बात से रोका गया है कि रिश्वत के माध्यम से दूसरों का माल हथियाने की कोशिश की जाए। इस्लाम इस बात की कभी अनुमति नहीं देता कि कोई भी व्यक्ति अपने भाई की संपत्ति या माल को हथियाने की कोशिश करें। अल्लाह कहता है।

इसी तरह कुरआन हमें सभी नशीले पदार्थों, जुए और इस तरह की रईस फुल एपीके विभिन्न प्रदर्शन से रोक रहा है, ऐ ईमान वालो ! निस्संदेह मदिरा (शराब), जुआ, काल्पनिक उपास्यों के प्रतीक और पांसे शैतानी कामों की गन्दगी है तो उनसे बचो, ताकि तुम सफल हो। शैतान तो यही चाहता है कि मदिरा और जुए के द्वारा तुम्हारे बीच शत्रुता और द्वेष उत्पन्न कर दे और तुम्हें अल्लाह की याद से और प्रार्थना (नमाज़) से रोक दे। (क्योंकि इन दोनों चीज़ों में संलिप्त होने का अनिवार्य परिणाम यही है)। फिर (बतलाओ ! ऐसी बुराइयों से भी) तुम रुकने वाले हो या नहीं ? (2:90-91)

क्योंकि यह सब शैतानी काम हैं, हम जानते हैं कि समाज में मौजूद बहुत-सी बुराइयों का मौलिक कारण नशा का प्रयोग है और परिणामस्वरूप यह मिसाली विश्वबंधुत्व के वातावरण को बिगाड़ता है, जो एक वास्तविक इस्लामी और कल्याणकारी समाज के उद्देश्य का उद्देश्य है। आंकड़े बताते हैं कि अमेरिका में औसतन रोज़ाना लगभग 1900 यौन अपराध की घटनाएं होती हैं। अधिकतर घटनाओं में अपराधी या ज़्यादती का शिकार होने वाले नशे की हालत में होते हैं।

इसी तरह आंकड़े हमें यह भी बताते हैं कि अमेरिका में बलात्कार की घटनाओं की दर 8 प्रतिशत है। अर्थात् हर 12वां या 13वां व्यक्ति किसी महिला के साथ बलात्कार में लिप्त होता है। बलात्कार की यह सारी घटनाएं नशे की हालत में ही होती हैं। एड्स जैसी बीमारी के दुनिया में इस तेज़ी से फैलने के कारणों में से एक कारण नशा भी है। इसीलिए कुरआन जुए और नशीले पदार्थों को शैतानी काम बताता है।

सफलता के लिए इन शैतानी कामों से बचना आवश्यक है। अगर आप वास्तव में इन बुरे कामों से बचते रहे तो दुनिया भर में वास्तविक भाईचारे का माहौल स्थापित करने में मदद मिलेगी।

कुरआन के अनुसार किसी की पीठ पीछे बुराई करना या परनिंदा करना बहुत बड़ा गुनाह है। यह काम ऐसा ही है जैसे अपने मरे हुए भाई का मांस खाना। कुरआन और हदीसों में दिये गये यह सारे नैतिक नियम वास्तविक विश्व बंधुत्व को विकसित करने वाले और स्थायित्व देने वाले हैं।

इस्लाम की विशेषता यह है कि यह विश्वबंधुत्व का मात्र उल्लेख ही नहीं करता, बल्कि बंधुत्व के अमली प्रदर्शन के लिए भी कार्रवाइयों पर ज़ोर देता है। मुसलमान इस भाईचारे का व्यावहारिक प्रदर्शन दिन में 5 बार जमाअत से नमाज़ की अदायगी के दौरान करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाईचारे का एक बड़ा प्रदर्शन 'हज' है। दुनिया भर से लगभग 80 लाख व्यक्ति इस दायित्व को पूरा करने के लिए सऊदी अरब के शहर मक्का पहुंचते हैं। ये लोग दुनिया के कोने-कोने से वहां आते हैं। इस अवसर पर सभी पुरुष एक जैसी बिना सिली सफ़ेद चादर में लिपटे होते हैं। इस अवसर पर आप अपने आसपास खड़े लोगों के बारे में यह नहीं बता सकते कि उनकी क्या हैसियत है। वे राजा हों या रंक उनका वेष एक जैसा होता है। आप राजा हों या रंक, ग़रीब हो या अमीर, गोरे हो या काले पूर्व के रहने वाले हों या पश्चिम के, आप एक ही परिधान में होंगे। अंतर्राष्ट्रीय भाईचारे की इससे बड़ी मिसाल और क्या हो सकती है।

अल्लाह के रसूल ने आख़िरी खुतबे में घोषणा कर दी थी कि सभी मनुष्य एक ही पालनहार की रचना हैं, अत: किसी अरबी को किसी ग़ैर-अरबी पर या किसी ग़ैर-अरबी को किसी अरबी पर कोई श्रेष्ठता प्राप्त नहीं, कोई गोरा काले से या कोई काला गोरे से श्रेष्ठ नहीं, श्रेष्ठता का आधार केवल ईशभय है।

# इस्लामी ज़िन्दगी

| | | |
|---|---|---|
| ❖इस्लाम-दर्शन | डॉ०गणेशदत्त सारस्वत, पी०एच०डी० | 45.00 |
| ❖इस्लाम धर्म | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 60.00 |
| ❖इस्लाम भविष्य की आशा | सय्यद .कुत्ब | 24.00 |
| ❖इस्लाम में औरत का स्थान और मुस्लिम पर्सनल लॉ | प्रो० उमर हयात ख़ाँ ग़ौरी | 72.00 |
| ❖इस्लाम में उदारता | मतीन तारिक़ बाग़पती | 40.00 |
| ❖इस्लाम में पति पत्नी के अधिकार | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 55.00 |
| ❖इस्लाम में मानव-अधिकार | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 18.00 |
| ❖इस्लाम संदेहों के घेरे में | मुहम्मद .कुत्ब | 130.00 |
| ❖इस्लामी अर्थव्यवस्था के सिद्धान्त और उद्देश्य | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 9.00 |
| ❖इस्लामी जिहाद की वास्तविकता | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 20.00 |
| ❖इस्लामी ज़िन्दगी | नसरुल्लाह ख़ां अज़ीज़ | 60.00 |
| ❖इस्लामी तालीमात | मौलाना सुलैमान क़ासमी | 35.00 |
| ❖इस्लामी शरीअत | माइल ख़ैराबादी | 90.00 |
| ❖इस्लामी संदेश और मुसलमानों की ज़िम्मेदारी | | 10.00 |
| ❖उदारता का सही अर्थ | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 8.00 |
| ❖उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा(रज़ि) | माइल ख़ैराबादी | 65.00 |
| ❖ऊंच-नीच, छूत-छात | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 8.00 |
| ❖एक इंसान दो किरदार | माइल ख़ैराबादी | 12.00 |
| ❖एक ईश्वर की धारणा | मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां | 40.00 |
| ❖क़ुरआन सबके लिए | मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां | 28.00 |
| ❖क्रान्ति-दूत हज़रत मुहम्मद सल्ल० | नईम सिद्दीक़ी | 90.00 |
| ❖एकेश्वरवाद की वास्तविकता | मौलाना अमीन अहसन इस्लाही | 35.00 |

MMI PUBLISHERS
• D-307,Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave Jamia Nagar New Delhi-110025
• Phone:26981652,26984347 Mob: 7290092401
• E-mail:info@mmipublishers.net,mmipublishers@gmail.com
• Website:www.mmipublishers.net

# भाईचारे एवं मानवता का प्रतीक पर्व–ईदुल फ़ित्र

■ प्रवीण कुमार सहगल

भारत जहां सांप्रदायिक सौहार्द एवं आपसी सद्भावना के कारण दुनिया में एक अलग पहचान बनाए हुए है वहीं यहां के पर्व-त्योहारों की समृद्ध परम्परा, धर्म-समन्वय एवं एकता भी उसकी स्वतंत्र पहचान का बड़ा कारण है । इन त्योहारों में इस देश की सांस्कृतिक विविधता झलकती है । यहां बहुत-सी क़ौमें एवं जातियां अपने-अपने पर्व-त्योहारों तथा रीति-रिवाजों के साथ आगे बढ़ी हैं । प्रत्येक पर्व-त्योहार के पीछे परंपरागत लोकमान्यताएं एवं कल्याणकारी संदेश निहित है । इन पर्व-त्योहारों की श्रृंखला में मुसलमानों के प्रमुख त्योहार ईद का विशेष महत्व है । हिन्दुओं में जो स्थान "दीपावली" का है, ईसाइयों में "क्रिसमस" का है, वही स्थान मुसलमानों में "ईद" का है । यह त्योहार रमज़ान के महीने की त्याग, तपस्या और व्रत के उपरांत आता है । यह प्रेम और भाईचारे की भावना उत्पन्न करने वाला पर्व है । इस दिन चारों ओर खुशी और मुस्कान छाई रहती है । हर कोई ईद मनाकर स्वयं को सौभाग्यशाली समझता है ।



इस्लामी कैलेंडर के नौवें महीने को रमज़ान का महीना कहते हैं और इस महीने में अल्लाह के सभी बंदे रोज़े रखते हैं । इसके बाद दसवें महीने की "शव्वाल रात" पहली चांद रात में ईदुल-फ़ित्र मनाया जाता है । इस रात चांद को देखने के बाद ही ईदुल-फ़ित्र का ऐलान किया जाता है । ईदुल-फ़ित्र ऐसा त्योहार है जो सभी ओर इन्सानियत की बात करता है, सबको बराबर समझने और प्रेम करने की बात की राह दिखाता है । कहते हैं कि रमज़ान के इस महीने में जो नेकी करेगा और रोज़ा के दौरान अपने दिल को साफ़-पाक रखता है, नफ़रत, द्वेष एवं भेदभाव नहीं रखता, मन और कर्म को पवित्र रखता है, अल्लाह उसे खुशियां ज़रूर देता है । रमज़ान महीने में रोज़े रखना हर मुसलमान के लिए एक फ़र्ज़ कहा गया है । भूखा-प्यासा रहने के कारण इन्सान में किसी भी प्रकार के लालच से दूर रहने और सही रास्ते पर चलने की हिम्मत मिलती है ।

ईद का आगमन मनुष्य के जीवन को आनंद और उल्लास से आप्लावित कर देता है । ईद लोगों में बेपनाह खुशियां बांटती है और आपसी मुहब्बत का पैग़ाम देती है । ईद का मतलब है एक ऐसी खुशी जो बार-बार हमारे जीवन में आती है और उसे बांटकर बहुगुणित किया जाता है । ग़रीब से ग़रीब आदमी भी ईद को पूरे उत्साह से मनाता है । दुख और पीड़ा पीछे छूट जाती है । अमीर और ग़रीब का अंतर मिट चुका है । खुदा के दरबार में सब एक हैं, अल्लाह की रहमत हर एक पर बरसती है । अमीर खुले हाथों दान देते हैं । यह कुरआन का निर्देश है कि ईद के दिन कोई दुखी न रहे । यदि पड़ोसी दुख में है तो उसकी मदद करो । यदि कोई

असहाय है तो उसकी सहायता करो । यही धर्म है, यही मानवता है, यही ईद मनाने का उद्देश्य है । यह खुशी वह मानसिक स्थिति है जो किसी संयोग शृंगार के फलस्वरूप मनुष्य को प्राप्त होती है । ईद हमारे देश ही नहीं दुनिया का एक विशिष्ट धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक त्योहार है । आध्यात्म का अर्थ है मनुष्य का खुदा से संबंधित होना है या स्वयं का स्वयं के साथ संबंधित होना । इसलिए ईद मानव का खुदा से एवं स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार का पर्व है । यह त्योहार परोपकार एवं परमार्थ की प्रेरणा का विलक्षण अवसर भी है, खुदा तभी प्रसन्न होता है जब उसके ज़रूरतमन्द बन्दों की ख़िदमत की जाए, सेवा एवं सहयोग के उपक्रम किये जाएं । अस्ल में ईद बुराइयों के विरुद्ध उठा एक प्रयत्न है, इसी से ज़िन्दगी जीने का नया अंदाज़ मिलता है, औरों के दुख-दर्द को बांटा जाता है, बिखरती मानवीय संवेदनाओं को जोड़ा जाता है । आनंद और उल्लास के इस सबसे मुखर त्योहार का उद्देश्य मानव को मानव से जोड़ना है ।

इस्लाम का बुनियादी उद्देश्य व्यक्तित्व का निर्माण है और ईद का त्योहार इसी के लिए बना है । धार्मिकता के साथ नैतिकता और इन्सानियत की शिक्षा देने का यह विशिष्ट अवसर है । इसके लिए एक महीने का प्रशिक्षण कोर्स रखा गया है जिसका नाम रमज़ान है । इस प्रशिक्षण काल में हर व्यक्ति अपने जीवन में उन्नत मूल्यों की स्थापना का प्रयत्न करता है । इस्लाम के अनुयायी इस कोर्स के बाद साल के बाक़ी 11 महीनों में इसी अनुशासन का पालन कर ईश्वर के बताए रास्ते पर चलते हुए अपनी ज़िन्दगी सार्थक एवं सफल बनाते हैं ।

रोज़ा वास्तव में अपने गुनाहों से मुक्त होने, उससे तौबा करने, उससे डरने और मन व हृदय को शांति एवं पवित्रता देने वाला है । रोज़ा रखने से उसके अंदर संयम पैदा होता है, पवित्रता का अवतरण होता है और मनोकामनाओं पर क़ाबू पाने की शक्ति पैदा होती है । एक तरह से त्याग एवं संयममय जीवन की राह पर चलने की प्रेरणा प्राप्त होती है । इस लिहाज़ से यह रहमतों और बरकतों का महीना है । हदीस शरीफ़ में लिखा है कि आम दिनों के मुक़ाबले इस महीने 70 गुना पुण्य बढ़ा दिया जाता है और यदि कोई व्यक्ति दिल में नेक काम का इरादा करे और किसी कारण वह काम को न कर सके तब भी उसके नाम पुण्य लिख दिया जाता है । बुराई का मामला इससे अलग है जब तक वह व्यक्ति बुराई न करे उस समय तक उसके नाम गुनाह नहीं लिखा जाता ।

ईद जीवन का दर्शन देती है । स्वस्थ और उन्नत जीवन-शैली का संपादन करती है । ईद से हमारे आसपास अच्छे लोगों और अच्छे विचारों का परिवेश बनता है । यहां की उत्सवप्रियता में भी जड़ता नहीं, विवेक जागता है । हर इन्सान के भीतर जीने का सही अर्थ विकसित होता है । ईद और उनसे जुड़ा दर्शन संसार की बीहड़ वीथियों के बीच मंज़िल के सही रास्ते तलाशने की दृष्टि देता है । जीवन की दिशा और दर्शन का मूल्यांकन इसी से जुड़ता है ।

ईद के बाद प्रत्येक मुसलमान दूसरे व्यक्ति से गले मिलता है भले वह उसे न जानता हो । इस प्रकार ऊंच-नीच, जात-पात के सभी भेद और रंग या नस्ल की सभी सीमाएं इस अवसर पर मिट जाती है और परस्पर मिलने वाले उस समय केवल इन्सान ही होते हैं । बराबर होकर खुशी देने और महसूस करने का यही संदेश है जो ईद के माध्यम से समस्त संसार को दिया जाता है । इसीलिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने यह उपदेश दिया है कि जो लोग साधन संपन्न होते हैं उनका कर्तव्य है कि वे निर्धनों और कमज़ोरों की यथासंभव सहायता करें । उनकी खुशी निरर्थक है यदि उनके सामने कोई कमज़ोर निर्धन है जिसके पास खाने-पहनने को कुछ न हो ।

इसलिए ईद की खुशियों में उन बेबस, लाचार, मजबूर लोगों को भी सम्मिलित करना ज़रूरी है जो इसमें शामिल होने की हैसियत नहीं रखते । इसीलिए इस्लाम में हर मुसलमान पर सदक़ा-ए-फ़ित्र वाजिब है । इसका मतलब है कि अपनी बुनियादी ज़रूरतों के लिए रखकर बाक़ी साढ़े बावन तोले चांदी या उतने ही रुपये या वह भी न हों तो पौने दो किलो अनाज ही या फिर अपनी चल पूंजी का ढ़ाई प्रतिशत हिस्सा दान के रूप में ज़रूरतमंदों में बांट कर ईद की खुशियों में उनके बराबर के भागीदार बनें । एक संतुलित एवं स्वस्थ समाज निर्माण यह एक आदर्श प्रकल्प है । इसलिए ईद के दिन प्रत्येक मुसलमान ईद की नमाज़ पढ़ने के लिए ईदगाहों में एकत्रित होते हैं, आपस में गले मिलते हैं, अपने मित्रों-संबंधियों से मिलने जाते हैं, दान करते हैं और अपने पूर्वजों की मज़ारों पर जाकर प्रार्थना करते हैं । ईद का संदेश समतामूलक मानव समाज की रचना है । यही कारण है कि हाशिये पर खड़े दरिद्र और दीन-दुखी, ग़रीब-लाचार लोगों के दुख-दर्द को समझें और अपनी कोशिशों से उनके चेहरों पर मुस्कान लाएं, तभी हमें ईद की वास्तविक खुशियां मिलेंगी ।

# अपराधियों की शरणस्थली बने विश्वविद्यालय

● सुफ़ियान अहमद

कभी पूरब के ऑक्सफोर्ड के नाम से विख्यात इलाहाबाद विश्व- विद्यालय का गौरवशाली इतिहास रहा है । देश भर में इसकी प्रतिष्ठा है । स्कॉलर व न्यायविद देने वाले इलाहाबाद विश्वविद्यालय पर अब अपराधियों ने क़ब्ज़ा कर लिया है । विश्वविद्यालय प्रशासन मूकदर्शक बना हुआ है । इस विश्वविद्यालय का परिसर और छात्रवास, अपराधियों के लिए पनाहगाह बन गये हैं, जिसे उन्होंने अपने ग़लत कामों के लिए 'खेल का मैदान' समझ लिया है ।

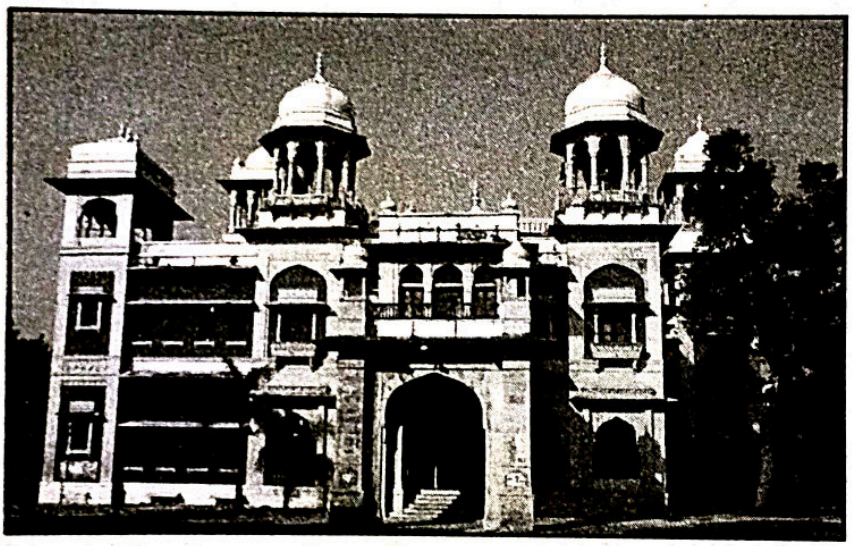

उक्त तल्ख़ टिप्पणी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पी॰सी॰बी॰ छात्रवास में छात्र रोहित शुक्ला की गोली मारकर हत्या और शहर में बढ़ रही आपराधिक घटनाओं का स्वत: संज्ञान लेते हुए इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने की है । उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष नवम्बर में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र नेता अच्युतानंद शुक्ला उर्फ़ सुमित की हत्या कर दी गयी थी ।

उच्च न्यायालय की इस सख़्त टिप्पणी से विश्वविद्यालय परिसर में व्याप्त अनाचार और सड़ांध को बख़ूबी समझा जा सकता है । कुछ ऐसा ही हाल एशिया के सबसे बड़े विश्वविद्यालय बनारस हिंदू विश्वविद्यालय का भी है । 2017 में यहां के परिसर में छात्रों और पुलिस का आमना-सामना हुआ । यह प्रकरण कइयों के लिए झकझोर देने जैसा था ।

वहीं चंद माह पहले भी एक छात्र की सरेआम बिरला छात्रावास के चौराहे पर गोली मारकर हत्या कर दी गयी थी । पिछले कुछ समय से एक नया चलन विश्व-विद्यालय परिसरों में नज़र आ रहा है विश्वविद्यालय और कॉलेज परिसरों में बढ़ती पुलिस की मौजूदगी और छात्र राजनीति में इनका बढ़ता हस्तक्षेप ।

परिसर का वातावरण अब किसी पुलिस छावनी से कम नहीं लगता । क्या अचानक छात्र आबादी में आपराधिक प्रवृत्तियां बढ़ गयी हैं ? या चिंता का विषय कुछ और है ? हमें इस बात को संजीदगी से समझने की ज़रूरत है कि वाक़ई परिसर में अराजक तत्व बढ़े हैं, या बात कुछ और ही है ।

इसे समझना इसलिए भी ज़रूरी है कि एक वर्ग यह चाहता है कि परिसरों से उठने वाली हर आवाज़ का गला घोंट दिया जाए । कहीं कोई आवाज़ न उठाए, आपसी संवाद और संबंध न क़ायम करें, कोई हक़ की बात न करे, सब शांत रहें । या फिर हक़ीक़त में विश्व-विद्यालय परिसर गुंडों और अपराधियों की शरण स्थली बन गये हैं ?

हाल के वर्षों की ज़्यादातर घटनाएं इसी ओर इशारा करती हैं कि छात्रों की आड़ में गुंडों और अराजक तत्वों ने कैम्पस को अपनी गिरफ़्त में जकड़ लिया है । छात्रों के राजनीतिकरण ने ग़रीब और मेहनतकश छात्रों की उम्मीदों को शातिर तरीक़े से रौंदा है । अब छात्र हित की बात करने वाला तो सीन से ही ग़ायब हो गया है । उसे छात्र नेताओं की 'नयी पौध' ने ही निष्क्रिय कर दिया है ।

(शेष पृष्ठ 47 पर)

पाठकों और विज्ञापनदाताओं से निवेदन

चेक और ड्राफ्ट केवल
'कान्ति' के नाम से बनवाएं,
'मासिक कान्ति' के नाम से नहीं ।

–मैनेजर

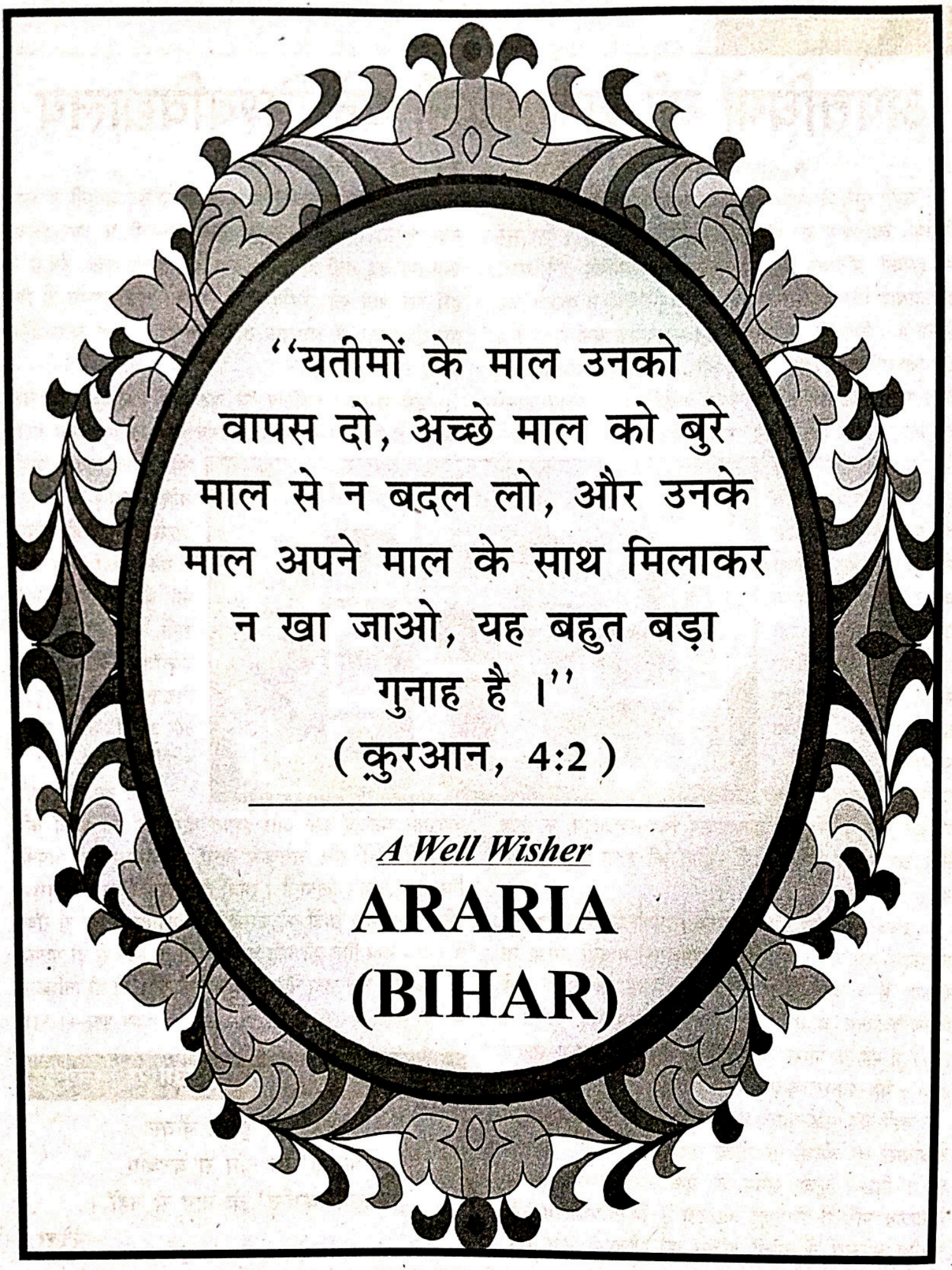
''यतीमों के माल उनको
वापस दो, अच्छे माल को बुरे
माल से न बदल लो, और उनके
माल अपने माल के साथ मिलाकर
न खा जाओ, यह बहुत बड़ा
गुनाह है ।''
( क़ुरआन, 4:2 )
A Well Wisher
ARARIA
(BIHAR)

# दर्द

रामदेई का आदमी मरा था तब सुनीला चार साल का था । पति के मरते ही सगे-शहोदरों ने रामदेई को दुत्कार दिया । रामदेई ग़रीब तो थी ही, सो उसके पास रहने का ठीक-सा घर भी नहीं था । और अब-अब तो उसके सामने सुनीला को बड़ा करने, पढ़ाने से लेकर उसका जीवन सुधारने तक की ज़िम्मेदारी मुंह बाए खड़ी थी । लोगों के घरों में झाड़ू-पोंछा करके, गोबर बीन-बीनकर, कंडे पाथ-पाथकर, खुद भूखी-प्यासी रहकर रामदेई ने सुनीला को पढ़ाया-लिखाया और बड़ा आदमी बनाया । आज सुनीला, आई॰सी॰ए॰आर॰ में प्रिंसिपल साईंटिस्ट है ।

सुनीला ने शादी भी अपने साथ कार्यरत, दूसरी जाति की सुघढ़, धनवान और बुद्धिमान लड़की से कर ली । बहू कमाने वाली मिली तो सुनीला उसके चरणों का दास बन, मां को भूलने लगा था या यह कह लें कि भुलाने की कोशिश करने लगा और स्थिति तो यहां तक आयी कि वक़्त-बेवक़्त वह रामदेई का अपमान भी करने लगा था । ऐसा करने के लिए बहू ने नहीं कहा था उससे लेकिन सुनीला को लगता था कि ऐसा करने से उसकी पत्नी खुश हो जाएगी । और हद तो तब हो गयी जब एक दिन उसने अपने घर में हो रही पार्टी में अपनी मां अर्थात रामदेई को नौकरानी बता दिया था अपने सभी साथियों को ।

रामदेई स्वाभिमानी थी । अपमान सहन न कर सकी और बेटे का घर छोड़कर चली गयी । दो-एक दिन तो निकला फिर भूख-प्यास हावी होने लगी । शरीर में अब पहले जैसी शक्ति नहीं रह गयी थी । ठोकरें खाते-खाते एक दिन एक रईसज़ादी की गाड़ी के सामने आ गयी और मरते-मरते बची ।

रईसज़ादी सहृदय थी । पति से अलग रहती थी । रामदेई की व्यथा सुन, पिघल गयी । "मैं घर में अकेली रहती हूं । नौकर-चाकर हैं लेकिन मैं ख़ाना खुद बनाती हूं । मुझे किसी पर विश्वास नहीं । जाति से ब्राह्मण हूं । सरस्वती चतुर्वेदी । मैं चाहती हूं । तुम मेरे लिए खाना बनाओ । खुद खाओ और मुझे भी खिलाओ ।" फिर न जाने क्या हुआ कि सरस्वती चतुर्वेदी की अन्दर की ब्राह्मणी जाग गयी, "अच्छा, एक बात बताओ...तुम हो तो ब्राह्मणी ही...और जाति तो नहीं हो ?

थोड़ी देर तो रामदेई ने सोचा फिर पेट में लगी आग धधकने लगी और झूठ बोल दिया था, "न बिटिया...हम तो पंडितानी हैं ।"

विश्वास कर लिया था सरस्वती चतुर्वेदी ने और ले गयी थी अपने घर । दो ही दिन में रामदेई ठीक हो गयी थी । साफ़-सुथरे नये कपड़े पहनकर सच में रामदेई ब्राह्मणी ही लगने लगी थी और वैसे भी क्या फ़र्क़ होता है ब्राह्मणी और दूसरी जाति वालों में । काटकर देखो तो रक्त तो सभी का लाल ही निकलेगा ।

अब रामदेई, सरस्वती चतुर्वेदी के लिए खाना बनाती और उनका ध्यान रखती । रामदेई अब उनकी नौकरानी न होकर मां सदृश थी कि...कि...एक दिन सरस्वती चतुर्वेदी का एक मित्र उसके घर आया और यह मित्र कोई और नहीं उसकी अर्थात रामदेई की पुत्रबहू का भाई था । उसने रामदेई को पहचान लिया था, "अरे अम्मा, आप ।"

"अरे तुम कैसे जानते हो इन्हें । ये मेरी मां सदृश हैं । सरस्वती चतुर्वेदी बोली थी ।

"अरे ये तो मेरी बहन की सासू है ।"

"लेकिन तुम्हारी बहन ने तो इन्टरकास्ट मैरिज की है...और जहां तक तुमने मुझे बताया था कि वह कोई निम्न जाति का है ।" सरस्वती चतुर्वेदी बिलबिला रही थी ।

"जी मेरी बहन ने लव मैरिज की थी और मेरा बहनोई...एक दलित है ।" पूरी बात बोल भी नहीं पाया था, सरस्वती चतुर्वेदी का मित्र कि, चीख़ी थी वह, "ए बुढ़िया सच बता तू किस जाति की है ।"

"बेटा"

"मुझे बेटा मत कह । अपनी असलियत बता । नहीं तो पुलिस के हवाले कर दूंगी ।"

क्या बोलती रामदेई । बिलखने लगी थी । और सरस्वती चतुर्वेदी के मित्र की ओर मुंह करके बोली थी, "जो साब कह रहे हैं वही सच है ।"

बस बादल फट गया था । अब रामदेई, सरस्वती चतुर्वेदी के लिए मां समान नहीं थी । अब वह...अछूत... हाशिये पर फेंकी गयी निकृष्ट जाति ।

सरस्वती चतुर्वेदी ने मोबाइल उठाया और कुछ नम्बर

डायल कर दिये थे । पुलिस आ गयी थी ।

"इस बुढ़िया ने मेरे साथ धोखा किया । इस पर धोखाधड़ी का केस बनता है । इसने मेरा धर्म भ्रष्ट किया है । जाति छिपाकर...रामदेई का अपराध जगज़ाहिर था ।

जब पुलिस रामदेई को लेकर चलने को हुई तो बोल पड़ी थी रामदेई पुलिस वाले से, "बेटा एक बात सुनो ।"

"बोलो अम्मा ।" पुलिस वाला, पुलिस वाला होने के साथ-साथ इन्सान भी था ।

"मैंने तो अपने पेट की ख़ातिर इस पंडिताइन बिटिया से झूठ बोला ताकि ये मुझे रोटी दे देगी और घर में जगह भी दे देगी तो बुढ़ापा काट लूंगी । मेरा पेट मेरी मजबूरी थी...लेकिन इनकी कौन-सी मजबूरी है जो मुझे तुम्हारे हवाले कर रही हैं । क्या जाति पेट से बड़ी होती है बेटा ।" रामदेई के इस प्रश्न पर पुलिस वाला सन्न था । वह न तो उसे थाने ले जा पा रहा था और न ही छोड़ पा रहा था ।

# वेदना

मेरे परिवार में केवल चार व्यक्ति ही थे–मैं, मेरे पति, बेटा और छोटी-सी बेटी । बेटी सिर्फ़ बोल ही पाती थी । मैं और मेरे पति भट्ठे पर काम करते थे । दोनों बच्चे वहीं उसी भट्ठे पर जहां ईंटें पाथी जाती थीं, खेलते रहते थे । मेरे पति निकम्मे नहीं थे । ख़ूब मेहनत करते लेकिन क्या करें पिछले कई दिनों से ठेकेदार ने पैसे ही नहीं दिये थे जिसकी वजह से घर में कई दिनों से रोटी भी नहीं बनायी गयी थी । पति रोज़ काम करते–ईंटें पाथते लेकिन उनका शरीर उनका साथ नहीं दे रहा था । तभी...तभी एक दिन ईंट पकाने के लिए उसमें कोयला डाल रहे थे कि न जाने कैसे उनका पैर भट्ठे में चला गया और पैर ही क्यों देखते-देखते वे तो पूरे ही भट्ठे में समा गये थे । मेरी आंखों के सामने मेरा सब कुछ...सब कुछ...।

उनकी मृत्यु पर वही ठेकेदार जिसने पिछले दिनों से पैसे नहीं दिये थे पैसे देने आ गया था । जान पहचान वाले लोग बहुत सारा खाना ले आये थे । भूख से बिलबिलाते बच्चों ने उस दिन ख़ूब खाना खाया था । मेरी बेटी ये सब देखती रही थी ।

पति की मृत्यु के पश्चात मैं अकेली पड़ गयी थी और साथ ही साथ मेरा बेटा भी बीमार रहने लगा था । मैं जो भी कमाती बेटे के इलाज में लगा देती थी । धीरे-धीरे घर की चीज़ें भी बिकने लगी थीं । बेटा ठीक ही नहीं हो रहा था । अब घर में कुछ भी नहीं बचा था पिछले तीन दिनों से किसी ने कुछ नहीं खाया था ।

और तभी

मैं अपने बीमार बेटे को गोद में लिए बैठी थी कि मेरी छोटी-सी बेटी मेरे कंधों को झकझोड़ते हुए बोली थी । 'अम्मा...अम्मा एक बात बताओ ।'

'क्या बेटा ।'

'अम्मा...अम्मा, भैया कब मरेगा ।' बेटी बोली थी । मैं उसके मुंह की ओर अपना मुंह फाड़े ताकती रही थी कि वह आगे बोली थी', अम्मा मैं इसलिए कह रही हूं अम्मा...अम्मा सुनो तो...जब भैया मरेगा तभी तो लोग हमारे घर आएंगे...और हमें ख़ूब सारा खाना देंगे फिर हम खाना खाएंगे ।' इतना कहकर बेटी चुप हो गयी थी और मैं...मैं असहाय-सी अपनी बेटी को देखे चली जा रही थी और मेरी आंखों से झरते आंसू मेरे बेटे के माथे को भिगो रहे थे । ● **डॉ॰ पूरन सिंह**

# वीटो

वीटो अर्थात निषेधाधिकार
अवरोध करना रोकना ।
इसका प्रावधान जिस उद्देश्य से
किया गया था उसे भूल गये हैं शायद !
आज इस प्रावधान की आड़ में
बहुत कुछ अनचाहा धड़ल्ले से
खुलेआम किया जा रहा है !
अपने निहित पोलिटिकल स्वार्थों
की पूर्ति का बहुत बड़ा साधन
बन गया है यह प्रावधान !
और नहीं है कोई इलाज इसका !
मजबूर हो जाते हैं विश्व के अन्य
बड़े-बड़े राष्ट्र इस वीटी नामक
अमोघ शस्त्र के आगे !
एक तमाशा है जो हो रहा है
और जैसे लाचार होकर तमाशाई
बना है संसार का जनमानस !
और यह अट्ठारहवीं सदी नहीं है
यह है इक्कीसवीं सदी का परिदृश्य !

● **ओमप्रकाश बजाज**

# काग़ज़ का टुकड़ा

■ प्रवीण कुमार सहगल

शीतल और अनुराग को आज कोर्ट से तलाक़ के काग़ज़ मिल गये थे । दोनों साथ ही कोर्ट से बाहर निकले । दोनों के परिजन साथ ही थे और उनके चेहरों पर ख़ुशी और सुकून साफ़ झलक रहे थे । तीन साल की लंबी लड़ाई के बाद आज फ़ैसला हो पाया था । आठ साल हो गये थे शादी को, मगर साथ में पांच साल ही रह पाए थे । तीन साल तो तलाक़ की क़ानूनी कार्यवाही में ही लग गये थे ।

शीतल के हाथ में दहेज के सामान की लिस्ट थी जो अभी अनुराग के घर से लेना था और अनुराग के हाथ में गहनों की लिस्ट थी जो उसे शीतल से लेने थे । कोर्ट ने अनुराग को यह भी आदेश दिया था कि वह दस लाख रुपये की राशि एक महीने के अंदर शीतल के खाते में जमा कराएगा । शीतल और अनुराग का एकलौता बेटा जो अभी चार साल का है, कोर्ट का फ़ैसले के अनुसार बालिग़ होने तक वह शीतल के पास ही रहेगा । अनुराग महीने में केवल एक बार ही उससे मिल सकता है । शीतल और उसकी मां अनुराग के साथ एक ही गाड़ी में बैठकर उसके घर पहुंचे । दहेज में दिये गये सामान की निशानदेही शीतल को करनी थी, इसलिए तीन साल के बाद ससुराल जा रही थी, आख़िरी बार । अनुराग घर में अकेला ही रहता था, उसके माता-पिता और भाई आज भी गांव में रहते हैं ।

घर में प्रवेश करते ही पुरानी यादें ताज़ा हो गयी । एक-एक चीज़ में उसकी जान बसी थी । बहुत ही मेहनत से सजाया था इसको शीतल ने अपने हाथों से । सब कुछ उसकी आंखों के सामने बना था । एक-एक ईंट से धीरे-धीरे बनते घरोंदे को पूरा होते देखा था उसने । अनुराग ने भी बड़ी शिद्दत से इस घर को बनाने में उसका साथ दिया था ।

अनुराग थका-हारा-सा सोफे पर पसर गया । बोला, "ले लो, जो कुछ भी चाहिए, मैं तुम्हे नहीं रोकूंगा ।"

शीतल ने ग़ौर से अनुराग को देखा । तीन साल में कितना बदल गया है । शरीर पहले से आधा रह गया है, बालों में सफ़ेदी आ गयी है । तीन साल में चेहरे की रौनक़ ही चली गयी ।

वह स्टोर रूम की तरफ़ बढ़ी जहां उसका दहेज का सामान पड़ा था । ज़्यादातर सामान ओल्ड फ़ैशन का था इसलिए कबाड़ की तरह स्टोर रूम में डाल दिया था । मिला भी कितना था उसको दहेज । प्रेम विवाह जो था । घर वाले तो मजबूरी में साथ हुए थे ।

प्रेम विवाह था, तभी नज़र लग गयी किसी की, क्योंकि प्रेमी जोड़ी को हर कोई टूटता देखना चाहता है । बस एक बार पीकर बहक गया था अनुराग और हाथ उठा बैठा था उस पर । वह भी गुस्से में मायके चली गयी थी । फिर चला था लगाने-सिखाने का दौर । इधर अनुराग के भाई-भाभी और उधर शीतल की मां । न शीतल लौटी और न ही अनुराग उसे लाने ससुराल गया । नतीजा यह हुआ की नौबत कोर्ट तक जा पहुंची और तलाक़ हो गया ।

शीतल की मां बोली, "कहां है सामान तेरा ? इधर तो दिखायी नहीं देता । बेच दिया होगा इस शराबी ने ।

"चुप रहो मां" शीतल को जाने क्यों अनुराग को उसके मुंह पर शराबी कहना अच्छा नहीं लगा ।

फिर स्टोर रूम में पड़े सामान को एक-एक कर लिस्ट से मिलाया गया । दूसरे कमरों से भी लिस्ट का सामान उठा लिया गया ।

शीतल ने सिर्फ़ अपना सामान लिया, अनुराग के सामान को छुआ भी नहीं । फिर शीतल ने गहनों से भरा बैग अनुराग को पकड़ा दिया ।

अनुराग ने बैग वापस शीतल को दे दिया, "रख लो, मुझे नहीं चाहिए, काम आएंगे तेरे मुसीबत में ।"

गहनों की क़ीमत 15 लाख से कम नहीं थी ।

शीतल बोली, "क्यूं, कोर्ट में तो तुम्हारा वकील कितनी बार गहने-गहने चिल्ला रहा था ।

"कोर्ट की बात कोर्ट में ही ख़त्म हो गयी शीतल । वहां तो मुझे भी दुनिया का सबसे बुरा इन्सान और शराबी साबित किया गया है ।"

सामने खड़ी शीतल की मां ने यह सुनकर नाक भौं चढ़ाई । शीतल ने कहा, "नहीं चाहिए, वो दस लाख भी नहीं चाहिए ।"

"क्यों ?"

कहकर अनुराग सोफ़े से खड़ा हो गया ।

"बस यूं ही" शीतल ने मुंह फेर लिया ।

"इतनी बड़ी ज़िन्दगी पड़ी है, कैसे काटोगी ? ले जाओ, काम आएंगे ।"

इतना कहकर अनुराग दूसरे कमरे में चला गया । शायद आंखों में कुछ उमड़ा होगा, जिसे छुपाना भी ज़रूरी था ।

शीतल की मां गाड़ी वाले को फ़ोन करने में व्यस्त थी । शीतल को मौक़ा मिल गया । वह अनुराग के पीछे उस कमरे में चली गयी । वह रो रहा था, जैसे भीतर के सैलाब को दबाने की कोशिश कर रहा हो । शीतल ने उसे कभी रोते हुए नहीं देखा था । आज पहली बार देखा तो न जाने क्यों दिल को कुछ सुकून-सा मिला, मगर ज़्यादा भावुक नहीं हुई ।

सधे अंदाज़ में बोली, "इतनी फिक्र थी तो क्यों दिया तलाक़ ?"

"मैंने नहीं तलाक़ तुमने दिया" अनुराग ने धीरे से कहा ।

"दस्तख़त तो तुमने भी किये थे, माफ़ी नहीं मांग सकते थे ?" शीतल ने जवाब दिया ।

"मौक़ा कब दिया तुम्हारे घर वालों ने । जब भी फ़ोन किया, काट दिया" अनुराग ने अपनी सफ़ाई दी ।

"घर भी आ सकते थे ?" शीतल बोली ।

अनुराग ने सिसकते हुए कहा "हिम्मत नहीं थी शायद ।"

तभी शीतल की मां अंदर आ गयी । शीतल का हाथ पकड़कर बाहर ले गयी और बोली, "अब क्यों मुंह लग रही है इसके । अब तो कोई रिश्ता भी नहीं रहा ।"

शीतल के भीतर भी कुछ टूट रहा था । दिल बैठा जा रहा था । वह सुन्न-सी पड़ती जा रही थी ।

जिस सोफ़े पर बैठी थी उसे ग़ौर से देखने लगी । कैसे-कैसे बचत करके उसने और अनुराग ने वो सोफ़ा ख़रीदा था । पूरे शहर में घूमी तब यह पसन्द आया था ।

फिर उसकी नज़र सामने तुलसी के सूखे पौधे पर गयी । कितनी शिद्दत से देखभाल किया करती थी । उसके साथ तुलसी भी घर छोड़ गयी ।

घबराहट और बढ़ी तो वह फिर से उठकर अन्दर चली गयी ।

मां ने पीछे से पुकारा, मगर उसने अनसुना कर दिया ।

अनुराग बेड पर उल्टे मुंह पड़ा था । एक बार तो उसे दया आयी उस पर । मगर वह जानती थी की सब कुछ ख़त्म हो चुका है, इसलिए उसे भावुक नहीं होना है ।

उसने सरसरी नज़र से कमरे को देखा । अस्त-व्यस्त हो गया है पूरा कमरा । कहीं-कहीं तो मकड़ी के जाले झूल रहे हैं । कितनी नफ़रत थी उसे मकड़ी के जालों से ।

फिर उसकी नज़र चारों ओर लगी उन फ़ोटो पर गयी जिनमें वह अनुराग से लिपट कर मुस्कुरा रही थी । कितने सुनहरे दिन थे वो ।

बाहर गाड़ी आ गयी थी । सामान गाड़ी में डाला जा रहा था । शीतल सुन्न-सी बैठी थी । अनुराग गाड़ी की आवाज़ सुनकर बाहर आ गया और कान पकड़कर शीतल के सामने घुटनों के बल बैठ गया । रुंधे गले से बोला–

"मत जाओ शीतल, माफ़ कर दो मुझे । यह घर आज भी तुम्हारा है ।"

शायद यही वो शब्द थे जिन्हे सुनने के लिए वह तीन साल से तड़प रही थी ।

सब्र के सारे बांध एक साथ टूट गये । शीतल ने कोर्ट के फ़ैसले का काग़ज़ निकाला और फाड़ दिया । और मां कुछ कहती उससे पहले ही लिपट गयी अनुराग से । साथ में दोनों बुरी तरह रोये जा रहे थे । दोनों के गिले शिकवे उनके आंसुओं में बह रहे थे ।

दूर खड़ी शीतल की मां समझ गयी थी की कोर्ट का आदेश दिलों के सामने काग़ज़ के टुकड़े से ज़्यादा कुछ नहीं । काश उनको पहले मिलने दिया होता ।


इदारा दअ्वतुल क़ुरआन

का हिन्दी प्रकाशन

तफ़सीर

शम्स पीरज़ादा (रह॰)

हिन्दी अनुवाद

मुहम्मद नसरुल्लाह

जिल्द-1

(पारा 1 से पारा 10 तक) सूरह फ़ातिहा ता सूरह तौबा ₹350/-

जिल्द-2

(पारा 11 से पारा 20 तक) सूरह यूनुस ता सूरह अनकबूत ₹350/-

जिल्द-3

(पारा 21 से पारा 30 तक) सूरह रूम ता सूरह नास ₹480/-

- मौजूअ और ज़ईफ़ हदीसों का चलन 9/-
- क्या क़ुरआन को समझ कर पढ़ना ज़रूरी नहीं? 10/-
- तलाक़ कब और कैसे? 6/-
- सुनो अपने रब (पालनहार) की 18/-
- पारा अम्म 120/-

इदारा दअ्वतुल क़ुरआन

59-मुहम्मद अली रोड, मुंबई-400003

फ़ोन : 23465005

# बुज़ुर्गों के प्रति हमारी ज़िम्मेदारियां

■ ज़हीर ललितपुरी

समाज में ज़्यादातर बुज़ुर्ग कमज़ोर, बीमार, मुहताज, अपाहिज, बेसहारा और बेबस होते हैं । इनमें विधवाएं भी होती हैं और विधुर व यतीम भी होते हैं । इस्लाम धर्म में सारे कमज़ोर, बीमार, मोहताज, अपाहिज, बेसहारा और बेबस बूढ़े इन्सानों का ख़याल रखने का ख़ासतौर पर हुक्म दिया गया है चाहे वे अपने हों या पराये । अन्य धर्मों में भी ऐसे बूढ़े इन्सानों का ख़याल रखने की नसीहतें की जाती हैं । सामाजिक परंपराएं, मान्यताएं, संस्कार और सिद्धांत भी बूढ़े इन्सानों के समर्थन में खड़े दिखायी देते हैं । हुकूमतें और सरकारें भी बुशुर्गों के हित की बात करती हैं । लेकिन सच्चाई यही है कि मौजूदा दौर में बूढ़े इन्सानों की हालत अच्छी नहीं हैं । अतः उनके बारे में सोचना व ग़ौरोफ़िक्र करना भी ज़रूरी है ।

आज जबकि परिवार टूट रहे हैं । सदियों से क़ायम ख़ानदानी निज़ाम दरहम-बरहम हो रहा है । सामाजिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो रही है । मौजूदा पीढ़ी ख़ानदानी रस्मो-रिवाज, रिवायतें और संस्कार भूल रही है । मतलबपरस्ती, भौतिकवाद और मग़रिबी तहज़ीब के असर से रिश्तों का तानाबाना बिखर रहा है । इस कारण हमारे बुशुर्गों के हालात और ख़राब, बद से बदतर होते जा रहे हैं ।

बुज़ुर्गों की एक बड़ी आबादी तन्हाई, नाउम्मीदी और बेपरवाही का शिकार है । बीमारी, ख़स्ताहाली और ग़रीबी उनके चारों तरफ़ डेरा डाले हुए हैं । ऐसे माहौल में उनको उनके हाल पर बेसहारा और तन्हा छोड़ देना भी ठीक नहीं है । ताहम वक़्त और इन्सानियत का तक़ाज़ा है कि समाज के इस लाचार तबक़े के लिए भी सोचा जाए और उनकी ज़िन्दगी को भी ख़ुशगवार बनाने की कोशिशें की जाएं । ताहम पारिवारिक, सामाजिक और सरकारी स्तर पर ऐसी कारगर कोशिशों की ज़रूरत है जिनसे मौजूदा बुज़ुर्गों के हालात में सुधार हो और आने वाली बुज़ुर्ग पीढ़ी को भी जीने का आसरा मिल सके ।

कहते हैं कि संयुक्त परिवार व्यवस्था वचपन और बुढ़ापे में लोगों के लिए कारगर व मददगार होती है । लेकिन यह एकल परिवार का दौर है जिसमें बच्चों की तरफ़ तो ख़ूब ध्यान दिया जाता है लेकिन बूढ़ों की उपेक्षा होती है । अन्य देशों की तुलना में हमारे देश में मज़बूत और कारगर ख़ानदानी निज़ाम यानी परिवार व्यवस्था और संगठित सामाजिक व्यवस्था है । इसके बावजूद, इस तरक़्क़ी के दौर में भी, सीनियर सिटीजंस यानी बुज़ुर्गों की हालत अच्छी नहीं कही जा सकती ।

इतिहास और अनुभव गवाह हैं कि तरक़्क़ी के दौर में सबसे ज़्यादा उपेक्षा बुज़ुर्गों की होती है । मौजूदा दौर भी तरक़्क़ी का दौर है । लोग अपनी तरक़्क़ी और बच्चों के मुस्तक़बिल के लिए इस क़दर आपाधापी में उलझे हुए हैं कि अपने उन बुज़ुर्गों की तरफ़ तनिक भी ध्यान नहीं दे पा रहे हैं जिन्होंने उन्हें पैदा किया और पाल-पोसकर बड़ा किया है । बच्चों के भविष्य के लिए पारिवारिक, सामाजिक और सरकारी स्तर पर योजनाएं बनायी जा रही हैं । जवानों की मौजूदा ज़िन्दगी के लिए भी बहुत कुछ काम किये जा रहे हैं । लेकिन बूढ़े लोगों की ज़िन्दगी आसान होने के बजाय और कठिन हो रही है । इसलिए हमारे बुज़ुर्ग तन्हा और परेशान हाल रहकर लाचारी की ज़िन्दगी जीने के लिए मजबूर हैं । उनकी यह हालत तरक़्क़ीशुदा समाज के माथे पर बदनुमा धब्बा है ।

बुज़ुर्गों की देखभाल की ज़िम्मेदारी हमेशा नवजवानों और जवान लोगों के कंधों पर होती है । मौजूदा दौर में जो जवान हैं कल बूढ़े होंगे और आज के बच्चे कल जवान हो जाएंगे । जिस तरह आज जवान तबक़े के कंधों पर बुज़ुर्गों की ज़िम्मेदारी है उसी तरह आज के जवान कल बूढ़े होकर उस वक़्त जवान होने वालों पर निर्भर रहेंगे । 2011 की जनगणना के मुताबिक़ भारत में क़रीब 104 मिलियन बुज़ुर्ग इन्सान थे, जिनमें 53 मिलियन औरतें और 51 मिलियन मर्द थे ।

पिछले 7 साल में इस तादाद में बढ़ोत्तरी हुई है । यूनाइटेड नेशंस पॉपुलेशन फंड और हेल्प एज इंडिया की एक रिपोर्ट में ऐसा अनुमान लगाया गया है कि 2026 तक बुज़ुर्गों की तादाद 173 मिलियन हो सकती है जो बुज़ुर्गों की

मौजूदा आबादी की तक़रीबन डेढ़ गुना होगी । इन 173 मिलियन लोगों में बहुत सारे बूढ़े लोग वो होंगे जो आज जवान हैं ।

इस हक़ीक़त को नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता कि आज भी नवजवानों के कंधों पर बुज़ुर्गों की बड़ी आबादी का बोझ है और आने वाली नवजवान पीढ़ी के कंधों पर भी अपने बच्चों की ज़िम्मेदारियों के साथ उनके बुज़ुर्गों की बहुत बड़ी तादाद का बोझ होगा । इन हालात में मौजूदा पीढ़ी को अभी से दूरअंदेशी से काम लेना होगा ऐसे मंसूबे बनाकर उन पर अमल करना होगा कि उस वक़्त के नवजवान अपने परिवार और समाज की ज़िम्मेदारी के साथ-साथ अपने बुज़ुर्गों की भी ज़िम्मेदारी उठा सकें । आजकल के बच्चों को और नवजवानों को हमें ही वो संस्कार देने होंगे कि कल वो अपने बुज़ुर्गों की सेवा कर सकें । हमें अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि वो बड़े होकर अपने मां-बाप की सेवा करें और अपने ख़ानदान व समाज के अन्य लाचार और बेसहारा बूढ़े रिश्तदारों व इन्सानों की भी सेवा करें ।

यूं तो हमारे मां-बाप हमारी सेवाओं के सबसे बड़े अधिकारी हैं लेकिन समाज के अन्य बूढ़े लोगों का भी हम पर हक़ है । मा-बाप ने हमें पैदा किया, हमारा लालन-पालन कर हमें बड़ा किया और अपने पैरों पर खड़े होकर सम्मान-जनक ज़िन्दगी जीने के क़ाबिल बनाया । हर मज़हब में उनका सम्मान करने और उनकी सेवा करने की शिक्षा दी गयी है । आसमानी किताब क़ुरआन में अपने मां-बाप के साथ अच्छे व्यवहार की ख़ासतौर पर तालीम दी गयी है लेकिन अन्य बुज़ुर्गों की सेवा का भी हुक्म दिया गया है । क़ुरआन मजीद में एक-दो जगह नहीं बल्कि कई आयतों में मां-बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने का हुक्म दिया गया है ।

कहा गया है कि मेरे प्रति कृतज्ञ रहो और मां-बाप के प्रति भी रहो । क़ुरआन मजीद में ख़ासतौर पर बुढ़ापे की दशा में मां-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की नसीहत की गयी है । अल्लाह ने हुक्म दिया है कि अगर उनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो तुम उन्हें उफ़ तक न कहो और न उन्हें झिड़को बल्कि उनसे भली प्रकार से बात करो और दयालुता और नर्मी के साथ उनके सामने झुककर रहो और दुआ करो : ऐ रब जिस तरह इन्होंने बचपन में दया प्रेम से मेरा पालन-पोषण किया है, तू भी इन पर दया कर ।

किन्तु मां-बाप के बाद बुज़ुर्ग नातेदार भी दूसरे नातेदारों से अच्छे सुलूक की उम्मीद करते हैं । नातेदारों के साथ-साथ हमारे आसपास रहने वाले अन्य लोगों से भी अच्छा सुलूक करना चाहिए । इसलिए क़ुरआन में अपने नातेदारों के साथ-साथ समाज के अन्य लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने की तालीम दी गयी है । क़ुरआन में फ़रमाया गया है कि, "और अल्लाह ही की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को भी साझी न ठहराओ । और अच्छा व्यवहार करो मां-बाप के साथ और नातेदारों, अनाथों, मोहताजों, नातेदार पड़ोसियों के साथ और उन पड़ोसियों के साथ जो अजनबी हों और पास के व्यक्ति के साथ और साथ के मुसाफ़िरों के साथ और उन (लौंडी-ग़ुलामों) के साथ जो तुम्हारे अधिकार में हों । निस्सन्देह अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो इतराने वाला और डींगे मारने वाला हो ।"

ताहम मां-बाप के साथ-साथ उनके रिश्तेदार यानी हमारे चाचा, चाची, फुफा, फुफी, ख़ाला, ख़ालू, मौसा, मौसी, मामू, मुमानी, मामा, मामी, दादा, दादी, नाना और नानी भी हमारे मां-बाप की तरह बुज़ुर्ग हैं हमारी सेवाओं के अधिकारी हैं । हमारी मां की सखी सहेलियां और हमारे बाप के दोस्त, पड़ोसी, अक्सर हमारे साथ रहने वाले या काम करने वाले बुज़ुर्ग इन्सान भी हमारी तवज्जोह, देखभाल, मदद और हमदर्दी के पात्र हैं । बचपन से लेकर बड़े होने तक, कई लोगों से कई मामलों में हमें मदद मिली है ।

अक्सर उनकी तवज्जोह, देखभाल और हमदर्दी हमारे लिए फ़ायदेमन्द साबित हुई हैं । जैसे हमें पढ़ाने वाले उस्ताद व अध्यापक, हमें स्कूल कॉलेज पहुंचाने वाले टेक्सी ड्राईवर, रिक्सा चालक, हमारे घर में काम करने वाले नौकर, कपड़े धोने वाली औरतें, कपड़ों पर प्रेस करने वाले और जूतों पर पॉलिस करने वाले कामगार, अख़बार लाने वाले, आटा-चक्की से आटा पीसने वाले, किराने की दुकान वाले और सब्ज़ी आदि बेचने वाले, मुहल्ले के सफ़ाई कर्मचारी वग़ैरह-वग़ैरह भी हमारे मुहसिन हैं । कभी न कभी उन्होंने हमारी मदद और ख़िदमत कर हम पर एहसान किया है । यहां तक कि हमारा इलाज करने वाले डॉक्टर और हकीम, हमें प्राइमरी स्कूल से डिग्री कॉलेज तक की तालीम देने वाले हमारे बहुत सारे टीचर्स व उस्ताद और हमें दीन सिखाने वाले मौलवी साहब, मस्जिदों में अज़ान देने वाले मोअज़्ज़िन और नमाज़ में इमामत करने वाले इमाम आदि बुज़ुर्गों तक के

हम एहसान होते हैं । उन लोगों ने ज़िन्दगी में किसी न किसी मोड़ पर हमारी मदद और ख़िदमत की हैं, हमारी रहनुमाई, देखभाल और हिफ़ाज़त की हैं अगर वे आज बूढ़े और लाचार हैं तो वे हमारी हमदर्दी, मुहब्बत और मदद का हक़ रखते हैं ।

अक्सर ऐसा देखा जाता है कि हम अपने मां-बाप और बुज़ुर्गों को मरने के बाद तो याद करते हैं लेकिन जीते जी उन्हें उपेक्षित ज़िन्दगी जीने के लिए छोड़ देते हैं । मरने के बाद उनके लिए विभिन्न धार्मिक आयोजन करते हैं ताकि उन्हें मोक्ष प्राप्त हो और उनकी आत्मा को शांति प्राप्त हो । हिन्दू लोग मरने के बाद उनके लिए विशेष धार्मिक आयोजन करते हैं और उनके प्रति इस प्रकार श्रद्धा प्रकट करके अपने आपको धन्य समझते हैं । मुसलमान तीजा, चालीसवां की फ़ातिहा करवा कर, उनकी बरसी पर जश्न मनाकर और उनकी मग़फ़िरत के लिए दुआएं मांग कर सोचते हैं कि उन्होंने अपने मां-बाप व बुज़ुर्गों के प्रति जो उनका फ़र्ज़ था अदा कर दिया और उनका जो हक़ हम पर था वो चुका दिया । लेकिन क्या यह सही है ? क्या हमारे मां-बाप और बुज़ुर्गों के हम पर जो हक़ हैं, उनका इस प्रकार बदला चुका देना काफ़ी हैं ?

हमारे मां-बाप और बुज़ुर्गों ने हम पर जो बेशुमार एहसान किये हैं, हमारे लिए जो क़ुरबानियां दी हैं, हमारे लिए जो तकलीफ़ें उठायीं हैं उनका क्या यही प्रतिकार और इनाम है ? उनकी क़ुरबानियों का क्या यही अंजाम है ? हरगिज़ नहीं, हमें पैदा करते वक़्त मां के मुंह से चीख़ निकलती हैं और वो जो दर्द वो सहन करती है उसका बदला कभी नहीं चुकाया जा सकता । अपने ख़ून को दूध के रूप में हमें पिलाती है और खुद भूखी रहती है और हमें खाना खिलाती है ।

इसी प्रकार हमारे बाप हमें किन-किन मुसीबतों से पालते हैं । हमारे भविष्य के लिए रात-दिन मेहनत करते हैं । हमें इसके बारे में ठंडे दिल से सोचना चाहिए । हमें यह भी सोचना चाहिए कि यही बर्ताव जो हम अपने मां-बाप के साथ करते हैं अगर कल को हमारी औलाद हमारे साथ करेगी तो हमें कैसा लगेगा ।

यहो पर एक सवाल यह भी पैदा होता है कि किस उम्र के इन्सान को बूढ़ा मानकर उनका ख़याल रखा जाए । क़ानून के मुताबिक़ साठ साल या उससे अधिक आयु के लोगों को बूढ़ा, बुज़ुर्ग और सीनियर सिटीजन माना जाता है। इसलिए बूढ़ों के लिए जो योजनाएं बनायीं जाती हैं और उनकी भलाई के लिए जो क़दम उठाये जाते हैं उनका लक्ष्य साठ साल के लोग या उससे ज़्यादा उम्र के लोग होते हैं । सरकारी नौकरियों में रिटायरमेंट की उम्र अमूमन साठ वर्ष या वासठ वर्ष है । यानी सरकारी तौर पर कोई काम करने लायक़ नहीं माना जाता ।

एक मुहावरा बहुत मशहूर है कि साठ के बाद लोग सठिया जाते हैं । अक्सर जब कोई ठीक ढंग से काम नहीं करता है तो कहते हैं कि ''सठिया गये क्या ?''। कई बार साठ साल से ज़्यादा उम्र हो जाने के बाद भी अगर कोई सक्षम है तो व्यावहारिक दृष्टि से बूढ़ा नहीं कहा जाता । राजनैतिक और सामाजिक दृष्टि से भी जो लोग अब काम-काज करने लायक़ हैं उन्हें बूढ़ा नहीं समझा जाता है । साठ साल से अधिक उम्र के बहुत सारे लोग राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं इसलिए राजनैतिक नेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए उम्र की कोई पाबन्दी नहीं । हालांकि बुज़ुर्गों के अनुभवों को सबको फ़ायदा मिलता है ।

हिन्दू परंपरा के अनुसार पच्चीस वर्ष तक की आयु के लोग ब्रह्मचारी कहलाते हैं, इसके बाद पचास तक के लोग गृहस्थ कहलाते हैं । इक्यावन से पचहत्तर वर्ष तक का जीवन बानप्रस्थ और उसके बाद का जीवन संन्यास का जीवन कहलाता है । अतः पचास साल के बाद का जीवन बुढ़ापे का जीवन कहा जा सकता है । इस्लाम धर्म के अनुसार जो हमसे बड़ा है उसे भी बुज़ुर्ग कहा जाता है और ज़ो क़ाबिलियत, इज़्ज़त और अज़मत में, नेकी में, सज्जनता में, ज़िम्मेदारी, दुनियादारी व दीन की समझ-बूझ रखने में, इबादत करने, नेक अमल करने में और अच्छाइयों में हम से बढ़कर है वो भी बुज़ुर्ग है ।

इस्लाम धर्म में बुढ़ापे या बुज़ुर्गी की कोई उम्र तय नहीं है । अगर शख़्स जिस्मानी और ज़ेहनी तौर से ठीक है तो उसे किसी सहारे की ज़रूरत नहीं है । अक्सर मस्जिदों में नमाज़ पढ़ाने वाले इमाम, अज़ान देने वाले मुअज़्ज़िन, इन्तिज़ाम करने वाले मुन्तज़िम बूढ़े होते हैं और अपनी ज़िम्मेदारी बख़ूबी निभाते हैं । मुस्लिम समाज के धर्म-गुरु, आलिम, मुफ़्ती, क़ारी, मुस्लिम रहनुमा, मुस्लिम संगठनों के ज़िम्मेदार लंबी उम्र तक समाज की बहुत अच्छी तरह से रहनुमाई करते हैं । इसी तरह अन्य धर्मों के धर्म-गुरु और रहनुमा, साधू, संत, ईसाई पादरी, बौद्ध भिक्षु, जैन मुनि, सिख ग्रंथी आदि

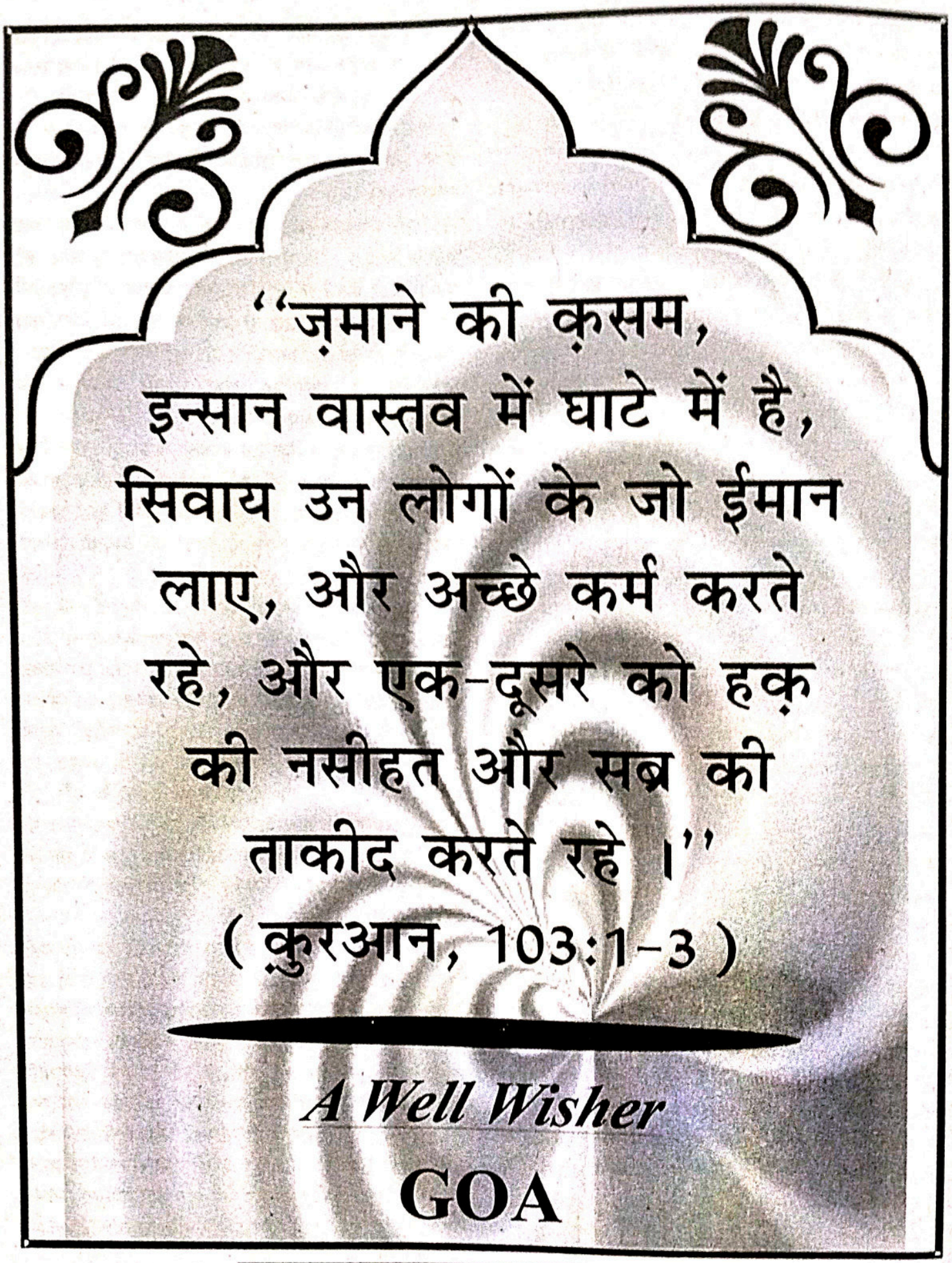
"ज़माने की क़सम,
इन्सान वास्तव में घाटे में है,
सिवाय उन लोगों के जो ईमान
लाए, और अच्छे कर्म करते
रहे, और एक-दूसरे को हक़
की नसीहत और सब्र की
ताकीद करते रहे ।"
( क़ुरआन, 103:1-3 )
A Well Wisher
GOA

अधिकतर बुज़ुर्ग होते हैं और उनके ज्ञान और अनुभव का तथा उनकी सेवाओं का फ़ायदा सिर्फ़ उनके समाज और संप्रदाय को नहीं मिलता बल्कि अन्य लोगों को भी मिलता है ।

दरअस्ल समाज के बुज़ुर्ग धर्मगुरुओं, साधु, संतों, फ़क़ीरों, पीरों, वलियों और रहनुमाओं की सेवा समाज का बड़ा तबक़ा करता है । जो लोग अपने सगे मां-बाप और ख़ानदानी बुज़ुर्गों की सेवा नहीं करते, वे तन-मन-धन से बूढ़े धर्मगुरुओं, साधु-संतों, फ़क़ीरों, पीरों, वलियों और रहनुमाओं की नहीं बल्कि नवजवान और किशोर धर्मगुरुओं, साधु-संतों, फ़क़ीरों, पीरों, वलियों और रहनुमाओं की सेवा में रात-दिन लगे रहते हैं । इस लेख का विषय बढ़ती उम्र के वो बूढ़े इन्सान, सीनियर सिटीजन, बुज़ुर्ग और अधेड़ आयु के लोग, विधवाएं, विधुर और यतीम हैं जो लाचार हैं, जो दूसरों पर निर्भर रहते हैं और जिन्हें मदद की ज़रूरत पड़ती है । बढ़ती उम्र के समाज के कमज़ोर, लाचार, बीमार और मोहताज उन बूढ़े इन्सानों की तरफ़ भी इस लेख में ध्यान खींचने की कोशिश की जा रही है जिनको सिर्फ़ आर्थिक मदद की ज़रूरत नहीं होती, बल्कि हमदर्दी, देखभाल, मुहब्बत, इज़्ज़त और हिफ़ाज़त की भी ज़रूरत होती है । उनके अकेलेपन को दूर करने और दिल को बहलाने की भी ज़रूरत होती है ।

बहुत सारे बूढ़े और बुज़ुर्ग ऐसे हैं जिनके पास धन दौलत की कमी नहीं हैं किन्तु उन्हें औलाद का सहारा नहीं है । उनके बच्चे या तो हैं नहीं या फिर नौकरी व्यवसाय के कारण उनके साथ नहीं रह पाते । उन्हें आर्थिक मदद की ज़रूरत नहीं है । ऐसे लोगों को समाज के लोगों और अन्य रिश्तेदारों की मदद की आर्थिक मदद की नहीं बल्कि नैतिक और भावनात्मक की ज़रूरत होती है । सरकारी सेवाओं से रिटायर्ड लोगों को तो जब तक पेंशन, इलाज अन्य सुविधाएं तब तक मिलती हैं जब तक वो ज़िन्दा रहते हैं । सरकारी स्तर पर अब ऐसी पेंशन योजनाएं चलाई जा रही है जिनसे हर इन्सान बुढ़ापे में पेंशन की सुविधा और अन्य सुविधाएं पा सकता है ।

दरहक़ीक़त आज के बुज़ुर्गों की सिर्फ़ रोज़ाना दो रोटी और साल में दो जोड़े कपड़े ही की ज़रूरत नहीं है । मौजूदा दौर में बूढ़े इन्सानों की अस्ल बुनियादी ज़रूरत है हमदर्दी, देखभाल, मुहब्बत, इज़्ज़त और हिफ़ाज़त की जो उन्हें हर इन्सान, समाज और सारी दुनिया से मिलनी चाहिए, हालांकि वह परिवार वालों, रिश्तेदारों और समाज के लोगों से ही मिल सकती है ।

वस्तुतः आज अपने बुज़ुर्गों, बूढ़े इन्सानों और बढ़ती उम्र के हर समाज और हर तबक़े के लोगों की ख़िदमत और मदद करना हमारा फ़र्ज़ है । उन्हें सम्मानसहित, सुविधाजनक और सुरक्षित जीवन जीने के लिए अच्छा माहौल चाहिए । ऐसा माहौल बनाना हमारी ज़िम्मेदारी है । हमें ख़ुद और अपने साथ-साथ मौजूदा नवजवान पीढ़ी और आने वाली नस्लों को विरासत में ऐसी तालीम और संस्कार सीखने व सिखाने की ज़रूरत है जिन्हें वो अपने बुज़ुर्गों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी बख़ूबी निभा सकें ।

---

(पृष्ठ 37 का शेष)

फलस्वरूप, पढ़ने-लिखने वाले छात्र कहीं के नहीं रहे । सबसे ज़्यादा हक़मारी उन्हीं के साथ हुई । और इसे देखने, सुनने और समझने वाला कोई नहीं है । वह शख़्स भी नहीं जो विश्वविद्यालय का मुखिया होता है । कुलपति की भूमिका अब पहले जैसी गरिमा और नैतिकता के आवरण में लिपटी नहीं रही ।

विश्वविद्यालयों का माहौल ख़राब होने में सभी दलों के राजनेताओं और प्रभावशाली लोगों का योगदान सबसे अधिक है । अराजकता फैलाने वाले छात्रों के ख़िलाफ़ पुलिस एफ़॰ आई॰आर॰ तो दर्ज कर लेती है, लेकिन कार्रवाई के नाम पर राजनीति शुरू हो जाती है । पुलिस महकमे की मानें तो जब भी ठोस कार्रवाई शुरू होती है तो ऊपर से दबाव के कारण आरोपी छात्रों को छोड़ना पड़ता है ।

विश्वविद्यालयों में शिक्षक और छात्रों का संवाद ख़त्म हो चुका है । पठन-पाठन का माहौल ख़त्म कर दिया गया । सेमिनार और गोष्ठियों की परंपरा ख़त्म कर दी गयी । मगर इस बेपटरी हो चुकी व्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन को गंभीर प्रयास करने होंगे । पठन-पाठन के उचित माहौल के लिए ज़रूरी है कि परिसरों में अराजकता का माहौल ख़त्म हो ।

परिसरों में अराजकता का माहौल ख़त्म करने के लिए पुलिस प्रशासन के साथ-साथ विश्व- विद्यालय प्रशासन को भी चाक चौबंद रहना ज़रूरी है । इसके लिए ज़रूरी है कि छात्रों की समस्याओं को सुना जाए । न सुनने पर छोटे-से-छोटा विवाद भी तूल पकड़ लेता है । ऐसे में विश्व- विद्यालय प्रशासन छात्रों के साथ बैठक करे और सदैव उनके संपर्क में रहे ताकि उनकी समस्याओं को गंभीरतापूर्वक सुना जा सके ।

# अनाथ लड़कों की पुकार

# VOICE OF ORPHAN BOYS

## यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



## एक परिचय

• दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला • 102 वर्षों की सेवाएं • बहुत से विभाग • शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक • हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक • हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट • पत्राचार शिक्षा 2019-2020 के सत्र के लिए आइ०ए०, बी०ए०, एम०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLiS) में प्रवेश जारी • कंप्यूटर की भी शिक्षा • किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 20,000/- रुपये प्रति वर्ष • कुल वार्षिक ख़र्च 25 लाख से अधिक • आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे • 70 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

• जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए • ज़कात • सदक़े • अतिया • पैदावार की ज़कात • क़ुरबानी की खाल • एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च • अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

• याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

**नोट : इनायत टेक्निकल इंस्टीट्यूट (Technical Institute) की इमारत के निर्माण का काम पूरा हो चुका है ।**

## यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

**नोट :** यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

### Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

**अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187**

**BANK SWIFT CODE NO. UBININBBJAM,**

**UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)**

**में अपनी रक़म भेज सकते हैं**

**चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE**

**चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता**

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

### Local Donors मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKING A/C NO.: 300402010010581, Mobile : 09955655960, 09801213022

Bank IFS Code No. : UBIN 0530042

BANK, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

**Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT** जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

**नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।**

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन — एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

# मानवाधिकार आयोग क्या है ?

हम 60 साल से भी ज़्यादा समय से मानव अधिकार दिवस मना रहे हैं । यह दिन प्रतिवर्ष 10 दिसम्बर को मनाते हैं । इस दिवस पर हम क्या ऐसा करने वाले हैं जो हमारे समाज और राष्ट्र को गौरवान्वित करेगा । लेकिन इन सबके पहले यह जानना अतिआवश्यक है कि आख़िर मानव अधिकार आयोग क्या है और क्यों इस दिवस को 10 दिसम्बर के ही दिन मनाया जाता है ।

दरअस्ल 10 दिसम्बर 1948 को मानव अधिकार आयोग का गठन किया गया था । यह एक ऐसी संस्था है जो विश्व में मानव के हित में किये जा रहे अधिकारों की रक्षा करती है ।

इसी के चलते मानव अधिकार आयोग ने मानव के अधिकार से जुड़े हुए 30 अनुच्छेदों का लेखा-जोखा तैयार किया हुआ है । जिसके अंतर्गत मानव के आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक विकास में अवरोध उत्पन्न करने वाले मामलों पर या तो संज्ञान लिया जाता है या शिकायत के आधार पर समस्या को सुलझाया जाता है ।

भारत में मानव अधिकार का मुख्य कार्यालय दिल्ली में है, इसके अतिरिक्त हर प्रदेश व ज़िले में भी मानव अधिकार के कार्यालय स्थापित किये गये हैं ।

यह कार्यालय किसी सरकारी व ग़ैर-सरकारी अधिकारी के द्वारा किये गये ऐसे कार्यों की समीक्षा करता है जिसके ख़िलाफ़ सरकार कोई क़दम न उठा रही हो और वह मामला मानव अधिकार के हनन के दायरे में आता हो ।

# सिराव : डरपोक लेकिन ख़तरनाक

मध्य और पूर्व एशिया में पाया जाने वाला प्राणी सिराव बकरे और हिरण से मिलता-जुलता जीव है । आम बनावट में वह घुएड़ (Goral) से मिलता-जुलता जानवर है । इसकी थूथन पर बाल नहीं होते और पूंछ छोटी होती है । इसका माथा सींगों के पीछे के भाग में एकदम मिल जाता है ।

इसकी 6 प्रजातियां हैं–जापानी सिराव, ताइवानी सिराव, सुमात्रा सिराव, चीनी सिराव, लाल सिराव और हिमालयन सिराव ।



### 12 हज़ार फ़ुट की ऊंचाई पर बसेरा

भारत में पाया जाने वाला हिमालयन सिराव लगभग 6-12 हज़ार फ़ुट की ऊंचाई पर मिलता है । घुएड़ से सिराव बहुत बड़ा और भारी होता है । सिराव के सींगों की लंबाई 9-10 इंच तक होती है । दिखने में यह बहुत सुंदर नहीं होता । इसके बाल पतले और कड़े होते हैं तथा कान बड़े-बड़े होते हैं । मादा के सींग नर की अपेक्षा छोटे होते हैं । स्वभाव से सिराव बड़ी आड़ी-तिरछी चाल वाला होता है, परंतु ऊंची-नीची चढ़ाई और उतार के क्षेत्र में वह तेज़ी से दौड़ सकता है ।

### डरपोक, लेकिन ख़तरनाक

यह एकाकी जानवर है । किसी पहाड़ी पर 3-4 जानवर हैं तो किसी पर 4-5 ही रहते हैं । सबसे अधिक आनंद इसे तेज़ उतार की पहाड़ियों में आता है, जहां ऊंची चट्टानें होती हैं । स्वभाव से यह डरपोक और सीधा जानवर है, परंतु घायल होने पर बहुत आक्रामक हो जाता है और बुरी तरह हमला करता है । यदि हमले में एक सिराव मारा जाता है तो उसका साथी बहुत भयंकर हमला करता है । आक्रमण होने पर यह घोड़े जैसा चीखता है और जंगली कुत्तों का डटकर मुक़ाबला करता है।

# पंख होने पर भी पैंगुइन उड़ क्यों नहीं पाते ?

शुत्रमुर्ग़ और इमू की तरह पैंगुइन भी पंख होने के बावजूद उड़ते नहीं हैं । कहते हैं आज से 650 लाख साल पहले पैंगुइन के पूर्वज उड़ पाते थे और धीरे-धीरे उनकी यह क्षमता ख़त्म हो गयी । पैंगुइन के पूर्वज समुद्र के ऊपर उड़ते थे और भोजन की तलाश में समुद्र में ग़ोता लगाते थे ।

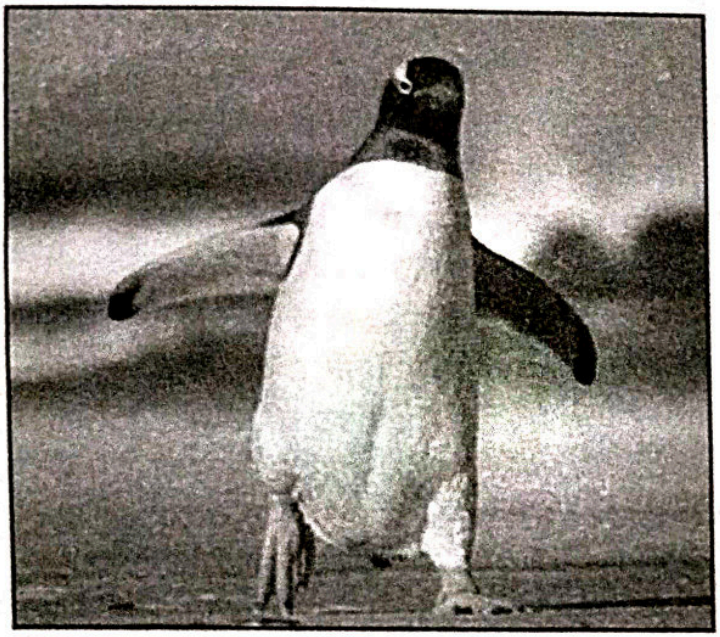

लाखों सालों पहले पैंगुइन की हड्डियां पक्षियों की तरह ही हल्की होती थीं और वे उड़ पाते थे, पर समय के साथ उनकी हड्डियां भारी हो गयीं और वज़न बढ़ जाने से उनका ख़ुद को हवा में उठाना नामुमकिन हो गया ।

हालांकि इन्हीं हड्डियों के कारण पैंगुइन अब पानी में ग़ोता बेहतर तरीक़े से लगा पाते हैं ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223

संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

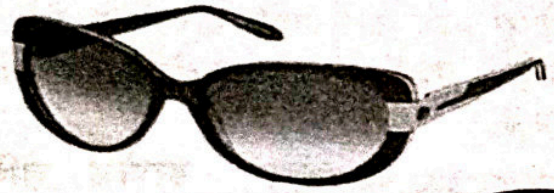



Asian Optics

a multibrand showroom

SNP Area, Sakchi ,Jsr.
2221184

Main Road, Golmuri ,Jsr.
2341175



"पूरब और पश्चिम सब अल्लाह के हैं । जिस ओर भी तुम रुख़ करोगे, उसी ओर अल्लाह का रुख़ है । अल्लाह सर्वव्यापी और सब कुछ जानने वाला है ।"

( क़ुरआन, 2:115 )

# IQRA BUILDERS

## IQRA COLONY, JAMSHEDPUR (JHARKHAND)

Posted on 20-21 May 2019
June 2019
Posted Delhi RMS Delhi-110006
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.05.2019
Total pages 52 with Cover

# कान्ति

NEW DELHI-110025

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2018-2020
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2018-2020

بسم الله الرحمن الرحيم

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जो कुछ धन-सामग्री हमने तुमको प्रदान की है, उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि वह दिन आए, जिसमें न ख़रीद-बिक्री होगी, न दोस्ती काम आएगी और न सिफ़ारिश चलेगी ।"

(क़ुरआन, 2:254)

ICON INTERNATIONAL
TOPSIA, KOLKATA